एक कहानी कई रंग–**5** ः

तीन सन्तरे जैसी कहानियाँ

संकलन और अनुवाद

सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Teen Santarey Jaisi Kahaniyan (Three Oranges Like Stories)
Cover Page picture : Three Oranges
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

एक कहानी कई रंग 5

तीन सन्तरे जैसी कहानियॉ 7

1 तीन सन्तरे 9

2 तीन सन्तरों से प्यार–**1** 29

3 तीन सन्तरों से प्यार–**2** 43

4 प्यार के तीन सन्तरे 61

5 तीन सुनहरे सन्तरे 71

6 जिप्सी रानी 89

7 तीन अनारों से प्यार 95

8 अनार शाहज़ादी 109

9 एक छोटा चरवाहा 116

10 जादुई खीरे 127

11 कबूतर पालतू कैसे बना 140

एक कहानी कई रंग

लोक कथाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए कुछ समय पहले हमने संसार के सब देशों से कुछ लोक कथाऐं संकलित की थीं। उनको हमने "देश विदेश की लोक कथाऐं" सीरीज़ में प्रकाशित किया था। वे कथाऐं जब काफी संख्या में इकट्ठी हो गयीं, करीब करीब **2500**, तो उनमें एक तस्वीर देखी गयी। वह थी कि उनमें से कुछ कहानियाँ एक सी थीं और आपस में बहुत मिलती जुलती थीं।

तो लोक कथाओं की एक और सीरीज़ शुरू की गयी और वह है "एक कहानी कई रंग"। कितना अच्छा लगता है जब एक ही कहानी के हमें कई रूप पढ़ने को मिलते हैं। इन पुस्तकों में कुछ इसी तरह की कहानियाँ दी गयी हैं। सबसे पहले इसमें सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानी दी गयी है और उसके बाद ही उसके जैसी दूसरी कहानियाँ दी गयी हैं जो दूसरी जगहों पर पायी जाती हैं। हम यह दावा तो नहीं करते कि हम वैसी सारी कहानियाँ यहाँ दे रहे हैं पर हमारी कोशिश यही रहेगी कि हम वैसी ज़्यादा से ज़्यादा कहानियाँ एक जगह इकट्ठा कर दें।

इस सीरीज़ में बहुत सारी पुस्तकें हैं जो यह बताती हैं कि केवल **2–4** कहानियाँ ही ऐसी नहीं हैं जो सारे संसार में कई जगह पायी जाती हों बल्कि बहुत सारी कहानियाँ ऐसी हैं जो अपने अपने तरीके से भिन्न भिन्न जगहों पर कही सुनी जाती हैं। इनमें सिन्डरैला, टाम थम्ब, बिल्ला और चुहिया, सोती हुई सुन्दरी, छह हंस[1] आदि मशहूर कहानियाँ दी गयी हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में यह जानने की प्रेरणा भी देंगी कि एक ही तरह की कहानी किस तरह से दूसरे देशों में पहुँची। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

---

[1] Cinderella, Tom Thumb, Cat and Rat, Sleeping Beauty, Six Swans etc stories

तीन सन्तरे जैसी कहानियाँ

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं।

बच्चों जैसे तुम लोग कहानियाँ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहाँ के बच्चे कहानियाँ सुनते हैं। क्योंकि कहानियाँ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियाँ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

पर कुछ कहानियाँ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहाँ कुछ ऐसी ही कहानियाँ दी जा रही हैं। ये सब कहानियाँ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियों एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियाँ हैं। इन पुस्तकों की पहली कहानी वह कहानी है जो बहुत लोकप्रिय कहानी है उसके बाद ही फिर उसकी जैसी और कहानियाँ दी गयी हैं। ऐसी कहानियाँ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे।

इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियाँ"। अब तक इस सीरीज़ में तीन पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। इन सब पुस्तकों के नाम इस पुस्तक के पीछे दिये हुए हैं।

"एक कहानी कई रंग–1" में "बिल्ला और चुहिया" जैसी कहानियाँ हैं जिनमें कोई एक किसी से कोई काम कराना चाहता है पर वह उस काम को तब तक नहीं करता जब तक उसकी अपनी शर्त पूरी नहीं हो जाती सो उसको उसकी शर्त पूरी करने के लिये उसे कहीं और जाना पड़ता है। और यह कड़ी तब तक चलती रहती है जब तक उसका अपना काम नहीं हो जाता।[2] इसकी तीसरी पुस्तक में "टौम थम्ब जैसी कहानियाँ" दी गयीं हैं। इसमें बहुत छोटे बच्चे की करामातों की कथाऐं हैं।[3]

उसी कड़ी की अब यह पाँचवीं पुस्तक प्रकाशित की जा रही है जिसमें कुछ ऐसी लोक कथाओं का संग्रह है जो "तीन सन्तरे" लोक कथा से मिलती जुलती हैं। इस पाँचवीं पुस्तक में फलों या सब्जियों में से लड़कियाँ निकलती हैं। ये निकलते ही पानी माँगती हैं पर पानी न मिलने पर या तो मर जाती हैं या फिर गायब हो जाती है। आखीर वाले फल या सब्जी में से निकली लड़की ज़िन्दा रहती है और हीरो से शादी करती है।

इसके अलावा इसकी एक विशेषता और है कि अधिकतर कहानियों में फल या सब्जी में से निकलने वाली लड़की की जगह कोई और लड़की ले लेती है पर बाद में असली लड़की मिल जाती है और नकली लड़की को मार दिया जाता है।

हालाँकि विकीपीडिया में ऐसी कहानियाँ पाये जाने वाले 26 देशों के नाम लिखे हुए हैं जहाँ यह कहानी विभिन्न रूपों में कही सुनी जाती है पर फिर भी ज़्यादातर ये कहानियाँ यूरोप के देशों में कही सुनी जाती हैं पर आश्चर्यजनक रूप से इनमें एक लोक कथा अफ्रीका के ज़िम्बाब्वे देश की और एक लोक कथा दक्षिणी अमेरिका के ब्राज़ील देश की भी है।

हमें विश्वास है कि ऐसी कहानियों का यह संग्रह भी तुम लोगों को पिछले तीन संग्रहों की तरह से बहुत पसन्द आयेगा।

---

[2] "One Story Many Colors-1" – like "Cat and Rat"

[3] "One Story Many Colors-3" – like "Tom Thumb"

1 तीन सन्तरे[4]

तीन सन्तरों की कहानी मूल रूप से यूरोप महाद्वीप के इटली देश की कहानी है जिसे पहली बार जियामबतिस्ता बासिले ने अपनी "इल पैन्टामिरोन" पुस्तक में **1634** में लिखा था। भाषा के कारण यह कहानी सबसे पहले **1847** में दुनियाँ के सामने आयी।

विकीपीडिया में **27** देशों के नाम लिखे हुए हैं जहाँ यह कहानी विभिन्न रूपों में कही सुनी जाती है। हम यहाँ उनमें से कुछ ही देशों में कहे सुने जाने वाले रूप दे रहे हैं। इसमें छह रूप तो यहाँ केवल इटली में ही कहे सुने जाने वाले दिये गये हैं।

किसी विद्वान आदमी ने यह ठीक ही कहा है कि "जो कुछ तुम जानते हो वह सारा मत कहो और न वह सारा कहो जो तुम कर सकते हो।" क्योंकि दोनों ही बातें तुम्हें खतरे में या किसी अनदेखी बर्बादी में डाल सकती हैं। जैसा कि आप लोग अभी सुनेंगे कि जिसने एक गरीब लड़की को उसकी ताकत में जितना नुकसान पहुँचाना था पहुँचाया पर फिर वह इतने बुरे तरीके से अदालत में आयी कि उसको अपने जुर्म की सजा अपने आप ही बतानी पड़ी और उसको वही सजा देनी पड़ी जिसकी वह हकदार थी।

लौंग टावर के राजा के एक बेटा था जो उसकी आँख का तारा था। उसी पर उसकी सब आशाऐं टिकी हुई थीं। वह उस दिन का बेचैनी से इन्तजार कर रहा था जब वह उसकी शादी करेगा। पर

---

[4] The Three Citrons. Day 5, Tale No 9. From Il Pentamerone by Giambattista Basile. 1634. Last tale.

राजकुमार शादी के बिल्कुल खिलाफ था और इतना जिद्दी था कि जब भी उसकी पत्नी की बात की जाती तो वह अपना सिर ना में हिला देता और वहाँ से सैंकड़ों मील दूर चला जाता।

जब राजा ने अपने बेटे को ऐसा जिद्दी और शादी के खिलाफ देखा तो उसको लगा कि उसका वंश तो आगे चलने का ही नहीं। वह बहुत उदास हो गया। वह बहुत गिरा गिरा सा महसूस करने लगा और उसका उत्साह जाता रहा। इतना ज़्यादा जितना कि किसी सौदागर को उसके खरीदार के दिवालिया होने पर भी नहीं होता या फिर वह किसान जिसका गधा ही मर गया हो।

न तो राजा के आँसू ही राजकुमार को पिघला सके और ना ही दरबारियों की कोई प्रार्थना ही उसको मना सकी। न विद्वानों का समूह ही उसके दिमाग को बदल सका।

उन सबने राजकुमार को उसके पिता की इच्छा लोगों की माँगें और उसका अपना मतलब बताया कि वह उस शाही खानदान का आखिरी आदमी था और वंश को आगे चलाने के लिये उसका शादी करना जरूरी था।

पर क्योंकि कैरैला[5] और एक जिद्दी खच्चर जिसकी चार अंगुल मोटी खाल थी की जिद के सामने उसने अपना पैर जमा दिया। किसी भी बेरहमी के लिये उसके कान बन्द कर दिये।

---

[5] Carella – name of the Prince

पर अक्सर ऐसा होता है कि जो सदियों में भी नहीं होता वह एक घंटे में हो जाता है। इस समय यह कोई नहीं कह सकता है कि यहॉ रुक जाओ या वहॉ जाओ।

तो एक दिन ऐसा हुआ जब सब खाना खा रहे थे तो राजकुमार नयी बनी हुई चीज़ का एक टुकड़ा काट रहा था। साथ में वह मेज पर बैठे लोगों की बातचीत भी सुनता जा रहा था कि चीज़ काटते समय उसकी ॲगली कट गयी। उसकी ॲगली से दो बूॅद खून उस चीज़ पर गिर पड़ा।

इसने वहॉ एक इतना सुन्दर रंग बना दिया कि या तो वह प्यार की सजा थी या फिर भगवान की इच्छा थी पिता को धीरज देने की कि राजकुमार को एक पागलपन सवार हो गया कि वह शादी करेगा तो किसी ऐसी सफेद और लाल रंग की लड़की से करेगा जैसा कि खून पड़ी चीज़ का था।

यह बात जब उसने अपने पिता से कही — "सर जब तक मुझे कोई ऐसी लड़की नहीं मिल जायेगी जो इस चीज़ के रंग जैसी लाल और सफेद हो मैं शादी नहीं करूॅगा।

अब आप सोच लीजिये। अगर आप मुझे ज़िन्दा और ठीक देखना चाहते हैं तो आप मुझे वह सब दीजिये जिसकी मुझे जरूरत हो और मुझे दुनियॉ में जाने की इजाज़त दें ताकि मैं ऐसी लड़की को ढूॅढ सकूॅ वरना मैं तिल तिल कर के मर जाऊॅगा।"

राजा ने जब उसका यह पागलपन भरा इरादा सुना तो उसको लगा कि उसका घर तो गिर रहा है। उसके चेहरे पर रंग आने जाने लगे पर जल्दी ही वह सँभल गया।

जैसे ही वह बोलने की हालत में हुआ उसने कहा — "मेरे प्यारे बेटे। मेरी ज़िन्दगी की जान। मेरा दिल मेरा जिगर। मेरे बुढ़ापे की लाठी। तुम्हारे दिमाग के यह किस पागलपन ने तुमको यह फैसला करने को कहा है।

क्या तुम्हारी इन्द्रियों ने काम करना बन्द कर दिया है या तुम्हारी अक्ल चरने गयी है। या तो तुम्हें सब चाहिये या फिर कुछ भी नहीं चाहिये। पहले तो तुम इसलिये शादी ही नहीं करना चाहते थे कि मुझे कहीं कोई वारिस न मिल जाये और अब तुम मुझे दुनियाँ से ही भगाने के लिये बेचैन हो।

तुम कहाँ जाओगे। कहाँ घूमोगे। अपनी ज़िन्दगी बर्बाद करोगे। और अपना मकान अपना चूल्हा अपना घर छोड़ोगे। तुम नहीं जानते कि जो लोग इधर उधर घूमते फिरते हैं उनके ऊपर क्या क्या मुसीबतें आती हैं।

बेटा अपने इस पागलपन को छोड़ दो। समझ से काम लो और मेरी ज़िन्दगी को खराब करने की कोशिश मत करो। यह मकान नीचे गिर जायेगा। मेरी गृहस्थी बिखर जायेगी।"

पर राजा के ये और दूसरे शब्द भी राजकुमार के इस कान में गये और दूसरे कान से निकल गये और समुद्र में जा गिरे।

बेचारे राजा ने यह देख कर कि उसके बेटे को किसी भी तरह नहीं समझाया जा पा रहा वह तो ऐसा हो गया था जैसे कौआ घंटाघर पर। सो उसने राजकुमार को मुट्ठी भर डौलर दिये दो तीन नौकर दिये और विदा कहा।

उसको लगा जैसे उसके शरीर से उसकी जान निकल गयी हो। बहुत ज़ोर ज़ोर से रोते हुए वह छज्जे की तरफ चला और वहाँ से अपने बेटे को तब तक जाते देखता रहा जब तक वह उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गया।

राजकुमार अपने दुखी पिता को निराश छोड़ कर मैदानों और खेतों जंगलों पहाड़ों घाटियों और कई देशों से हो कर जल्दी जल्दी चल दिया। वह अपनी आँखें हमेशा खुली रखता कि कहीं उसको अपनी चाहने वाली चीज़ मिल जाये।

कई महीनों बाद वह फ्रांस के समुद्री किनारे पर आया जहाँ उसने अपने नौकरों को दुखते हुए पैरों के साथ एक अस्पताल में छोड़ा और वह जिनोआ[6] की नाव में अकेले ही चढ़ कर जिब्राल्टर की खाड़ी[7] की तरफ चल दिया।

[6] Genoa – a renowned city of Italy

[7] Strait of Gibralter – located between the Southern coast of Spain and the Northernmost point of Morocco of Africa

वहाँ पहुँच कर उसने एक बड़ा जहाज़ लिया और इन्डीज़[8] की तरफ चल दिया। वह हर राज्य में हर प्रान्त में हर शहर में हर गली में उसे ढूँढता जा रहा था जिसकी मूरत उसके दिल में बसी हुई थी।

घूमते घूमते वह ओग्रेसेज़[9] के टापू में आ पहुँचा। उसने वहाँ लंगर डाल दिया और उतर गया। वहाँ उसको एक बुढ़िया मिली जो अपने बुढ़ापे की वजह से बहुत ही मुरझा गयी थी।

उसने उससे अपनी बात कही कि वह उस देश में क्यों आया था। जब बुढ़िया ने उसका पागलपन सुना कि वह किन किन खतरों से खेलता हुआ अपनी इच्छा को पूरा करने के लिये वहाँ तक आया है तो वह तो आश्चर्य से खड़ी की खड़ी देखती ही रह गयी।

वह बोली — "जल्दी करो मेरे बेटे जल्दी करो। क्योंकि अगर मेरी तीन बेटियाँ तुमको देख लेंगी तो मैं तुम्हारी जान बचाने के लिये कुछ नहीं कर सकती।

आधा ज़िन्दा आधा भुना हुआ एक तलने वाली कड़ाही ही तुम्हारी अर्थी होगी और उनका पेट तुम्हारी कब्र। पर तुम यहाँ से किसी खरगोश की तरह से तेज़ी से भाग जाओ। अब तुम जो कुछ ढूँढ रहे हो तुम उससे ज़्यादा दूर नहीं हो।"

[8] Towards Malayasia, Singapore, Indonesia Island
[9] Ogress is the feminine of Ogre

जब राजकुमार ने यह सुना तो वह तो बहुत डर गया। डर के मारे वह वहाँ से अपनी पूरी गति से भाग लिया और ऐसा भागा कि कि किसी दूसरे शहर में ही पहुँच कर दम लिया।

वहाँ पहुँच कर वह एक और बुढ़िया से मिला जो पिछली बुढ़िया से भी ज़्यादा बदसूरत थी। उसने उस बुढ़िया को भी अपनी कहानी सुनायी तो उसने राजकुमार से कहा — "अगर तुम मेरी बच्चियों का नाश्ता नहीं बनना चाहते तो तुम यहाँ से तुरन्त भाग जाओ। तुम यहाँ से सीधे चले जाओ तो तुम जो ढूँढ रहे हो वह तुम्हें वहाँ मिल जायेगा।"

यह सुन कर राजकुमार वहाँ से भी उस कुत्ते की तरह से भाग लिया जिसकी पूँछ में कोई केटली बँधी हुई हो। भागते भागते वह एक तीसरी बुढ़िया से मिला जो एक पहिये के ऊपर बैठी हुई थी।

उसके हाथ में छोटी छोटी पाई और कुछ मिठाइयों से भरी टोकरी थी जिन्हें वह कुछ गधों को खिला रही थी जो बाद में नदी के किनारे पर हंसों को ठोकर मार रहे थे।

जब राजकुमार बुढ़िया के पास आया तो उसने बुढ़िया को सैंकड़ों बार सलाम किया और उसे अपने घूमने की पूरी कहानी बतायी। इस बुढ़िया ने उससे दया का बर्ताव किया और अपने मीठे शब्दों से उसको तसल्ली दी। बाद में उसे इतना बढ़िया नाश्ता कराया कि जिसके बाद वह उँगलियाँ चाटता रह गया।

खाने के बाद उसने उसको तीन सन्तरे दिये जो ऐसा लगता था कि अभी अभी पेड़ से तोड़े गये हों। उसने राजकुमार को एक बहुत सुन्दर चाकू भी दिया और कहा — "अब तुम्हारी मेहनत खत्म हुई अब तुम इटली वापस लौट जाओ। तुम जो ढूँढ रहे थे वह अब तुम्हारे पास है।

जब तुम अपने राज्य के पास पहुँच जाओ तो जो भी पहला फव्वारा तुमको मिले वहाँ रुक जाना और एक सन्तरा काटना। उसमें से एक परी निकलेगी और कहेगी "मुझे पानी दो।" ध्यान रखना कि पानी तैयार रहे वरना वह पारे की तरह से गायब हो जायेगी।

पर अगर तुम दूसरी परी के मामले में आँखें खुली रख कर जल्दी नहीं करोगे और ध्यान नहीं दोगे तो देखना कि तीसरी परी तुमसे बच कर न भाग जाये। उनको तुरन्त ही पानी देना पड़ेगा। तुमको तुम्हारी मन पसन्द पत्नी मिल जायेगी।

बुढ़िया की ये बातें सुन कर तो वह बहुत ही खुश हो गया।

उसने बुढ़िया के बालों वाला हाथ सैंकड़ों बार चूमा जो बिल्कुल हैजहौग की पीठ जैसा था।

फिर उसने उससे विदा ली और अपने देश की तरफ चल दिया। वह समुद्र के किनारे आया और पिलर्स औफ हरकुलिस[10] की तरफ रवाना हो गया। वह वहाँ आया।

[10] Pillars of Hercules – means Strait of Gibraltar, which used to be called the Pillars of Hercules during Plato's time.

हजारों तूफान और खतरे उठा कर वह बन्दरगाह तक आ गया जो उसके अपने राज्य से अभी एक दिन दूर था कि उसने एक बहुत सुन्दर कुंज देखा जहाँ ऊँचे ऊँचे पेड़ों ने घास के लिये छाया का महल बना रखा था ताकि सूरज उन्हें देख न सके।

वह एक फव्वारे पर रुका जो अपने क्रिस्टल की जीभ से लोगों को उनके होंठ ताजा करने के लिये न्यौता दे रहा था। वहाँ वह पौधों और फूलों के बने कालीन पर बैठ गया।

तब उसने चाकू उसके म्यान में से निकाला और पहला सन्तरा काटना शुरू किया ही था कि वहाँ बिजली की चमक की तरह तुरन्त ही एक लड़की आ खड़ी हो गयी। वह दूध जैसी सफेद थी और स्ट्रॉबैरी जैसी लाल थी।

प्रगट होते ही उसने कहा "मुझे पानी दो।"

राजकुमार तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया। वह तो उस लड़की की सुन्दरता में ही कैद रह गया। इससे वह उसको तुरन्त ही पानी नहीं दे सका। इस पर वह लड़की एक पल में ही गायब हो गयी।

यह राजकुमार के सिर पर एक थप्पड़ था या नहीं इस बात का किसी और को फैसला करने दो कि जिसको कोई इतने दिनों से चाह रहा हो वह उसके हाथ में आ जाये और पल में ही उसके हाथ से निकल जाये तो उसे कैसा महसूस होता है।

उसके बाद राजकुमार ने दूसरा सन्तरा काटा तो जो अभी हुआ था वही सब उसके साथ दोबारा भी हुआ। यह उसकी खोपड़ी पर एक और थप्पड़ था। वह रो पड़ा। उसकी दोनों आँखें दो फव्वारे बन गयीं।

वह फव्वारे के सामने रोते रोते बोला — "हे भगवान मैं इतना बदकिस्मत क्यों हूँ। मैं उसे दो बार खो चुका हूँ जैसे मेरे हाथ बँध गये हों। जबकि मुझे ग्रे हाउंड[11] की तरह से भागना चाहिये था और मैं यहाँ पत्थर बना बैठा रहा। पर हिम्मत रख अभी तो एक सन्तरा और बाकी है और तीन तो खुशकिस्मती का नम्बर है। अब यह चाकू या तो मुझे अप्सरा देगा या फिर मेरी जान लेगा।"

यह कह कर उसने तीसरा सन्तरा भी काट दिया। जैसे ही उसने सन्तरा काटा तीसरी अप्सरा प्रगट हो गयी। उसने भी यही कहा "मुझे पानी दो।"

अबकी बार राजकुमार ने उसको तुरन्त ही पानी दे दिया और लो देखो वहाँ एक बहुत सुन्दर अप्सरा खड़ी थी क्रीम जैसी सफेद पर लाल धारियाँ। एक ऐसी चीज़ जो दुनियाँ में कभी देखी नहीं गयी। इतनी सुन्दर जो कही नहीं जा सकती जिसका किसी से मुकाबला नहीं सबसे ज़्यादा शान वाली।

उसके बाल सुनहरी थे जिनसे प्रेम के बाण निकल निकल कर दिलों पर तीर चला रहे थे। ऐसा चेहरा जिसे प्रेम के देवता ने लाल

[11] Grey Hound is a species of dog which is used in hunting to chase animals because it runs very fast.

रंग से रंग दिया था। वह भोलीभाली आत्मा जिसको इच्छाओं की फाँसी पर लटका दिया हो।

उन दो आँखों में जिनमें सूरज ने जिनसे देखने वाले के दिल में आहों के राकेट को आग लगाने के लिये दो फुलझड़ियाँ लगा दी हों। वीनस यानी प्रेम की देवी ने उसके होठों को गुलाब दे दिये जिनके काँटों से हजारों दिल घायल हो जायें।

एक शब्द में कहो तो वह सिर से पाँव तक इतनी सुन्दर थी कि वैसा प्राणी कहीं और कभी नहीं देखा गया। राजकुमार को तो पता नहीं क्या हो गया था। सन्तरे के बच्चे को देख कर वह तो बस ठगा सा खड़ा रह गया था।

उसने अपने आपसे पूछा "क्या तुम जागे हुए हो या सोये हुए हो सियोमैटीलो। या तुम्हारी आँखों को धोखा लग गया है। पीले छिलके में से यह कितना सुन्दर प्राणी निकला है। खट्टे रस से कितना मीठा फल। सन्तरे के बीज से कितनी सुन्दर लड़की निकली है।"

काफी देर के बाद उसे लगा कि वह सपना नहीं देख रहा था सच ही था। उसने परी को गले लगा लिया। उसको सैंकड़ों बार चूमा और हजारों बार उससे प्यार के शब्द कहे जिनमें अनगिनत चुम्बन भी शामिल थे।

फिर राजकुमार ने कहा — "प्रिये मैं तुम्हें इस तरह बिना कुछ पहनाये हुए जो तुम्हारे जैसी सुन्दर स्त्री के लायक हों और बिना

दासियों के जो एक रानी के साथ होनी चाहिये अपने पिता के राज्य में नहीं ले जा सकता।

तो तुम इस ओक के पेड़ पर चढ़ जाओ जहाँ ऐसा लगता है कि प्रकृति ने तुम्हारे लिये एक छिपने की जगह बनायी हुई है। यहाँ बैठ कर तुम मेरे लौटने का इन्तजार करो क्योंकि मैं बस बहुत जल्दी ही एक आँसू के सूखने से पहले ही तुम्हारे लिये कपड़े और नौकर ले कर वापस आता हूँ और तुम्हें घर ले जाऊँगा।"

उसके बाद कुछ रस्मों के बाद वह वहाँ से चला गया।

अब हुआ ऐसा कि एक स्त्री मालकिन अपनी एक काली दासी को से पानी भरने के लिये भेजा तो वह कुँए पर पानी भरने आयी। इत्तफाक से उसकी नजर पानी में पड़ी एक लड़की की परछाई पर पड़ी।

उसने सोचा कि वह परछाई उसी की है तो वह आश्चर्य से चिल्ला पड़ी — "ओ बेचारी लूसिया। मैं यह क्या देख रही हूँ। मैं इतनी सुन्दर और मालकिन मुझे यहाँ भेजती है? नहीं नहीं अब मैं इससे ज़्यादा सहन नहीं कर सकती।"

कह कर उसने अपने घड़ा तोड़ दिया और घर लौट गयी। जब उसकी मालकिन ने पूछा "तुमने यह शरारत क्यों की?"

तो वह बोली — "मैं अकेली गयी थी घड़ा पत्थर पर गिर कर टूट गया।"

उसकी मालकिन ने इस कहानी विश्वास न करते हुए भी विश्वास कर लिया। अगले दिन उसको एक सुन्दर छोटा घड़ा दिया जिसको उसने पानी भर कर लाने के लिये कहा। सो वह फिर वहाँ लौटी।

उसने फिर से पानी में वह सुन्दर शक्ल की परछाईं देखी तो फिर वह बोली "मैं कोई बदसूरत दासी नहीं हूँ। मैं कोई चौड़े पैर वाली बतख भी नहीं हूँ। मैं तो उतनी ही सुन्दर हूँ जितनी मेरी मालकिन। मैं अब फव्वारे पर नहीं आऊँगी।"

कह कर उसने वह सुन्दर घड़ा **70** टुकड़ों में तोड़ दिया और शिकायत करती हुई घर चली गयी। घर जा कर वह अपनी मालकिन से बोली — "वहाँ एक गधा आया था मेरा घड़ा कुँए पर गिर गया और टुकड़े टुकड़े हो गया।"

अबकी बार मालकिन से नहीं रहा गया उसने एक झाड़ू उठायी और उससे दासी को इतना पीटा कि उसको उसका दर्द बहुत दिनों तक रहा।

उसके बाद उसने उसको एक चमड़े का थैला दिया और कहा — "जा भाग और अपनी गर्दन तोड़ ले। ओ अभागिन दासी। ओ टिड्डे की टाँग वाली। ओ काली बीटिल[12]। जा भाग और मुझे यह थैला भर कर पानी ला

[12] A kind of insect. See the picture of one of its kind above.

कर दे वरना मैं तुझे कुत्ते की तरह से टॉग दूँगी और तेरी बहुत पिटायी होगी।

दासी वहाँ से फिर चली गयी क्योंकि वह पहले की मार देख चुकी थी और अब डर रही थी। जब वह चमड़े के थैले में पानी भर रही थी तो उसने पानी में वह परछाई फिर से देखी तो वह बोली "मैं बेवकूफ यहाँ पानी भरूँ? इससे अच्छा तो अक्लमन्दी से जीना है। इतनी सुन्दर लड़की इतनी बुरी मालकिन की सेवा क्यों करे।"

इतना कह कर उसने अपने सिर में से एक हेयर पिन निकाली और उससे उसने चमड़े के थैले में बहुत सारे छेद कर दिये जो अब किसी बागीचे में जो सैंकड़ों छेद वाले किसी पानी देने वाले बरतन की तरह दिखायी दे रहा था।

जब परी ने यह देखा तो वह हँस पड़ी। दासी ने जब हँसी की आवाज सुनी तो उसने ऊपर देखा तो उसको वहाँ एक परी दिखायी दी तो वह बोली "ओहो। तो वह तुम हो जिसने मुझे पिटवाया पर चिन्ता मत करो।"

फिर वह परी से बोली — "तुम वहाँ क्या कर रही हो ओ सुन्दर लड़की।"

परी जो बहुत ही शालीन थी उसने उसको वह सब बता दिया जो वह जानती थी और जो कुछ राजकुमार के साथ हुआ था। जिसका वह हर घंटे हर पल बढ़िया कपड़ों और दास दासियों के

साथ आने का इन्तजार कर रही थी कि वह आयेगा और उसे अपने पिता के राज्य ले जायेगा। फिर वहाँ वे साथ साथ खुश खुश रहेंगे।

जब उस दासी ने जिसके दिमाग में बुराई भरी थी यह सब सुना तो उसने सोचा कि यह इनाम तो वह खुद ले सकती है। सो उसने परी से कहा — "तो तुम अपने पति का इन्तजार कर रही हो तो मैं ऊपर आती हूँ और तुम्हारे बालों में कंघी कर देती हूँ।"

परी बोली — "आओ तुम्हारा पहली मई की तरह स्वागत है।"

और दासी पेड़ के ऊपर चढ़ गयी। परी ने भी उसको अपना गोरा हाथ दे कर उसको ऊपर चढ़ने में सहायता की। परी का गोरा हाथ दासी के काले पंजों में ऐसा लग रहा था जैसे काली ऐबोनी के खाँचे में क्रिस्टल का शीशा जड़ा हुआ हो। जैसे ही उसने बालों में कंघी करनी शुरू की उसने अचानक ही अपनी हेयर पिन उसके सिर में घुसा दी।

परी तुरन्त ही दर्द से चिल्लायी "फाख्ता फाख्ता" और एक पल में ही फाख्ता बन कर उड़ गयी। इसके बाद दासी ने अपने कपड़े निकाल दिये उनकी एक गठरी बनायी और उसे एक मील दूर फेंक दिया। और फिर वह उस पेड़ पर ऐसे बैठ गयी जैसे कोई जैट की मूर्ति पन्ने के घर में बैठी हो।

कुछ ही देर में राजकुमार एक बहुत बड़े लावा लश्कर के साथ लौटा तो उसने देखा कि जहाँ वह दूध का बर्तन छोड़ कर गया था वहाँ तो मछली के अंडों का अचार रखा हुआ था।

कुछ पलों के लिये तो वह उसे देख कर हक्का बक्का खड़ा रह गया। फिर उसने उससे पूछा — "इतने बढ़िया कागज पर यह स्याही का धब्बा किसने बनाया। इस पर तो मैं अपनी ज़िन्दगी का सबसे चमकीला दिन लिखना चाहता था। इस नये पेन्ट किये गये घर पर किसने दुखों की छाया डाल दी है जिसमें मैं खुशी खुशी अपनी ज़िन्दगी बिताना चाहता था।

ऐसा कैसे हुआ कि जहाँ मैं चाँदी की खान छोड़ कर गया था जो मुझे अमीर और खुश बना देती वहाँ मुझे यह कसौटी पत्थर[13] मिला है।"

पर राजकुमार को आश्चर्य में पड़ा देख कर चालाक दासी बोली — "आश्चर्य मत करो ओ राजकुमार। मेरे ऊपर कोई जादू डाल गया है जिससे मैं सफेद लिली से काले कोयले जैसी हो गयी हूँ।"

बेचारे राजकुमार ने देखा कि इस शरारत के लिये वह कुछ कर नहीं सकता सो उसने अपना सिर लटका लिया और इस गोली को किसी तरह निगल गया। उसने दासी को पेड़ से नीचे उतरने के लिये और फिर उसे नये कपड़े पहनने के लिये कहा।

फिर वह दुखी हो कर नीचा सिर किये दासी को साथ लिये हुए अपने राज्य की तरफ चल दिया। राजा रानी उनके स्वागत के लिये अपने महल से छह मील आगे तक आये थे। उन्होंने उनका स्वागत

[13] Translated for the word "Touchstone" – Touchstone is a kind of black stone on which jewlers examine the gold by rubbing it on it.

इतनी ही खुशी से किया जितनी खुशी से कोई बन्दी अपनी फाँसी की सजा सुनता है।

यह देख कर कि उनके बेटे ने यह कैसा चुनाव किया है। जो इतनी दूर तक इतने दिनों तक इधर उधर घूमता रहा और जो सफेद फाख्ता लाने गया था वह किस तरीके से काला कौआ ले कर घर लौटा है उनका दिल खुश नहीं था।

पर क्योंकि वह कुछ कर नहीं सकते थे सो उन्हांने बच्चों को अपना ताज दिया और कोयले के चहरे पर सुनहरा ताज रख दिया।

जब वे लोग बड़ी बड़ी दावतों की तैयारी कर रहे थे। रसोइये बतखों की सफाई में सूअरों को मारने में मेमनों को तैयार करने में माँस को पीसने में बर्तनों को ठीक करने में और दूसरे हजारों अच्छे अच्छे पकवान बनाने में लगे हुए थे कि एक बहुत सुन्दर फाख्ता रसोईघर की खिड़की पर आ कर बैठ गयी और बोली —

"ओ रसोइये मुझे सच सच बताना राजा और दासी आज क्या कर रहे हैं।"

पहले तो रसोइये ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया पर जब वह दोबारा लौटी तिबारा लौटी और अपना वही सवाल दोहराया तो वह यह आश्चर्यजनक बात बताने के लिये खाने के कमरे की तरफ दौड़ा गया।

जब दासी ने यह सुना तो उसने उसको तुरन्त ही पकड़ने और मार कर पकाने का हुक्म दे दिया। सो रसोइया वापस गया और

किसी तरह से फाख्ता को पकड़ा और उसके साथ वही किया जो दासी ने कहा था।

उसके पंख निकलने के लिये उसने चिड़िया को उबाला। उबाल कर उसका पानी और पंख उसने खिड़की से बाहर एक क्यारी डाल दिया। तीन दिन में ही उसमें एक सन्तरे का पेड़ उग आया जो बहुत जल्दी ही अपने पूरे साइज़ तक बढ़ गया।

अब ऐसा हुआ कि एक दिन राजा ने एक खिड़की से अपने बागीचे को देखा तो वहाँ उसने एक पेड़ देखा जिसे उसने वहाँ पहले कभी नहीं देखा था। उसने तुरन्त ही रसोइये को बुला कर पूछा कि उस पेड़ को वहाँ किसने और कब लगाया।

जैसे ही उसने रसोइये से पूरा हाल सुना वह समझ गया कि यह सब क्या मामला था। उसको मरने का सा दुख हुआ। उसने तुरन्त ही हुक्म दिया कि उस पेड़ को कोई न छुए बल्कि उसकी बहुत ही अच्छी तरह से देखभाल की जाये।

कुछ दिनों बाद उसमें तीन सन्तरे लगे। बिल्कुल वैसे ही जैसे बुढ़िया ने सियोमैटीलो को दिये थे। जब वे बड़े हो गये तो उसने उनको तोड़ लिया। वह उनको अपने कमरे में ले गया। पास में पानी का एक बर्तन रख लिया।

फिर उसने उन सन्तरों को काटना शुरू किया। पहले और दूसरे सन्तारों में से पहले की तरह परियाँ निकलीं जब वह तीसरा सन्तरा

काटने लगा तो उसमें से निकली परी को उसने पीने के लिये पानी दिया।

लो देखो उसके सामने तो वही परी खड़ी थी जिसको वह पेड़ के ऊपर बिठा कर छोड़ कर आया था। तब उसने उस दासी के साथ साथ जो कुछ किया था वह सब बताया।

अब जो खुशी राजकुमार को उसे दोबारा देख कर मिली उस खुशी को कौन कह सकता है। उस समय वह जिस खुशी से उछल कूद रहा चिल्ला रहा था उसे कौन बता सकता है। क्योंकि राजा तो खुशी के समुद्र में तैर रहा था और उसकी लहरों पर स्वर्ग का आनन्द ले रहा था।

उसने परी को गले लगाया फिर उसका हाथ पकड़ कर उसको कमरे के बीच में ले गया जहाँ दरबारी और सारे लोग दावत के लिये जमा थे। वहाँ उसने उसको मिलवाया।

तब राजा ने सबको एक एक कर के बुलाया और उनसे पूछा कि उसको कौन सी सजा दी जाये जिसने इतनी सुन्दर लड़की को नुकसान पहुँचाया हो।

एक ने कहा कि ऐसे आदमी के गले में सन की रस्सी डाल देनी चाहिये। दूसरा बोला उसको पत्थरों का नाश्ता कराना चाहिये। तीसरा बोला उसकी खूब पिटायी की जाये। चौथा बोला कि उसको जहर पिला देना चाहिये। पाँचवा बोला उसके सीने पर चक्की बूच की तरह से लगा देनी चाहिये।

किसी ने कुछ कहा किसी ने कुछ तो उसने काली रानी को बुलवाया और उससे भी यही सवाल पूछा। उसने कहा — "ऐसा आदमी तो जला देने के लायक है। और उसकी राख किले की छत से चारों तरफ उड़ा देनी चाहिये।"

जब राजा ने उसके मुँह से यह सुना तो बोला — "तुमने तो अपने पैर पर अपने आप ही कुल्हाड़ी मार ली। तुमने तो अपने ही पकौड़े बना लिये। तुमने चाकू तेज़ किया और जहर मिला लिया। तुमने तो अपना ही इतना नुकसान किया है जितना कोई और नहीं कर सकता। तुम बेकार की जीव हो।

तुमको पता होना चाहिये कि यही वह सुन्दरी है जिसे तुमने हेयर पिन से घायल किया है। यही वह फाख्ता है जिसे तुमने मार देने और पकाने का हुक्म दिया था।

अब तुम बताओ कि तुम क्या कहती हो। यह सब तुम्हारा ही किया धरा है और कोई भी जो बुरा करता है उसको बदले में बुराई की ही आशा रखनी चाहिये।"

सो उसने अपने एक नौकर को उसको पकड़ने और जलती हुई लकड़ियों के ऊपर फेंक देने के लिये कहा। और फिर उसकी राख किले की छत पर से चारों तरफ बिखेर देने के लिये कहा।

उसने यह सच साबित कर दिया —

जो कॉटे बोता है उसे नंगे पैर नहीं जाना चाहिये

2 तीन सन्तरों से प्यार–1[14]

तीन सन्तरे जैसी कहानियों के संगह की यह दूसरी कहानी भी इटली में कही सुनी जाने वाली लोक कथाओं की एक पुस्तक से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक राजा और एक रानी थे। उनके एक बेटा था जो कम बुद्धि वाला था। रानी इस बात से बहुत दुखी थी। उसने सोचा कि वह लौर्ड की शरण में जायेगी और उनसे सलाह लेगी कि वह ऐसे बेटे के साथ क्या करे।

लौर्ड ने कहा कि उसको अपने बेटे को किसी तरह हँसाना चाहिये। वह बोली — "लौर्ड। मेरे पास तो केवल एक डिब्बा तेल है और वह भी केवल मेरे लिये है।"

लौर्ड बोले — "तुम इस तेल को दान में दे दो। इससे बहुत सारे लोग आयेंगे। कुछ की कमर झुकी होगी तो कुछ सीधे चल रहे होंगे तो कुछ के कूबड़ भी हो सकता है। क्या पता इनमें से किसी को देख कर तुम्हारे बेटे को हँसी आ जाये।"

सो रानी ने यह ढिंढोरा पिटवाया कि उसके पास एक डिब्बा तेल है। कोई भी आ कर उसमें से थोड़ा थोड़ा तेल ले सकता है।

---

[14] The Love of the Three Oranges. Translated from: Crane, Thomas F. "Popular Italian Tales". 1885. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

यह सुन कर सचमुच में बहुत सारे लोग तेल लेने पहुँच गये। सबने मिल कर तेल का वह डिब्बा खत्म कर दिया।

अन्त में एक जादूगरनी आयी उसने भी रानी से थोड़े से तेल की माँग की। रानी बोली — "आह मुझे अफसोस है कि मेरा सारा तेल तो चला गया और मेरे पास अब और तेल नहीं है।"

रानी बहुत दुखी और गुस्सा थी कि यह सब करने के बाद भी उसका बेटा अभी हँसा नहीं था। जादूगरनी फिर बोली — "ज़रा मुझे अपना डिब्बा तो दिखाओ।"

रानी ने अपना डिब्बा खोला तो बुढ़िया उसके अन्दर घुस गयी और जब वह बाहर निकली तो सारी तेल में भीगी हुई थी। यह देख कर रानी का बेटा हँस पड़ा। वह हँसता रहा हँसता रहा और बहुत देर तक हँसता रहा।

यह देख कर बुढ़िया बोली — "भगवान करे तुम कभी खुश न रहो जब तक तुम तीन सन्तरों का प्यार न पा जाओ।"

बेटा यह सुन कर और भी इच्छुक हो गया। वह अपनी माँ से बोला — "माँ मुझे अब कभी शान्ति नहीं मिलेगी जब तक मुझे तीन सन्तरों का प्यार न मिल जाये।"

रानी बोली — "पर बेटा तुम जाओगे कैसे और तीन सन्तरों का प्यार पाओगे कैसे।"

पर वह नहीं माना। उसने अपना घोड़ा उठाया और उस पर सवार हो कर चल दिया। वह चलता रहा वह चलता रहा जब तक

कि वह एक बहुत बड़े फाटक के सामने नहीं आ गया। उसने दरवाजा खटखटाया तो अन्दर से किसी ने पूछा "कौन है।"

उसने जवाब दिया — "भगवान की बनायी एक आत्मा।"

अन्दर वाली आवाज ने कहा — "इतने सालों में आज तक किसी ने मेरा यह दरवाजा नहीं खटखटाया।"

लड़के ने फिर वही कहा — "दरवाजा खोलिये मैं भगवान की बनायी एक आत्मा हूँ।"

तब एक बूढ़ा आया और उसने दरवाजा खोला। उसकी पलकें इतनी लम्बी थीं कि वह नीचे जमीन को छू रही थीं। बूढ़ा बोला — "बेटा वे छोटे वाले काँटे उठा कर मेरी इन पलकों को ज़रा ऊपर तो उठाओ।"

राजकुमार ने वैसा ही किया तो बूढ़े ने पूछा — "तुम इस तरफ कहाँ जा रहे हो।"

राजकुमार बोला — "मैं इस तरफ तीन सन्तरों का प्यार पाने जा रहा हूँ।"

बूढ़ा बोला — "कितने लोग चले गये पर इधर लौट कर कोई नहीं आया। क्या तुम्हारी भी यही इच्छा है कि तुम भी वापस न लौटो। मेरे बच्चे। लो तुम ये टहनियाँ ले जाओ। तुमको कुछ जादूगरनियाँ मिलेंगी जो अपने हाथों से अपना ओवन साफ कर रही होंगी। ये टहनियाँ तुम उनको दे देना तो वे तुम्हें वहाँ से जाने देंगी।"

राजकुमार ने धन्यवाद दे कर उससे वे टहनियाँ ले लीं और अपने घोड़े पर सवार हो कर आगे चल दिया। वह काफी देर तक चलता रहा कि आगे चल कर उसको बहुत बड़े साइज़ की जादूगरनियाँ बैठी अपने हाथों से ओवन साफ करती दिखायी दीं। उसने वे डंडियाँ उनकी तरफ फेंक दीं और उन्होंने उसे जाने दिया।

वह आगे चलता रहा कि अबकी बार वह पहले दरवाजे से भी एक बड़े दरवाजे के पास आया। यहाँ भी पहले जैसा ही हुआ। यहाँ वाले बूढ़े ने कहा — "अब तुम जा ही रहे हो तो तुम रास्ते के लिये यह रस्सी लेते जाओ। रास्ते में तुम्हें कुछ जादूगरनियाँ अपने बालों से पानी खींचती हुई मिलेंगी। तुम उनको यह रस्सी दे देना तो वे तुम्हें वहाँ से जाने देंगी।"

राजकुमार ने उसे भी धन्यवाद दिया रस्सी ली और अपने घोड़े पर सवार हो कर चल दिया। आगे जा कर वैसा ही हुआ जैसा कि बूढ़े ने कहा था।

उससे और आगे चला तो वे एक तीसरे दरवाजे के पास आ गया जो पिछले दोनों दरवाजों से भी बड़ा था। इसमें भी एक बूढ़ा था जिसकी पलकें पिछले दोनों बूढ़ों की पलकों से भी ज़्यादा लम्बी थीं।

इस बूढ़े ने उसको एक थैला भर कर रोटी दी और एक मोमबत्ती दी और कहा — "लो यह रोटी लो और यह मोमबत्ती लो।

आगे जा कर तुम्हें कुछ बड़े बड़े कुत्ते मिलेंगे तो तुम उनके लिये यह रोटी फेंक देना तो वे तुम्हें वहाँ से गुजर जाने देंगे।

वहाँ से आगे चल कर एक और बड़ा दरवाजा आयेगा जिस पर कई जंग लगे ताले लगे होंगे। वहाँ तुमको एक मीनार दिखायी देगी और उसके अन्दर होगा तीन सन्तरों का प्यार।

जब तुम उस जगह पहुँच जाओ तब तुम इस मोमबत्ती से उन जंग लगे तालों को चिकना कर लेना। और जब तुम मीनार पर चढ़ जाओगे तब तुमको वहाँ एक कील से टँगे सन्तरे दिखायी देंगे।

वहाँ तुमको एक बुढ़िया भी दिखायी देगी जिसका एक राक्षस[15] बेटा है। उसने उन सारे ईसाइयों को खा लिया है जो भी वहाँ आते हैं। सो तुम्हें उससे बहुत सावधान रहना है।"

राजकुमार ने सन्तुष्ट हो कर रोटी का थैला लिया और मोमबत्ती ली और अपने घोड़े पर सवार हो कर चल दिया। काफी देर तक चलने के बाद उसने देखा कि दूर तीन बहुत बड़े कुत्ते मुँह खोले उसको खाने के लिये तैयार बैठे हैं। उसने उनके सामने वह रोटी फेंक दी। कुत्ते उसे खाने में लग गये सो उन्होंने उसे जाने दिया।

चलते चलते वह एक दूसरे दरवाजे के पास आया जहाँ कई जंग वाले ताले लगे थे। वह अपने घोड़े से नीचे उतरा घोड़े को

[15] Translated for the word "Ogre"

दरवाजे से बाँधा और तालों में मोमबत्ती से उनको चिकना करना शुरू कर दिया। काफी आवाज करने के बाद वे खुल गये।

राजकुमार उसके अन्दर घुसा तो उसको एक मीनार दिखायी दी। वह उसमें ऊपर चला गया। वहाँ पहुँच कर उसको एक बुढ़िया मिली।

उसने राजकुमार से पूछा — "बेटा तुम कहाँ जा रहे हो। तुम यहाँ किसलिये आये हो। मेरा एक बेटा है जो एक राक्षस है। जब वह तुम्हें देखेगा तो वह तुम्हें जरूर ही खा जायेगा।"

जब वह यह सब राजुकमार से कह रही थी कि तभी उसका बेटा आ गया। बुढ़िया ने राजकुमार को पलंग के नीचे छिपा दिया पर उसके बेटे ने भाँप लिया कि घर में कहीं कोई आदमी था। सो उसने चिल्लाना शुरू किया —

गीं गीं मुझे एक ईसाई की खुशबू आ रही है
गीं गीं मुझे एक ईसाई की खुशबू आ रही है

उसकी माँ ने कहा — "बेटा यहाँ कोई नहीं है।"

पर वह वही दोहराता रहा। तब उसकी माँ ने उसको शान्त करने के लिये माँस का एक टुकड़ा दिया जिसे उसने एक पागल आदमी की तरह खा लिया।

जब वह अपने बेटे को खिला रही थी तो उसने राजकुमार को तीन सन्तरे दिये — "मेरे बेटे। तुम इन्हें लो और तुरन्त ही इन्हें ले

कर यहाँ से भाग जाओ क्योंकि जैसे ही इसका खाना बन्द हुआ तो यह तुमको फिर से ढूँढने लगेगा और तुम्हारे मिलते ही तुम्हें खा जायेगा।"

तीनों सन्तरे देने के तुरन्त बाद ही उसको पछतावा हुआ तो उसको यही पता नहीं था कि वह क्या करे सो उसने चिल्लाना शुरू किया – सीढ़ियों इसको नीचे फेंक दो। तालो इसको कुचल दो।"

वे बोले — "हम यह नहीं कर सकते क्योंकि इसने हमें मोम लगाया है।"

उसने कहा — "कुत्तों इसको खा जाओ।"

कुत्ते बोले — "हम इसको नहीं खा सकते इसने तो हमें रोटी खिलायी है।"

उसके बाद राजकुमार अपने घोड़े पर सवार हुआ और वहाँ से भाग लिया।

बुढ़िया फिर चिल्लायी — "जादूगरनी इसको बाँध लो।"

जादूगरनी बोली — "हम इसे नहीं बाँध सकते क्योंकि इसने हमें रस्सी दी है।"

बुढ़िया बोली — "जादूगरनी इसको मार दो।"

जादूगरनी बोली — "नहीं हम नहीं मार सकते क्योंकि इसने मुझे टहनियाँ दी हैं।"

इस तरह राजकुमार सबसे बचता हुआ भागता रहा। रास्ते में वह बहुत थक गया और उसे प्यास भी लग आयी तो उसने सोचा

कि वह क्या करे। उसने एक सन्तरा निकाला और उसे तोड़ दिया। लो उसमें से तो एक बहुत सुन्दर लड़की निकल आयी और बोली "मुझे बहुत प्यास लगी है। मुझे पानी दो।"

राजकुमार बोला — "मेरे पास तो पानी नहीं है।"

वह बोली — "ऐसे तो मैं मर जाऊँगी।"

और वह तुरन्त ही मर गयी।

राजकुमार ने वह सन्तरा फेंक दिया और अपना चलना जारी रखा पर उसे प्यास फिर से लग आयी। निराश हो कर उसने दूसरा सन्तरा भी तोड़ दिया। इस सन्तरे में से भी एक बहुत सुन्दर लड़की निकल आयी जो पहली लड़की से भी ज़्यादा सुन्दर थी।

इस लड़की ने भी राजकुमार से पानी माँगा पर राजकुमार के पास तो पानी था ही नहीं सो वह उसको पानी नहीं दे सका और पहली लड़की की तरह से यह लड़की भी मर गयी।

अब केवल एक सन्तरा बच गया था। उसने सोचा कि अबकी बार इस लड़की के साथ वह ऐसा नहीं होने देगा। वह उसको वहीं तोड़ेगा जहाँ पानी होगा। उसको फिर से प्यास लग आयी थी पर वह पानी की इन्तजार में अपने आपको रोके रहा।

कुछ दूर चलने के बाद एक कुँआ आया। वहाँ उसने वह तीसरा सन्तरा तोड़ा। उसमें से भी एक लड़की निकली जो पिछली दोनों लड़कियों से भी ज़्यादा सुन्दर थी। जब उसने पानी माँगा तो

उसने उसे पानी दिया और उसे अपने घोड़े पर बिठा कर अपने राज्य ले चला।

जब वह अपने घर के पास पहुँच गया तो बोला — "मैं तुम्हें यहाँ इन दो पेड़ों के नीचे छोड़े जाता हूँ। उन दोनों में से एक पेड़ की पत्तियाँ सोने की थीं और फल चाँदी के थे और दूसरे पेड़ की पत्तियाँ चाँदी की थीं और फल सोने के थे।

उसने उसके लिये एक बहुत सुन्दर काउच बनाया और उसको पेड़ों के नीचे उस पर बिठा कर उससे कहा — "मैं अब अपने घर जाता हूँ और जा कर अपनी माँ को बताता हूँ कि मैंने तुम्हें पा लिया है। फिर मैं तुम्हें यहाँ से ले जाऊँगा और हम दोनों शादी कर लेंगे।"

कह कर वह अपने घोड़े पर चढ़ा और अपने घर चला गया। जब वह अपने घर चला गया तो एक बूढ़ी जादूगरनी वहाँ आयी और उससे बोली — "आ बेटी मैं तेरे बालों में कंघी कर दूँ।"

लड़की बोली — "नहीं मेरी जैसी लड़की को इसकी कोई इच्छा नहीं है।"

पर जादूगरनी ने फिर कहा — "नहीं नहीं आ बेटी मैं तेरे बालों में कंघी कर दूँ।"

जब बुढ़िया ने कई बार कहा तो थक कर उसने उसे हाँ कर दी। अब उस बुढ़िया ने उसके सिर में क्या किया। उसने एक पिन उसकी दोनों कनपटियों के आर पार निकाल दी।

ऐसा करते ही लड़की एक फाख्ता में बदल गयी। अब उस नीच जादूगरनी ने क्या किया कि वह उस लड़की के काउच पर लेट गयी और राजकुमार का इन्तजार करने लगी।

असली लड़की तो पहले ही फाख्ता बन कर उड़ गयी थी।

इस बीच राजकुमार घर पहुँचा तो माँ ने कहा — "बेटे तुम इतने दिनों तक कहाँ थे। तुमने इतना सारा समय कहाँ और कैसे गुजारा।"

राजकुमार बोला — "ओह माँ मैं अपने लिये कितनी सुन्दर पत्नी ले कर आया हूँ।"

"पर बेटे तुम उसे छोड़ कहाँ आये हो।"

"माँ मैं उसे दो पेड़ों के बीच में छोड़ कर आया हूँ। जिनमें से एक पेड़ की पत्तियाँ चाँदी की हैं और फल सोने के हैं और दूसरे पेड़ की पत्तियाँ सोने की हैं और फल चाँदी के हैं।"

तब रानी ने एक बहुत बड़ी शानदार दावत का इन्तजाम किया। बहुत सारी गाड़ियाँ तैयार करवायीं जो उस लड़की को लेने जातीं। जिनको घोड़ों पर बैठना था वे सब अपने अपने घोड़ों पर चढ़े। जिनको गाड़ियों में बैठना था वे सब अपनी अपनी गाड़ियों में बैठे और लड़की को लाने के लिये चल दिये।

लेकिन जब सब वहाँ पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वहाँ तो एक बहुत ही बदसूरत झुर्री पड़ी स्त्री काउच पर बैठी हुई थी और एक सफेद फाख्ता उन पेड़ों के ऊपर बैठी हुई थी।

बेचारा राजकुमार। तुम उसकी हालत समझ सकते हो। वह उसे देख कर अपने दिल में बहुत दुखी था और उस बदसूरत स्त्री को देख कर बहुत शर्मिन्दा भी था।

उसके माता पिता ने उसको शान्त करने के लिये उस स्त्री को एक गाड़ी में बिठाया और महल की तरफ चल दिये जहाँ शादी की दावत उन सबका इन्तजार कर रही थी।

राजकुमार बहुत दुखी था। माँ ने उसे बहुत समझाया कि वह दुखी न हो वह फिर से सुन्दर हो जायेगी पर राजकुमार न तो बात कर रहा था और न ही उसका मन खाने में लग रहा था। खाना लाया गया। सब मेहमान एक गोल मेज के चारों तरफ बैठे।

इस बीच एक सफेद फाख्ता रसोईघर के छज्जे पर आ बैठी और गाने लगी —

ओ रसोइये सो जा भुने हुए माँस को जल जाने दे
ताकि बूढ़ी जादूगरनी को माँस खाने को न मिले

मेहमान मेज पर माँस का इन्तजार कर रहे थे। उन्होंने बहुत देर तक उसके आने का इन्तजार किया पर जब वहाँ वह बहुत देर तक

नहीं आया तो लोग रसोईघर की तरफ बढ़े। वहाँ जा कर उन्होंने देखा कि रसोइया तो सोया पड़ा था।

वे उसे बहुत देर तक जगाते रहे तब कहीं जा कर उसकी आँख खुली पर वह फिर से उनींदा हो गया। उसने कहा कि उसको नहीं पता कि उसको क्या हो गया है पर वह खड़ा नहीं हो पा रहा था। किसी तरह से उसने दूसरा माँस भूनने के लिये रखा कि वही फाख्ता रसोईघर के छज्जे पर फिर आयी और फिर से गाने लगी —

ओ रसोइये सो जा भुने हुए माँस को जल जाने दे
ताकि बूढ़ी जादूगरनी को माँस खाने को न मिले

मेहमानों ने फिर बहुत देर तक इन्तजार किया जब तक वे थक नहीं गये। तब राजकुमार खुद उसको देखने के लिये गया तो उसने भी देखा कि रसोइया तो सोया पड़ा था और माँस जल रहा था। उसने रसोइये को जगाते हुए पूछा — "तुम्हें क्या हो गया है। तुम सो रहे हो और यह माँस यहाँ जल रहा है।"

तब रसोइये ने बताया कि अभी वहाँ एक फाख्ता आयी थी और वह बार बार यही गा रही थी —

ओ रसोइये सो जा भुने हुए माँस को जल जाने दे
ताकि बूढ़ी जादूगरनी को माँस खाने को न मिले

और वह तुरन्त ही फिर से सोने लगा। सो राजकुमार छज्जे पर गया वहाँ उसने फाख्ता को देखा और उससे बोला — "ओ फाख्ता प्यारी फाख्ता। इधर आ मैं तुझे ज़रा देखूँ तो।"

फाख्ता उसके पास आ गयी तो उसने उसको पकड़ लिया और उसको सहलाने लगा कि तभी उसने महसूस किया कि उसके सिर में तो पिनें लगायी गयी हैं – एक तो माथे में और एक दोनों कनपटियों पर।

उसने क्या किया कि उसके माथे में लगी हुई पिन निकाल दी। उसे फिर से सहलाया और फिर उसकी कनपटियों में से भी पिन निकाल दी। पिन निकालते ही वहाँ एक बहुत सुन्दर लड़की खड़ी हो गयी। उससे भी सुन्दर जितनी वह पहले थी।

राजकुमार तुरन्त ही उसको अपनी माँ के पास ले गया और बोला — "माँ देखो यह रही मेरी दुलहिन।"

उसकी माँ उस सुन्दर लड़की को देख कर बहुत खुश हुई और उसका पिता राजा भी। पर जब बूढ़ी जादूगरनी ने उस लड़की को देखा तो वह चिल्लायी "मुझे कहीं और ले चलो मुझे कहीं और ले चलो। मुझे इससे बहुत डर लग रहा है।"

तब सुन्दर लड़की ने उन्हें वह सब बताया जो कुछ वहाँ हुआ था। मेहमानों से पूछा गया कि ऐसी हालत में जादूगरनी के साथ क्या करना चाहिये। जो सबसे ऊँचे आदमी था वह बोला कि उसके शरीर पर खूब अच्छे से तेल लगा कर उसे जला देना चाहिये।

दूसरे लोग भी चिल्लाये हाँ यही ठीक है यही ठीक है। सबने उस बूढ़ी जादूगरनी को पकड़ लिया उसको तेल मल कर चौराहे पर आग जला कर उस आग में फेंक दिया गया। फिर वे सब घर लौटे और पहले से भी ज़्यादा धूमधाम से राजकुमार की शादी हुई।

3 तीन सन्तरों से प्यार–2[16]

तीन सन्तरे की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की एक बहुत ही लोकप्रिय और पुरानी लोक कथा है। आओ देखते हैं कि इसमें तीन सन्तरों से प्यार कैसे होता है। यह एक बच्चों की पुस्तक से ली गयी है जो एक नाटक के रूप में है।

पैन्टेलून[17] जोकर अपनी ऊँची आवाज में बोला — "आओ आओ सब लोग यहाँ आ कर इकट्ठे हो जाओ। अभी हम एक बहुत ही अच्छा नाटक खेलने जा रहे हैं।"

एक ने पूछा — "यह किस तरह का नाटक है? क्या यह हँसी वाला नाटक है? यह नाटक जितना हँसाने वाला होगा उतना ही ज़्यादा अच्छा होगा।" यह सुन कर कई लोगों ने हाँ में अपने सिर हिलाये।

पर किसी ने कहा — "अगर कोई दुख भरा नाटक भी है तो वह भी क्या बुरा है? हम उनका रोना ही सुन लेंगे।"

---

[16] The Love For Three Oranges – a story adapted from the book "The Love for Three Oranges", by Sergei Prokofiev. Grimm Press. 2006. 30 p. A 1-story picture book.
Because this book is based on a play that is why some dramatic effect may be seen.
[It is a famous Italian fairy tale written by Giamattista Basile inhis "Il Pentamerone". It may be found with the title "The Three Citrons". It has a variant too – "The Love of Three Pomegranates". You may read the "Il Pentamerone" book in Hindi available from hindifolktales@gmail.com in three parts – this story is in its part 2.]

[17] Pentaloon is the clown

पैन्टेलून ने सबको चुप कराने की कोशिश की — “चुप हो जाओ, चुप हो जाओ। मैं तुम लोगों से वायदा करता हूँ कि यह नाटक अपने में एक अकेला और बहुत ही बढ़िया नाटक होगा। ऐसा नाटक तुम लोगों ने पहले कभी कहीं नहीं देखा होगा। सो अब हम पेश करते हैं आज का नाटक तीन सन्तरों से प्यार।”

एक बूढ़ा बोला — “तीन सन्तरों से प्यार? इसका क्या मतलब हुआ?” पर वहाँ बैठे बच्चों को यह नाम अच्छा लगा और उन्होंने ज़ोर से ताली बजायी।

वे चिल्लाये — “हमको तीन सन्तरों से प्यार चाहिये। हमको तीन सन्तरों से प्यार चाहिये।”

जोकर को यह सुन कर बड़ा अच्छा लगा कि बच्चे उसका नाटक देखने के लिये उत्सुक हैं।

उसने उनके सामने सिर झुकाया और बोला — “बच्चों, तुम लोग तो हमेशा से ही मेरे बहुत अच्छे नाटक देखने वालों में से रहे हो। अच्छा अब देखो नाटक शुरू होता है और राजा आने वाला है।”

और सचमुच में ही एक राजा वहाँ आ गया बहुत ही बढ़िया कपड़े पहने। पर वह तो बहुत ही चिन्तित दिखायी दे रहा था। यह चिन्ता तो उसकी चटकीली रंगीन पोशाक से बिल्कुल भी मेल नहीं खा रही थी।

ऐसा इसलिये था क्योंकि वह अपने बेटे राजकुमार के बारे में बहुत चिन्तित था। उसने पूछा — "मेरे राजकुमार को क्या हुआ है? क्या राजकुमार के पेट में दर्द है? या फिर उसके सिर में दर्द है? या फिर उसकी कमर में दर्द है? या उसके हाथ या पैर में दर्द है?

उसकी ऑखें खाली खाली दिखायी देती हैं और वह एक शब्द भी नहीं बोलता। दुनिया भर के सैंकड़ों डाक्टरों ने उसको देख लिया और सब एक ही निश्चय पर पहुँचे हैं कि उसको हॅसना चाहिये। पर भगवान जानता है कि मेरा बेटा बेचारा तो कभी हॅसा ही नहीं।"

राजा बेचारा एक गहरी सॉस ले कर रह गया। फिर वह उस जोकर की तरफ घूम कर बोला — "पैन्टेलून, तुम ही इसका कुछ उपाय करो।"

पैन्टेलून ने सलाह दी कि राजा को अपने दरबार के हॅसोड़िये ट्रुफ़ालदीनो[18] को बुलाना चाहिये जिसका काम ही सबको हॅसाना और सबका दिल बहलाना था।

उसके चुटकुले और उसकी बेवकूफी की बातें शायद राजकुमार को हॅसा सकें। यह सलाह सुन कर राजा ने अपने दरबारियों को हुक्म दिया कि वे ट्रुफ़ालदीनो को ढूँढ कर लायें।

जब ट्रुफ़ालदीनो मिल गया तो सारे देश के लोग उसके शो का इन्तजार करने लगे। इस बीच चैलियो जादूगर और फ़ैटा मौरगैना

---

[18] Truffaldino jester

जादूगरनी[19] ने भी उसके शो की तैयारी करने में काफी सहायता की।

चैलियो को शक था कि फ़ैटा मोरगैना जादूगरनी[20] जरूर ही कुछ गड़बड़ चाल चलेगी इसलिये वह गहरी ॲधेरी घाटी की तरफ चल पड़ा जहाँ वह बूढ़ी जादूगरनी रहती थी।

वह यह सोच रहा था कि वह उसको इस बात के लिये तैयार कर लेगा कि वह अपनी चाल न खेले। पर जब वह फ़ैटा मौरगैना के पास पहुँचा तो फ़ैटा मौरगैना ने चैलियो का एक भेदभरी मुस्कान के साथ स्वागत किया।

उसने पूछा — "तुम मुझे यह बताने के लिये यहाँ किस अधिकार से आये हो कि मैं क्या करूँ और क्या न करूँ?"

बात करते करते उसने अपनी ताश की गड्डी उठा ली और बोली — "क्या तुम फ़ैटा मौरगैना के ताश का पत्ता खींचने की हिम्मत कर सकते हो? अगर कर सकते हो तो करो। पर देखना कि अगर मैं हार गयी तो फिर जो तुम कहोगे मैं वही करूँगी।"

यह कह कर उसने ताश का एक पत्ता जादूगर को दिया और एक खुद लिया। एक पल बाद ही वह पागलों की तरह अपना पत्ता हिलाते हुए खुशी से बोली — "हा हा हा। हुकुम की रानी। अब तुम अगर अपना पत्ता दिखा सकते हो तो दिखाओ।"

---

[19] Chelio wizard and Fata Morgana witch – Fata Morgana witch is a famous witch of Italy. She is mentioned in several other stories also. She is famous character of Italian folktales.

[20] Feta Morgana is a witch

चैलियो हार गया था। फ़ैटा खुशी से बोली — "मैं जीत गयी, मैं जीत गयी।" और ऐसा कहते हुए वह महल की तरफ भाग गयी।

उधर दरबार के हँसोड़िये ट्रुफ़ालदीनो ने राज्य के सारे जोकरों को इकट्ठा कर रखा था। और वह तो बस क्या ही बढ़िया शो था।

मजाकिया चेहरे और कपड़े पहन कर सब लोग मंच पर इधर से उधर घूम रहे थे जिससे कि सारे देखने वाले हँसी से दोहरे हुए जा रहे थे। हँसते हँसते उनकी आँखों से उनके गालों पर आँसू बहे जा रहे थे।

पर अफसोस राजकुमार ऐसे ही बैठा था। इतनी सब हँसी की चीज़ें होते हुए भी राजकुमार का चेहरा वैसा ही पीला और उदास रहा।

क्योंकि हर आदमी राजकुमार को हँसाने की इतनी कोशिश कर रहा था कि उनमें से किसी ने देखा ही नहीं कि फ़ैटा मौरगैना कब महल में खिसक आयी।

बहुत ऊँची एड़ी के जूते पहने वह राजकुमार की तरफ चली जा रही थी जैसे वह उसे बहुत करीब से देखना चाहती थी।

इतने में उसका ध्यान बँटा और वह अपने स्कर्ट की झालर में अटक कर राजकुमार के सामने गिर गयी। उसके हाथ पैर सब तरफ फैल गये। उसकी पोशाक के नीचे पहना हुआ उसका धारी वाला निकर भी सबको दिखायी देने लगा।

कमरे में बैठे सारे लोग इस सबको देख कर पहले तो आश्चर्य में पड़ गये पर फिर ज़ोर ज़ोर से हँसने लगे।

पर पता है क्या हुआ? वह आदमी जो सबसे ज़्यादा ज़ोर से हँसा वह कौन था? वह था राजकुमार।

पर क्या वह सचमुच राजकुमार ही था जो हँसा था? उसकी तो हँसी इतनी ज़्यादा थी कि उसको तो साँस लेने का भी मौका नहीं मिल रहा था। वह तो बस उस अजीब सी हालत में पड़ी जादूगरनी को देखे जा रहा था जो उसके सामने पड़ी थी और हँसे जा रहा था।

"यह तो सबसे अजीब निकर होगा जो दुनियाँ में पहले कभी किसी ने देखा होगा।"

यह देख कर जादूगरनी का चेहरा शर्म से लाल पड़ गया। जब वह लाल पड़े चेहरे वाली जादूगरनी उठने की कोशिश कर रही थी तो उसने गुस्से से राजकुमार की तरफ इशारा कर के कहा — "फ़ैटा मौरगैना पर हँसने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? मैं अभी तुमको सबक सिखाती हूँ तब तुमको अपनी इस हरकत पर अफसोस होगा।

यह कह कर उस बूढ़ी जादूगरनी ने शाप के कुछ शब्द बुड़बुड़ाने शुरू किये तो महल के उस कमरे में बैठे सब डर गये और डर के मारे एकदम चुप हो गये।

जब फ़ैटा मौरगैना ने अपना जादू राजकुमार पर डाला तो सबकी ऑखें राजकुमार पर ठहर गयी — "मैं तुम्हें हुक्म देती हूँ कि तुम तीन सन्तरों के प्रेम में पड़ जाओ।"

जैसे ही उसने ये शब्द कहे राजकुमार बोल पड़ा — "मैं तीन सन्तरों को प्यार करता हूँ, मैं तीन सन्तरों को प्यार करता हूँ।"

अपने शाप को काम करते देख कर सन्तुष्ट होते हुए उसने राजकुमार की तरफ देखा और फिर अपना हाथ हिलाया जिससे उसका अपना राक्षस नौकर एक बहुत बड़ी धौंकनी[21] खिसकाता हुआ वहाँ ले आया।

उस धौंकनी से उसने एक बड़ा सा हवा का झोंका फेंका और उस झोंके से वह राजकुमार और वह हॅसोड़िया ट्रुफ़ालदीनो दोनों ही उस कमरे से बाहर जा पड़े – दूर कहीं बहुत दूर किसी दूसरे देश में।

राजकुमार और हॅसोड़िया दोनों ही अपने होश खो चुके थे और उनको यह भी नहीं पता था कि वे थे कहाँ। वे एक जलते हुए रेगिस्तान में पड़े थे।

[21] Translated for the words "A pair of bellows" – a pair of bellows is a device constructed to furnish a strong blast of air. The simplest type consists of a flexible bag comprising a pair of rigid boards ...

जब वे दोनों यह पता लगाने की कोशिश कर रहे थे कि उत्तर किधर है और दक्षिण किधर है, पूर्व किधर है और पश्चिम किधर है तभी वह चैलियो जादूगर वहाँ प्रगट हो गया।

जादूगर चैलियो राजकुमार और ट्रुफ़ालडीनो को यह बताने आया था कि वे इस शाप से कैसे आजाद हो सकते थे। चैलियो ने बताया कि जिन तीन सन्तरों के प्रेम में राजकुमार पड़ गया है वे तीनों सन्तरे एक किले में रखे हैं और वह किला एक रेगिस्तान के बीच में है।

एक डरावना राक्षस उन सन्तरों की रात दिन रखवाली करता है। यह राक्षस दुनियाँ के सबसे ज़्यादा लम्बे पेड़ से भी ज़्यादा लम्बा है और अफ्रीका के तीन हाथियों से भी ज़्यादा ताकतवर है।

यह राक्षस खाना बनाने के पीछे पागल है। अगर कोई अनजाने में भी उसके पास चला जाये तो वह रसोई के चाकू से उस आने वाले को बिना किसी वजह के खच खच कर के तुरन्त ही बहुत छोटे छोटे टुकड़ों मे काट देता है।

जब राजकुमार और ट्रुफ़ालदीनो ने उन सन्तरों की खोज में जाने का यह भयानक हाल सुना तो वे बहुत डर गये।

पर जादूगर चैलियो ने अपने कपड़ों की आस्तीन के अन्दर से जादू की एक छड़ी निकाली जिसके एक सिरे पर पाँच अलग अलग रंगों के रिबन लगे हुए थे। वे सारे रिबन एक घंटी के बजने पर हवा में नाच उठते थे जो उस जादू की छड़ी में लगी हुई थी।

जादूगर चैलियो ने उनको तसल्ली दी और कहा — “जब तक तुम इस जादू की छड़ी से उस राक्षस का ध्यान बॅटा सकते हो तब तक तुम लोगों को उन सन्तरों को लेने की चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।

और इस जादू की छड़ी से तुम उतनी देर तक उस राक्षस का ध्यान उन सन्तरों पर से हटा सकते हो जितनी देर में तुम उनको वहाँ से ले कर भाग सकते हो।”

फिर उसने उनको चेतावनी दी कि इस बात का ध्यान रखना कि अगर तुम उन सन्तरों को लेने में कामयाब हो जाओ तो उनको पानी के पास ही तोड़ना।

जादूगर चैलियो से वह जादू की छड़ी ले कर वे दोनों उस किले को ढूँढने चले। जल्दी ही उनको वह किला मिल गया। हिम्मत बटोरते हुए वे दोनों उस किले में दबे पाँव दाखिल हुए।

पाँच सात मिनट में ही उन्होंने उस राक्षस रसोइये को ढूँढ लिया। उनको देखते ही वह उन पर गरजा — “आहा, क्या ही बहादुर लोग आज मेरी रसोई में आये हैं। तुम लोग ठीक समय पर आये हो। मुझे अपना सूप बनाने के लिये बहुत अच्छा माँस चाहिये था। अब मैं तुम्हारे माँस से अपना सूप बनाऊँगा।”

राजकुमार ने जल्दी में तुरन्त ही जादू की वह छड़ी हिला दी। तुरन्त ही वह राक्षस उस छड़ी के हिलते हुए रिबनों और बजती हुई

घंटी से अपने होश खो बैठा और उस जादू की छड़ी की तरफ देखता ही रह गया।

ट्रुफ़ालडीनो तुरन्त ही उस राक्षस के पास से गुजरा और बिजली की सी तेज़ी से वहाँ रखे उसके तीनों सन्तरे उठा लिये और उनको अपनी जेब में डाल लिया।

सन्तरे अपनी जेब में डालने के बाद उसने राजकुमार की बाँह खींची और बोला — "चलो चलो, जल्दी चलो।" और फिर बिजली की सी तेज़ी से ही वे दोनों उस किले के बाहर निकल कर अपनी जान बचा कर भाग लिये।

जब वे अपने घर जाने वाले रास्ते पर आये तो अचानक ही उन सन्तरों में कुछ बदलाव आने लगा। वे सन्तरे साइज़ में बड़े होते जा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे कि वे ज़िन्दा हों।

कुछ ही देर में वे इतने बड़े हो गये कि वे ट्रुफ़ालदीनो की जेब से निकल कर सड़क पर नीचे लुढ़कने लगे। और अब वे इतने बड़े हो गये थे कि राजकुमार और ट्रुफ़ालदीनो दोनों को उन लुढ़कते हुए सन्तरों को पकड़ कर रखने में बड़ी ताकत लगानी पड़ रही थी।

सूरज की कड़ी धूप से नीचे रेगिस्तान की रेत बुरी तरह से जल रही थी। ट्रुफ़ालदीनो थकान और प्यास की वजह से उन सन्तरों को वहीं छोड़ने को तैयार था।

वह बोला — "चलो, इन सन्तरों को भूल जाओ। हम इनको यहीं छोड़े देते हैं।"

हालाँकि राजकुमार भी उतना ही थका और प्यासा था पर फिर भी वह उन सन्तरों को छोड़ने के लिये तैयार नहीं था क्योंकि उसके वे प्यारे सन्तरे छोड़ जाने के लायक थे ही नहीं।

वह तो जादूगरनी फ़ैटा मौरगैना के शाप के असर में था इसलिये वह उन सन्तरों को बहुत प्यार करता था।

वह थोड़ा रुक कर बोला — "हम इनको यहाँ इस तरह अकेले नहीं छोड़ सकते।"

फिर उसने एक पल के लिये कुछ सोचा और बोला ऐसा करते हैं कि हम थोड़ी देर के लिये यहाँ कहीं आराम कर लें फिर चलेंगे। ऐसा कह कर वह सन्तरों के साये में ही लेट गया और सो गया।

पर ट्रुफ़ालदीनो तो सारा पसीने से भीगा हुआ था। वह गुस्से से में बुड़बुड़ाया — "इस भट्टी में कोई कैसे सो सकता है? मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे मैं इस गर्मी में ज़िन्दा ही भुन रहा हूँ। मैं तो गर्मी में भुन भुन कर चमड़ा हो गया हूँ, पानी कहाँ से लाऊँ?"

यह कह कर उसने उन परेशान करने वाले सन्तरों की तरफ देखा तो एक अजीब सा विचार उसके मन में आया। और उस विचार के साथ ही वह हँस पड़ा जैसे उसने कोई बड़ा इनाम जीत लिया हो।

अपने विचार पर खुश हो कर उसने अपने आपसे कहा — "मैं बस एक सन्तरा खा लूँ। वही मुझे इस गर्मी और प्यास से बचाने के लिये काफी रहेगा।"

उस समय दरबार के उस हँसोड़िये की निगाहों में वे तीन बड़े और पके सन्तरे किसी शाही पकवान से कम नहीं थे।

वह धीरे से एक सबसे पास वाले सन्तरे के पास गया जिसके पीछे राजकुमार लेटा हुआ सो रहा था और उस सन्तरे को छीलना शुरू कर दिया।

पौप। उसका छिलका तो हाथ लगाते ही अपने आप फट गया और उसमें से रसीला गूदा नहीं बल्कि एक सुन्दर सी राजकुमारी बाहर निकल कर आ गयी और उस सन्तरे का छिलका जमीन पर चारों तरफ बिखर गया। वह राजकुमारी टुफ़ालदीनो की तरफ देख रही थी।

बाहर निकलते ही वह राजकुमारी बोली — "ओ भले आदमी, मेहरबानी कर के मुझे पानी दो वरना मैं प्यास से मर जाऊँगी।"

टुफ़ालदीनो जो कुछ अभी उसकी आँखों के सामने हुआ था उसको देखते हुए आश्चर्यचकित होता हुआ बोला — "मगर मेरे पास तो पानी नहीं है।"

सो उस राजकुमारी की प्यास बुझाने के लिये पानी पाने के लिये जल्दी में उसने दूसरा सन्तरा छील दिया।

पौप। पहले सन्तरे की तरह से इस सन्तरे का छिलका भी अपने आप ही फट गया और इसमें से भी एक राजकुमारी निकल आयी और इस सन्तरे का छिलका भी जमीन पर चारों तरफ बिखर गया।

इस राजकुमारी ने भी बाहर निकल कर कहा — "ओ भले आदमी, मेहरबानी कर के मुझे पानी दो वरना मैं प्यास से मर जाऊँगी।"

अब तो ट्रुफ़ालडीनो को इस बात का बिल्कुल भी अन्दाजा नहीं था कि वह इस मुसीबत से कैसे छुटकारा पाये। वह यह सोच ही रहा था कि वह क्या करे कि इतने में वे दोनों राजकुमारियाँ मर कर जमीन पर गिर पड़ीं।

वह हँसोड़िया ट्रुफ़ालदीनो रो पड़ा और चिल्लाया — "ओह मेरे भगवान, मेरी सहायता करो। यह सब कैसे हो गया? मुझे यह सब क्यों देखना पड़ा?

मैं तो एक सादा सा शाही हँसोड़िया हूँ जिसका काम लोगों को हँसाना है। मैं तो ऐसी मौत देखने के लिये पैदा नहीं हुआ था। और कोई दूसरा भी ऐसी चीज़ का सामना कैसे कर सकता था। मुझे यहाँ से चले जाना चाहिये और आज जो कुछ भी यहाँ हुआ है उसे भूल जाना चाहिये।"

और यह कह कर वह वहाँ से खोये हुए बच्चे की तरह रोता हुआ भाग लिया।

ट्रुफ़ालदीनो के रोने की आवाज सुन कर और जो कुछ भी उसके आस पास हो रहा था उसको महसूस कर के राजकुमार की आँख खुल गयी। उसने पूछा — "यह सब यहाँ क्या हो रहा है?"

और जैसे ही उसने दो मरी हुई राजकुमारियों को अपने से कुछ गजों की दूरी पर जमीन पर पड़े देखा तो वह तो बहुत ही डर गया।

वह अपने आपसे ही बोला — "हे भगवान। दो मरी हुई राजकुमारियाँ? किसी ने मुझे कभी सिखाया ही नहीं कि इस दशा में मुझे क्या करना चाहिये। अब यह राजकुमार क्या करे?"

डरे हुए और प्यासे राजकुमार ने तीसरे और आखिरी सन्तरे की तरफ देखा तो उसका रस पीने के लिये उसके मुँह से लार टपकने लगी।

आखिर जब उससे नहीं सहा गया तो वह अपने प्यारे सन्तरे को छीलने पर मजबूर हो गया। पौप। उस सन्तरे का छिलका भी अपने आप फट कर खुल गया और उसमें से एक तीसरी राजकुमारी बाहर निकल आयी।

बाहर निकल कर वह राजकुमारी बोली — "मेरा नाम निनैटा[22] है। मुझे थोड़ा पानी चाहिये।"

राजकुमारी को देख कर राजकुमार का दुखी चेहरा खुशी से खिल उठा। वह बोला — "तुम इतनी सुन्दर हो कि मैं तो तुमको देखते ही प्यार करने लगा हूँ। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

[22] Ninetta – name of the girl appearing from the orange

राजकुमारी बोली — "हाँ, मैं तुमसे शादी करूँगी पर मैं तुमसे इस पोशाक में शादी नही कर सकती। तुम पहले महल जाओ और मेरे लिये मेरे पहनने लायक कपड़े ले कर आओ।"

राजकुमार खुश हो कर बोला — "अच्छा तुम यहीं मेरा इन्तजार करो मैं तुम्हारे लिये शाही कपड़े ले कर अभी आता हूँ।" और यह कह कर वह अपने महल की तरफ भाग गया।

राजकुमार को जाये हुए अभी बहुत देर नहीं हुई थी कि रेगिस्तान की चिलचिलाती हुई धूप और उसकी गर्मी से वह सूखी हुई राजकुमारी धीरे धीरे सुकड़ने लगी जैसे किसी सन्तरे का रस निकल जाने के बाद सन्तरा निचुड़ा हुआ सा दिखायी देता है।

तभी अचानक एक जादू सा हुआ और उस जादू से हँसोड़ियों का एक समूह पानी से भरे हुए बर्तन और बालटियाँ लिये हुए उसको बचाने के लिये वहाँ प्रगट हो गया। वहाँ आ कर उन्होंने उसको पानी पिलाया।

उसे पानी पिला कर वे हँसोड़िये वहाँ से चले गये। लेकिन जैसे ही वे हँसोड़िये वहाँ से गये कि फ़ैटा मौरगैना ने दोबारा वहाँ आने का विचार किया और हवा के एक झोंके के साथ वह वहाँ आ पहुँची।

वह बोली — "हुँह, मुझे खुशी का अन्त[23] अच्छा नहीं लगता। राजकुमार को तो कपड़े मिल ही चुके हैं। वह और राजा और

[23] Translated for the words "Happy ending" or comedy.

उनका शाही जुलूस बस किसी समय भी आता ही होगा। तो मुझे कोई और तरीका सोचना पड़ेगा जिससे कि मैं उनकी खुशियाँ रोक सकूँ।"

और उसने अपना कोई बुरा जादू डालने के लिये कुछ बुड़बुड़ाना शुरू कर दिया। देखते देखते वह राजकुमारी एक चूहे में बदल गयी। फिर उसने अपने उसी नौकर राक्षस को राजकुमारी के कपड़े पहना दिये और उसको वहाँ खड़ा कर दिया।

जब महल से वह शाही जुलूस आया तो राजा जिसने असली राजकुमारी को पहले कभी देखा नहीं था उस जादूगरनी के जादू के धोखे में आ गया और फ़ैटा मौरगैना के नौकर राक्षस को ही वह राजकुमारी समझ बैठा जिसके लिये राजकुमार शाही कपड़े ले कर आया था।

पर राजकुमार जानता था कि वहाँ कुछ तो था जो गड़बड़ था। वह चिल्लाया — "नहीं नहीं, यह राजकुमारी मेरी राजकुमारी निनैटा नहीं है। यह इतनी बदसूरत कैसे हो गयी?"

यह सुन कर राजा बोला — "हूँ, ऐसा ही सही कि यह वह नहीं है जिसको मैं सुन्दर कहूँगा पर अब तो तुमको इसी से शादी करनी पड़ेगी क्योंकि एक राजकुमार को तो अपना वायदा निभाना ही चाहिये।"

और फिर वह उस जादूगरनी के उस नौकर राक्षस की तरफ घूमा और बोला — "प्रिय राजकुमारी, अगर तुम्हारी इच्छा हो तो तुम हमारे साथ आओ।"

बेचारे राजकुमार के पास कोई और चारा नहीं था सिवाय इसके कि वह अपने पिता और अपनी होने वाली पत्नी के पीछे पीछे महल वापस जाता। वह बहुत दुखी था और अपने लिये बहुत पछता रहा था।

सब लोगों के पहुँचते ही महल में राजकुमार की शादी की तैयारियाँ होने लगीं। पर जैसे ही राजा अपने सिंहासन पर बैठने को था कि ज़रा सोचो कि वहाँ उसके बैठने पहले उस सिंहासन पर क्या था? एक चूहा।

राजा चिल्लाया — "चूहा।"

जादूगर चैलियो ने उन सब लोगों को पीछे किया जिनकी चीखों की आवाज से सारा कमरा गूँज रहा था। वह जल्दी से उस चूहे को देखने के लिये उस चूहे के सामने आया।

उसने भी कुछ जादू के शब्द बड़बड़ाये और उसके जादू के असर से वह चूहा तो वहाँ से गायब हो गया और असली राजकुमारी निनैटा अपनी पूरी सुन्दरता के साथ वहाँ प्रगट हो गयी।

राजकुमार खुशी से चिल्ला पड़ा — "आखिर मुझे अपनी प्यारी राजकुमारी मिल ही गयी।"

आखिर में जादूगरनी फ़ैटा मौरगैना की चाल का सारा कच्चा चिट्ठा खुल गया। वह और उसका नौकर राक्षस महल से ही नहीं बल्कि राज्य से भी बाहर निकाल दिये गये।

राजा ने राजकुमार की राजकुमारी से शादी करते हुए खुश हो कर सन्तुष्ट होते हुए कहा — "बहुत अच्छे, मुझे तो खुशी का अन्त ही अच्छा लगता है।"

खुशी के उस हल्ले गुल्ले में नाटक देखने वालों के सामने पैन्टेलून फिर प्रगट हुआ और बोला — "चाहे आँसू खुशी के हों या गम के, हम सब आगे बढ़ते रहते हैं। एक अच्छे नाटक का ऐसा ही अन्त होना चाहिये जो एक दूसरे नाटक की शुरूआत को जन्म दे। सो विदा। हम फिर मिलेंगे।"

4 प्यार के तीन सन्तरे[24]

तीन सन्तरे जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के पुर्तगाल देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि पुर्तगाल के एक राजा को शिकार का बहुत शौक था। एक दिन वह शिकार खेलने जंगल में गया। वहाँ उसको एक बहुत दुखी बुढ़िया मिली। वह भूख से मरी जा रही थी।

उस राजकुमार के पास उसको देने के लिये उस समय पैसे तो नहीं थे पर उसके पास काफी सारा खाना था जो वह अपने महल से रास्ते में खाने के लिये लाया था।

उसने अपने नौकरों को बुलाया और उनको उस बुढ़िया को जो कुछ भी वह अपने साथ खाना ले कर आया था वह सब उसको देने के लिये कहा।

बुढ़िया ने खूब पेट भर कर खाया पिया और खाने पीने के बाद राजकुमार को बहुत धन्यवाद दिया। वह बोली कि वह उसको उसके बदले में कुछ और नहीं दे सकती थी क्योंकि उसके पास कुछ और था ही नहीं।

---

[24] The Three Citrons of Love – a folktale from Portugal, Europe. Adapted from the Web Site : https://www.surlalunefairytales.com/book.php?id=54&tale=1681

पर फिर भी उसके पास तीन सन्तरे थे जो उसने राजकुमार को दिये और उससे कहा कि वह किसी भी हालत में उनको न खोले और जब खोले तो किसी पानी की जगह के पास ही खोले और लम्बा लम्बा खोले, न कि चौड़ाई में।

राजकुमार ने उससे वे सन्तरे ले लिये उसको धन्यवाद दिया और फिर अपने रास्ते चल दिया।

कुछ दूर जाने पर राजकुमार को लगा कि उसको एक सन्तरा खोल कर देखना चाहिये कि उसमें क्या था। पर वह यह भूल गया कि उस बुढ़िया ने उसको वह सन्तरा पानी के पास खोलने के लिये कहा था।

जैसे ही उसने वह सन्तरा खोला उसमें एक बहुत सुन्दर लड़की निकली। सन्तरे में से निकलते ही उसने पीने के लिये पानी माँगा। उसने कहा कि अगर उसको पीने के लिये पानी नहीं मिला तो वह मर जायेगी।

अब राजकुमार के पास पानी तो था नहीं सो वह उसको पानी नहीं दे सका सो वह बेचारी लड़की मर गयी। राजकुमार को उसके मरने का बहुत दुख हुआ। पर क्योंकि उसके पास अभी दो सन्तरे और बचे थे इसलिये वह इस लड़की की मौत को झेल गया।

वह अपनी यात्रा पर और आगे बढ़ा। आगे चल कर उसने एक सन्तरा और खोला पर इस बार भी वह यह भूल गया कि उसको उसे पानी के पास खोलना था।

उसने जैसे ही दूसरा सन्तरा खोला उसमें से भी एक पहले से भी सुन्दर लड़की निकली। बाहर निकलते ही उसने भी राजकुमार से पानी माँगा पर राजकुमार के पास पहले की तरह से पानी नहीं था और इस तरह बिना पानी के पहले की तरह से वह लड़की भी मर गयी। अबकी बार राजकुमार को बहुत दुख हुआ।

पर वह फिर अपनी यात्रा पर आगे चल दिया। पर अबकी बार उसको तीसरा सन्तरा बिना पानी की जगह के खोलने की हिम्मत नहीं हुई कि कहीं ऐसा न हो कि इसमें से भी कोई लड़की निकले और वह भी बिना पानी के मर जाये।

पर उसको यह जानने की इच्छा बहुत ज़्यादा थी कि इस तीसरे सन्तरे में क्या हो सकता था सो उसने पानी ढूँढना शुरू किया ताकि उसके पास वह यह तीसरा सन्तरा खोल कर यह देख सके कि उसमें क्या था।

पानी मिलने पर उसने वह तीसरा सन्तरा खोल दिया। उसमें से भी एक लड़की निकली जो पहले वाली लड़कियों से कहीं ज़्यादा सुन्दर थी। उसने भी निकलते ही पानी माँगा। इस बार राजकुमार के पास पानी था सो उसने तुरन्त ही उसको पानी पिला दिया।

पर क्योंकि वह लड़की बहुत ही पतली और नाजुक सी थी राजकुमार उसको अपने साथ अपनी यात्रा पर आगे नहीं ले जा सकता था सो उसने महल लौटने का विचार किया।

उसने उससे पास के एक पेड़ पर चढ़ जाने के लिये कहा और खुद उसके लिये एक गाड़ी लाने चला गया। सो वह लड़की तो पेड़ पर चढ़ गयी और राजकुमार वहाँ से अपने महल चला गया।

कुछ देर बाद एक नीग्रो[25] स्त्री जो बहुत ही बदसूरत थी अपने मालिक के लिये वहाँ पानी भरने आयी। उसने पानी में झाँका। पानी बहुत साफ और शान्त था। उस पानी में उसको उस सुन्दर लड़की की परछाईं दिखायी दी जो पेड़ पर बैठी थी।

उसको लगा कि वह उसका खुद का चेहरा था सो वह कह उठी — "अरे तुम तो इतनी सुन्दर हो फिर तुम किसी का पानी क्यों भरती हो? तोड़ दो इस घड़े को।" और यह कह कर उसने उस घड़े को जमीन पर मार मार कर तोड़ दिया।

उधर पेड़ पर बैठी लड़की यह सब देख कर मुस्कुरा रही थी। केवल मुस्कुराना ही नहीं बल्कि वह तो ज़ोर से हँसना भी चाह रही थी पर कहीं वह नीग्रो स्त्री उसको सुन न ले और देख न ले इस

---

[25] Negro – African origin people are called Negro. Negro is a race. A Negro can be recognized easily by his or her curly hair and thick lips.

वजह से डर रही थी। पर फिर उससे रहा नहीं गया और वह ज़ोर से हँस पड़ी।

उसकी हँसी की आवाज सुन कर उस नीग्रो स्त्री ने चारों तरफ देखा कि कौन हँसा पर उसको कोई दिखायी नहीं दिया। काफी देर के बाद उसको पेड़ पर बैठी वह लड़की दिखायी दी।

उसको देख कर उसने कई तरह के इशारों से उसको पेड़ से नीचे आने के लिये कहा पर उस लड़की ने यह कहते हुए उसको नीचे आने से मना कर दिया कि वह वहाँ राजकुमार का इन्तजार कर रही थी और वह तब तक नीचे नहीं आ सकती थी जब तक राजकुमार न आ जाये।

पर उस नीग्रो स्त्री ने जो एक जादूगरनी भी थी उसको फिर से नीचे आने की जिद की — "आओ तुम नीचे आ जाओ ताकि मैं कम से कम तुम्हारा मुँह तो साफ कर दूँ।"

उसने इतनी जिद की कि उस लड़की को पेड़ से नीचे उतरना ही पड़ा। उसके नीचे उतरते ही उस स्त्री ने उसको पकड़ लिया और उसका मुँह और सिर धोने का बहाना करने लगी।

उसने उससे बहुत सारे सवाल भी पूछे। उस लड़की ने उसके सब सवालों के सही सही जवाब दे दिये।

जब उस जादूगरनी को सब कुछ मालूम चल गया जो वह जानना चाहती थी तो उसने अपने पास से एक पिन निकाली और उस लड़की के सिर में घुसा दी।

जैसे ही उसने वह पिन उसके सिर में घुसायी उसी समय वह लड़की एक फाख्ता बन गयी और उड़ गयी। उसके बाद वह नीग्रो स्त्री उस लड़की की जगह उस पेड़ पर जा कर बैठ गयी और राजकुमार का इन्तजार करने लगी। इस सबके जल्दी ही बाद राजकुमार भी वापस आ गया।

उसने पेड़ के ऊपर देखा तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह तो वहाँ एक बहुत सुन्दर लड़की छोड़ कर गया था और वहाँ तो यह नीग्रो स्त्री बैठी हुई है।

वह उस पर बहुत गुस्सा हुआ तो वह नीग्रो स्त्री रोने लगी और बोली कि किसी ने उसके ऊपर एक ऐसा जादू कर दिया है जिससे वह कभी तो सुन्दर हो जाती है और कभी ऐसी नीग्रो जैसी हो जाती है।

राजकुमार ने उसके ऊपर विश्वास कर लिया और उसको पेड़ से नीचे उतरने के लिये कहा। फिर उसके ऊपर दया कर के वह उसको घर ले आया।

अगले दिन वह सुबह सवेरे बहुत जल्दी उठा और अपने बागीचे में टहलने के लिये चला गया। कुछ देर बाद ही उसने एक सफेद फाख्ता देखी जो उसको बागीचे के माली से बात कर रही थी — "राजकुमार उस काली, बदसूरत और बुरी नीग्रो स्त्री के साथ कैसे अपने दिन गुजार रहे हैं?" और यह कह कर वह उड़ गयी।

माली ने उसको तो कोई जवाब नहीं दिया पर वह राजकुमार के पास पहुँचा और उससे यह सब कह कर उसके हाल चाल पूछे — "आप मुझसे उसे क्या जवाब दिलवाना चाहते हैं?"

राजकुमार बोला — "उसको कहना कि मैं ठीक हूँ और खुशी खुशी रह रहा हूँ।"

अगले दिन वह फाख्ता फिर वापस आयी और माली से बोली — "ओ मेरे बागीचे के माली, राजकुमार उस काली बदसूरत नीग्रो के साथ कैसे रह रहे हैं?"

माली ने कहा कि वह खुशी से रह रहे हैं और अच्छी ज़िन्दगी बिता रहे हैं।

इस पर वह फाख्ता बोली — "और मैं बेचारी दुनियाँ में बिना किसी काम के इधर उधर उड़ती फिर रही हूँ।" इस पर माली फिर से राजकुमार के पास गया और राजकुमार से जा कर वह कहा जो उस फाख्ता ने उससे कहा था।

तब राजकुमार ने माली को एक रिबन का जाल बिछाने के लिये कहा ताकि वह उस फाख्ता को उस जाल में फाँस कर पकड़ सके। क्योंकि वह उसको बहुत अच्छी लग गयी थी। माली ने उसको पकड़ने के लिये रिबन का जाल बिछाया।

अगले दिन वह फाख्ता फिर वहाँ आयी और उसने माली से फिर वही पूछा तो माली ने फिर वही जवाब दिया।

फिर उसने इधर उधर देखा तो खुद को फाँसने के लिये रिबन का जाल देख कर ज़ोर से हँसी और बोली — “यह रिबन का जाल मेरी टाँगों को फँसाने के लिये नहीं हो सकता।” और यह कह कर वह उड़ गयी।

माली फिर राजकुमार के पास गया और फाख्ता ने जो कहा था वह उससे जा कर कह दिया। अबकी बार राजकुमार ने उसको पकड़ने के लिये चाँदी के तारों का जाल बिछवाया। सो माली ने उसको पकड़ने के लिये इस बार चाँदी के तारों का जाल बिछाया।

अगले दिन वह फाख्ता फिर आयी और उसने माली से फिर वही कहा जो वह पहले से कहती चली आ रही थी और माली ने भी उसको वही जवाब दिया जो राजकुमार उससे कहलवाता चला आ रहा था।

फिर वह चाँदी के तारों का जाल देख कर बोली — “हा हा हा हा, यह चाँदी के तारों का जाल मुझे पकड़ने के लिये नहीं हो सकता।” और यह कह कर वह फिर उड़ गयी।

माली फिर राजकुमार के पास गया और उसको वह सब कुछ बताया जो फाख्ता ने उससे कहा था। इस बार राजकुमार ने उसको सोने के तारों का जाल बिछाने के लिये कहा। माली ने इस बार सोने के तारों का जाल बिछाया।

अगले दिन वह फाख्ता फिर आयी और उसने माली से फिर वही कहा जो वह पहले से कहती चली आ रही थी और माली ने भी

उसको वही जवाब दिया जो राजकुमार उससे कहलवाता चला आ रहा था।

फिर वह सोने के तारों का जाल देख कर बोली — "हा हा हा हा, यह सोने के तारों का जाल मुझे पकड़ने के लिये नहीं हो सकता।" और यह कह कर वह फिर उड़ गयी।

माली फिर राजकुमार के पास गया और उसको वह सब कुछ बताया जो फाख्ता ने उससे कहा था। इस बार राजकुमार ने उसको हीरों का जाल बिछाने के लिये कहा। माली ने इस बार हीरों का जाल बिछाया।

अगले दिन वह फाख्ता फिर आयी। पर अबकी बार उसने इधर उधर नहीं देखा और उस जाल में आ कर फँस गयी और बोली — "हॉ, यह जाल मुझे पकड़ने के लिये ठीक है।" और इस तरह उस फाख्ता ने अपने आपको उस जाल में फँस कर पकड़वा लिया।

माली उस फाख्ता को पकड़ कर राजकुमार के पास ले गया। जैसे ही उस नीग्रो स्त्री ने देखा कि उसकी वह फाख्ता पकड़ी गयी वह राजकुमार से बोली कि वह अपने आपको बहुत बीमार महसूस कर रही थी और उस बीमारी को ठीक करने के लिये उसको फाख्ता का सूप चाहिये।

यह सुन कर राजकुमार ने कहा कि यह फाख्ता मारे जाने के लिये नहीं थी और वह उस फाख्ता को प्यार से सहलाने लगा। उसने उसके सिर पर हाथ फेरा तो उसको लगा कि उसके सिर में तो

एक पिन घुसी हुई थी। उसने उस पिन को तुरन्त ही खींच कर बाहर निकाल दिया।

पिन के बाहर निकलते ही वह फाख्ता फिर से एक सुन्दर लड़की में बदल गयी और उसी शक्ल में आ गयी जिस शक्ल में राजकुमार उसको पेड़ पर चढ़ा कर गया था। उसको अचानक अपने सामने देख कर राजकुमार को बड़ा आश्चर्य हुआ।

तब उसने राजकुमार को वह सब बताया जो उस नीग्रो स्त्री ने उसके साथ किया था। यह सुनते ही राजकुमार ने उस नीग्रो स्त्री को मरवाने का हुक्म दे दिया।

मरने के बाद उस नीग्रो स्त्री की खाल का एक ढोल बनवा दिया गया और उसकी हड्डियों की सीढ़ियाँ बनवा दी गयीं जिनसे हो कर उसकी रानी अपने पलंग पर चढ़ती थी।

उसने उस लड़की से शादी कर ली और वे दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

5 तीन सुनहरे सन्तरे[26]

तीन सन्तरे जैसी यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के स्पेन देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

डूबता हुआ सूरज अपना सुनहरा साया एक सादे से कलई किये गये मकान पर पड़ रहा था कि उस समय तीन भाई सैनटियागो, टोमस और मैटियास[27] खेतों से अपने घर की तरफ लौट रहे थे।

दोनों बड़े भाई आगे आगे जल्दी जल्दी चल रहे थे क्योंकि उनके पास ले जाने के लिये कोई बोझा नहीं था और उनका छोटा भाई उनके पीछे धीरे धीरे चल रहा था क्योंकि उसके कन्धे पर गेंहू की बालियाँ रखी हुई थीं।

जब वे तीनों घर पहुँचे तो उनकी माँ सैरा ने कहा — "बैठ जाओ बेटे और थोड़ा आराम कर लो। मैं तुम तीनों से कुछ बात करना चाहती हूँ।"

---

[26] The Three Golden Oranges – a folktale from Spain, Europe. Adapted from the book : "The Three Golden Oranges", by Almaflor Ada. NY, Atheneum Books for Young Readers. 1999. unnumbered 30 pages. A 1-story picture book.
its author writes – "As it has been said in Spanish "Colorin coloradoeste cuento se ha acabado" – this story entered by a silver path and exited through a golden road". His story of popular Blancaflor, the youngest of the three sisters, who is bewitched and held prisoner inside an orange, has taken many forms over the time. In some versions Blancaflor is held by her own father for defying him, but her transformation into a dove and the presence of a straight pin in her hand. That is the key to disenchant. Matias removes it.

[27] Santiago, Tomas and Matias – names of the three brothers

जब वे थोड़ी देर आराम कर चुके तो वह बोली — "मैं अब दादी बनना चाहती हूँ। इसलिये मैंने तय कर लिया है कि अब समय आ गया है जबकि तुम्हारे लिये लड़कियाँ ढूँढी जायें ताकि तुम लोग अपना परिवार शुरू कर सको। इसलिये तुम लोग अपने लिये तुरन्त ही लड़कियाँ ढूँढना शुरू कर दो।"

तीनों भाइयों ने कुछ सोचते हुए एक दूसरे की तरफ देखा। वे जानते थे कि सारी घाटी में जो पहाड़ों से ले कर समुद्र तक फैली हुई थी एक भी लड़की ऐसी नहीं थी जिसकी शादी न हुई हो।

जब वे अगले दिन खेतों पर गये तब भी यह मामला उनके दिमाग में घूम रहा था। मैटियास बोला — "क्यों न हम चल कर उस बुढ़िया से पूछें जो समुद्र के किनारे वाली पहाड़ी पर रहती है।"

मैटियास के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसके भाई उसकी कही बात पर राजी हो गये क्योंकि वे तो कभी उसकी बात सुनते भी नहीं थे।

तीनों भाई उस पहाड़ी पर जाने वाले तंग रास्ते पर चढ़ते चले गये जहाँ से समुद्र दिखायी देता था। वह बुढ़िया अपनी गुफा के सामने जहाँ वह रहती थी बैठी बैठी ऊन कात रही थी।

उसने अपना काम जारी रखते हुए उन भाइयों से पूछा — "कैसे आये हो?"

मैटियास ने सादे और नम्र तरीके से उसको बताया — "हम शादी करना चाहते हैं और इस बारे में हम आपसे सलाह लेने आये हैं।"

बुढ़िया ने पूछा — "और तुमको कैसी पत्नियाँ चाहिये?"

सैनटियागो तुरन्त बोला — "मुझको बहुत सुन्दर लड़की चाहिये।"

टोमस भी तुरन्त बोला — "मुझे ऐसी लड़की चाहिये जो अमीर हो और सुन्दर हो।"

बुढ़िया ने देखा कि मैटियास कुछ नहीं बोला तो उसने उसकी तरफ मुँह कर के पूछा — "और तुम्हें?"

मैटियास बोला — "मुझे तो एक ऐसी जवान लड़की चाहिये जो दयालु हो, खुशमिजाज हो और ऐसी हो जिसको मैं बहुत प्यार कर सकूँ।"

बुढ़िया जवाब में बोली — "तुममें से हर एक को तुम्हारी पसन्द की लड़की मिल जायेगी पर तुम लोगों को इसके लिये एक साथ काम करना पड़ेगा।"

फिर वह एक नंगी ढालू जमीन जिसकी चोटी बादलों में छिपी हुई थी की तरफ इशारा करते हुए बोली — "तीन दिन तक तुम लोग उस पहाड़ी की तरफ जाओगे। उस पहाड़ी के दूसरी तरफ एक किला है जो सन्तरे के बाग से घिरा हुआ है।

उसमें सारे सन्तरे अभी हरे होंगे पर उनमें से एक पेड़ पर केवल एक शाख पर तुमको तीन सुनहरे सन्तरे लटके दिखायी देंगे।

वे तीनों सन्तरे तुम शाख को बिना कोई नुकसान पहुँचाये तोड़ लेना और तोड़ कर उनको मेरे पास ले आना तो तुमको अपनी अपनी पसन्द की पत्नियाँ मिल जायेंगी। पर याद रखना अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो पछताओगे।"

तीनों भाई अगले दिन के सफर की तैयारी करने के लिये जल्दी ही घर लौट आये। अगले दिन उन सबने अपनी अपनी जेबें गिरियों, खजूरों और डबल रोटियों[28] से भरीं और अपने सफर पर चल दिये।

वे सारे दिन चले। जब रात हुई तो रात काटने के लिये वे एक अनाज रखने वाली जगह में रुक गये। वहाँ वे एक भूसे का बिस्तर बना कर सो गये।

पर थोड़ी ही देर में सैनटियागो चाँद की एक किरन के अन्दर आने से जाग गया। वह किरन उस अनाजघर के दरबाजे से हो कर अनाजघर में आ रही थी।

[28] Nuts (see their picture above), dates and bread

उसने अपने आपसे पूछा — "मैं यहाँ अपने भाइयों के साथ अपना समय क्यों बर्बाद कर रहा हूँ? जब हमको सन्तरे मिलेंगे तो शायद हम लोग उनमें से सबसे अच्छा सन्तरा लेने के लिये लड़ें।

अगर मैं वहाँ सबसे पहले पहुँच जाता हूँ तो मैं उनमें से जो भी मुझे सबसे अच्छा सन्तरा लगेगा मैं वह सन्तरा ले लूँगा। फिर मेरे भाई लोग उन दो सन्तरों के ऊपर लड़ते रहें।"

यह सोच कर सैनटियागो उठा और सारी रात चलता रहा। तीसरे दिन सुबह सवेरे ही वह किले पर आ गया। तब तक सूरज की किरनें भी उस सन्तरे को बाग पर नहीं पड़ी थीं।

सन्तरे के सफेद फूल सुबह की रोशनी में चमक रहे थे। और जैसा उस बूढी स्त्री ने कहा था सारे सन्तरे अभी भी हरे थे।

सैनटियागो उन सुनहरे सन्तरों की खोज में लग गया। तभी एक पेड़ की सुनहरी चमक ने उसका ध्यान खींचा जो किले के दरवाजे के पास लगा था।

वे तीनों सन्तरे पेड़ की सबसे ऊँची शाख पर असली सोने के सन्तरों की तरह चमक रहे थे। यह शाख बहुत ऊँची थी वह उस शाख तक नहीं पहुँच सकता था पर वह उनको छोड़ने वाला भी नहीं था।

उसने पेड़ को पकड़ा और यह देखने की कोशिश की कि वह उसको हिला कर वे सन्तरे तोड़ सकता था कि नहीं। पर उसके

आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि उसका तो हाथ ही उस पेड़ के तने से चिपक गया। वह तो वहाँ फँस गया था।

उसी समय किले में से निकल कर एक बूढ़ा बहुत सारे चौकीदारों के साथ वहाँ आया। उसने अपनी जादू की छड़ी उस पेड़ से धीरे से छुआई और सैनटियागो को पेड़ से छुड़ा दिया। पर फिर उसको तुरन्त ही उन चौकीदारों ने पकड़ लिया और एक तहखाने में डाल दिया।

उस तहखाने से सैनटियागो ने सुना कि वह बूढ़ा अपने आपसे रो रो कर कह रहा था — "ओ मेरी प्यारी पत्नी, मेरी कीमती बेटियाँ। तुम कब तक इस तरह से कैद रहोगी?"

उधर अगले दिन टोमस और मैटियास सो कर उठे तो उन्होंने देखा कि सैनटियागो तो उनको धोखा दे कर भाग गया था। वे उठ कर अपने सफर पर चल दिये। उस दिन शाम को रात को ठहरने के लिये उनको पहाड़ी के एक तरफ एक गुफा मिली सो वे लोग वहीं ठहर गये।

जब मैटियास सो गया तो टोमस दबे पाँव उठा और यह सोच कर वहाँ से चल दिया — "सैनटियागो तो पहले ही चला गया है पर मैं उसको पकड़ लूँगा। मैं इस बेवकूफ मैटियास को यहीं छोड़ जाऊँगा फिर यह जो चाहे करे।"

तीसरे दिन दोपहर को टोमस किले पर पहुँच गया पर उसको सैनटियागो वहाँ कहीं नहीं दिखायी दिया। टोमस को वहाँ की सन्तरों की खुशबू बहुत ही अच्छी लगी।

उसने भी देखा कि जैसा कि उस बुढ़िया ने कहा था अभी सारे सन्तरे कच्चे थे। तभी उसकी निगाह किले के दरवाजे के पास लगे एक पेड़ पर पड़ी जिससे रोशनी निकल कर आ रही थी। वह उधर ही खिंचा चला गया।

वहाँ जा कर उसने देखा कि वह रोशनी तो उस पेड़ पर लगे तीन सुनहरी सन्तरों में से आ रही थी। उन सुनहरे सन्तरों को देख कर तो वह पागल सा हो गया और पेड़ की तरफ लपका। जैसे ही वह पेड़ पर चढ़ने के लिये पेड़ से लिपटा उसका सारा शरीर पेड़ से चिपक गया और वह तो हिल भी नहीं सका।

कुछ पल बाद ही वह पहले वाला बूढ़ा फिर वहाँ अपने चौकीदारों के साथ आया और अपनी जादू की छड़ी टोमस के शरीर से छुआ कर उसको पेड़ पर से छुड़ा लिया।

उसके चौकीदारों ने उसको भी ले जा कर उसी तहखाने में डाल दिया जहाँ उसका बड़ा भाई सैनटियागो पड़ा हुआ था।

इस बार दोनों ने उस बूढ़े को रोते हुए सुना — "ओ मेरी पत्नी, ओ मेरी कीमती बेटियों। एक भयानक जादूगर ने तुमको इस तरह कैद कर रखा है। कब आजाद होगी तुम?"

उधर अगले दिन जब मैटियास सो कर उठा तो उसने देखा कि टोमस भी उसको छोड़ कर भाग गया है। उसने सोचा कि अब उसको जल्दी करनी चाहिये क्योंकि उस समुद्र के किनारे वाली बुढ़िया ने कहा था कि सबको साथ साथ रहना।

फिर भी किले पर पहुँचते पहुँचते उसको तीसरे दिन का तीसरा पहर हो गया। उसको भी सन्तरों के फूलों की खुशबू आयी तो उनका पीछा करते करते वह भी उन सुनहरे सन्तरों के पेड़ के सामने आ पहुँचा।

उसने सोचा कि उसको वे सन्तरे जल्दी से तोड़ लेने चाहिये और फिर उसको अपने भाइयों को ढूँढना चाहिये। वह सन्तरे तोड़ने के लिये उछला और उछल कर वह शाख पकड़ ली जिस पर सन्तरे लगे हुए थे।

उसके पकड़ने से वह शाख टूट गयी और पेड़ चिल्ला उठा। उस पेड़ के चिल्लाते ही वह बूढ़ा आदमी अपने कई चौकीदारों के साथ एक बार फिर से बाहर आ गया।

वह बूढ़ा आदमी बोला — "तुमने तो सन्तरे पहले ही तोड़ लिये इसलिये अब मैं तुमको गिरफ्तार नहीं कर सकता।"

मैटियास ने पूछा — "मेरे भाई कहाँ हैं?"

बूढ़ा आदमी बोला — "ये सन्तरे सारे दरवाजे खोल देंगे। तुम केवल डबल रोटी और पानी ले लो और कुछ नहीं। और हाँ देखो

इन सन्तरों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाना नहीं तो वे सारे दरवाजे बन्द हो जायेंगे।"

मैटियास किले की तरफ दौड़ा तो उस बूढ़े के कहे अनुसार किले के लोहे के भारी दरवाजे उसके आगे आगे अपने आप खुलते चलते गये।

किले के अन्दर किले की ऊँची ऊँची दीवारें बढ़िया परदों से ढकी हुई थीं। मैटियास का ध्यान एक खास परदे की तरफ गया जिसमें एक नौजवान लड़की एक घाटी में एक सन्तरे के बागीचे में खड़ी थी।

हालाँकि उसका मन वहाँ से हटने के लिये नहीं कर रहा था पर फिर भी वह अपने भाइयों की खोज जारी रखने के लिये वहाँ से आगे बढ़ा। आखिर उसने उनको पा ही लिया। उस तहखाने का दरवाजा जिसमें उसके भाई कैद थे अपने आप ही खुल गया था।

सैनटियागो और टोमस दोनों उसके सामने गिड़गिड़ाये — "तुमको अकेला छोड़ने के लिये हमें माफ कर दो।"

मैटियास बोला — "अब इन सब बातों का कोई मतलब नहीं है। अब तो बस हमें इन सन्तरों को समुद्र के पास रहने वाली उस बुढ़िया के पास ले कर जल्दी ही पहुँचना चाहिये।"

सो सैनटियागो और टोमस उस किले की शान से प्रभावित होते हुए बेमन से मैटियास के पीछे पीछे हो लिये।

मैटियास बोला — "हमको किसी चीज़ को छूना नहीं है। सफर के लिये केवल डबल रोटी और पानी ले लो।"

पर जब वे मैटियास के पीछे पीछे किले के बाहर जा रहे थे तो उन्होंने अपनी जेबें जो भी सोने और चाँदी की चीज़ें उनके हाथ लगीं उनसे भर लीं।

मैटियास जल्दी जल्दी बिना खाने और पीने के लिये रुके चला जा रहा था। हालाँकि सूरज बहुत गर्म था पर सन्तरे ताजा ही रहे।

पर इससे पहले कि वे किले से बहुत दूर पहुँचें मैटियास के दोनों भाइयों ने अपनी डबल रोटी पहले ही खा ली थी और अपना सारा पानी खत्म कर लिया था। उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि सफर के अभी दो दिन और बचे हैं।

वह रात तीनों भाइयों ने एक चरवाहे की झोंपड़ी में बिताने का निश्चय किया पर सैनटियागो को रात भर नींद नहीं आयी।

वह इस बात से बहुत दुखी था कि उसका सबसे छोटा भाई वे सन्तरे ले कर जा रहा था जबकि वह सबसे बड़ा था और वह इस काम को नहीं कर सका।

सो आधी रात को वह उठा और अपने छोटे भाई के हाथ में लगी सन्तरों की शाख में से सबसे बड़ा सन्तरा तोड़ा और अपने सफर पर चल दिया।

सैनटियागो सारी रात चला और फिर अगली सारी सुबह चला। जल्दी ही सूरज ज़ोर से चमकने लगा और सैनटियागे को प्यास लग आयी। उसको लगा कि वह तो प्यास के मारे मर ही जायेगा।

जब वह प्यास और नहीं सह सका तो उसने वह रसीला सन्तरा खाने का निश्चय किया। पर जब उसने सन्तरे को बीच में से फाड़ा तो उसमें से एक बहुत ही सुन्दर जवान लड़की निकल पड़ी।

सन्तरे में से निकलते ही उसने उससे डबल रोटी माँगी।

सैनटियागो केवल यही कह सका — "डबल रोटी तो मेरे पास नहीं है वह तो मैंने सारी खा ली।" फिर उसने उससे थोड़ा सा पानी माँगा।

वह फिर बोला — "मैंने तो पानी भी सारा पी लिया।"

"तो मैं अपने सन्तरे में वापस जाती हूँ और फिर अपने पेड़ में।"

यह कह कर वह लड़की उसी सन्तरे में गायब हो गयी और फिर सन्तरा भी उसके हाथ से निकल कर गायब हो गया।

उसके जाने के बाद बाद वह धूल के एक तेज़ तूफान में फँस गया। अचानक उसके चारों तरफ किले की दीवारें खड़ी हो गयीं।

उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा था। इतने में ही वे चौकीदार फिर से आ गये और उन्होंने उसको फिर से पकड़ कर उसी तहखाने में डाल दिया।

इस बीच टोमस सुबह उठा। जब उसने देखा कि सैनटियागो एक सन्तरा ले कर वहाँ से गायब है तो उसने भी अपने बड़े भाई की देखा देखी वही करने की सोची।

उसने भी बचे हुए दो सन्तरों में से बड़ा वाला सन्तरा शाख पर से तोड़ा और वहाँ से चल दिया। मैटियास आराम से सोता रहा।

टोमस को भी पथरीला रास्ता और खूब गर्म सूरज मिला। जब उससे भी वह गर्मी नहीं सही गयी तो उसने भी मरने की बजाय सन्तरा खाना ज़्यादा अच्छा समझा।

जब उसने सन्तरा छीलना शुरू किया वह भी आश्चर्यचकित रह गया जब अचानक ही उसके सामने एक बहुत ही सुन्दर लड़की उसमें से निकल कर खड़ी हो गयी।

इतनी सुन्दर लड़की तो उसने पहले कभी देखी नहीं थी। उसके कीमती जवाहरातों और कपड़ों से लग रहा था कि वह बहुत अमीर थी।

निकलते ही उस लड़की ने उससे कहा — "मेहरबानी कर के मुझे थोड़ी डबल रोटी दो।"

टोमस तो बस इतना ही बोल सका — "मेरे पास तो कोई डबल रोटी नहीं है। मैंने तो अपनी सारी डबल रोटी खा ली।"

वह लड़की फिर बोली — "तो फिर थोड़ा सा पानी ही दे दो।"

वह दुखी हो कर बोला — "मेरे पास तो वह भी नहीं है। मैंने तो वह भी सारा पी लिया।"

वह लड़की बोली — "तब मैं पहले अपने सन्तरे में और फिर अपने पेड़ में वापस जाती हूँ।" यह कह कर वह उस सन्तरे में गायब हो गयी और सन्तरा वापस पेड़ पर चला गया।

उसके गायब हो जाने के बाद टोमस ने भी अपने आपको धूल के तूफान में घिरा पाया। उसके चारों तरफ भी किले की दीवार खड़ी हो गयीं और वे चौकीदार उसको भी पकड़ कर उसी तहखाने में डाल आये जहाँ सैनटियागो पड़ा हुआ था।

जब मैटियास सुबह जागा तो उसने देखा कि उसकी शाख पर अब केवल एक ही सन्तरा रह गया है। वह अपने भाइयों के लिये बहुत दुखी हुआ। उसने सोचा कितने जल्दबाज हैं वे लोग।

डबल रोटी और पानी जो उसने बचा कर रखा था उसके सहारे मैटियास वह गर्म सूखी घाटी पार कर गया। शाम तक वह समुद्र के पास और फिर उस बूढ़ी स्त्री की गुफा तक पहुँच गया।

वह बूढ़ी स्त्री बोली — "मैं देख रही हूँ कि तुम तो पूरी शाख की शाख ही तोड़ लाये हो और तुमने तीनों सन्तरों को अलग अलग कर दिया है।

क्योंकि तुमने मेरा कहा नहीं माना इसलिये इससे जो आफत आने वाली है उससे मैं तुममें से किसी को नहीं बचा पाऊँगी।"

मैटियास ने पूछा — "पर मेरी पत्नी का क्या होगा? और मेरे भाई?"

वह बूढ़ी स्त्री बोली — “अभी सब कुछ खत्म नहीं हुआ है। तुम अपने घर वापस जाओ और अपने खेतों पर जाओ। इन्तजार करो और हमेशा अपने दिल की सुनो।” इतना कह कर वह अपनी गुफा में चली गयी।

मैटियास दुखी हो कर अपने घर लौट आया और अपनी माँ को आ कर उसने अपने सफर का हाल और अपनी मुसीबतों के बारे में बताया। हालाँकि सैरा अपने बड़े बेटों के गायब हो जाने के बारे में सुन कर बहुत दुखी हुई पर वह मैटियास को वापस आया देख कर खुश भी थी।

हर सुबह जब मैटियास खेतों पर चला जाता तो एक सफेद फाख्ता आ कर सैरा के कन्धे पर बैठ जाती जैसे वह उसको तसल्ली दे रही हो। जब सैरा अपने घर का काम करती रहती तो वह फाख्ता उसके साथ सारा दिन रहती। इससे सैरा को ऐसा लगता कि सब कुछ ठीक हो जायेगा।

एक सुबह जब गर्मियाँ खत्म हो रही थीं तो मैटियास खेत छोड़ कर जल्दी ही घर आ गया और माँ से बोला — “माँ मैं एक बार फिर से उस किले पर जाना चाहता हूँ जहाँ में पहले गया था। मैं जा कर देखता हूँ कि मैं अपने बड़े भाइयों को वहाँ फिर से पा सकता हूँ या नहीं।” फिर उसकी निगाह उस फाख्ता पर जा कर ठहर गयी जो उसकी माँ के कन्धे पर बैठी हुई थी।

उसने माँ से पूछा — “माँ यह फाख्ता कहाँ से आयी?”

मॉ बोली — "यह तो मेरे पास रोज आती है और जब तुम खेतों पर होते हो तो यह सारा दिन मेरे साथ ही रहती है। मैं इसको ब्लैनक्विटा[29] कह कर पुकारती हूँ।"

मैटियास ने अपना हाथ बढ़ाया तो वह फाख्ता उसके हाथ पर आ कर बैठ गयी। वह उसके ऊपर प्यार से हाथ फेरने लगा तो उसने उसकी गरदन में एक कॉटा सा चुभा हुआ महसूस किया।

उसने वह कॉटा बड़ी सावधानी से खींच कर निकाल दिया तो वह फाख्ता तो एक लड़की बन गयी।

वह लड़की बोली — "मेरा नाम ब्लैन्काफ्लोर[30] है" हम लोगों को यहॉ से तुरन्त ही चलना चाहिये। हमारे पास समय नहीं है। मैं खुद तुम्हारे साथ उस किले तक चलूँगी।"

सो वे दोनों किले की तरफ चल दिये। इस बार वहॉ तक का सफर मैटियास को बहुत छोटा लगा।

जब वे दोनों किले की तरफ जा रहे थे तो ब्लैन्काफ्लोर ने मैटियास को बताया कि कैसे उसकी दो बहिनें और मॉ और वह खुद भी एक नीच जादूगर के शाप में जकड़ी हुई थीं क्योंकि उसके पिता ने अपनी किसी भी लड़की की शादी उससे करने से मना कर दिया था।

---

[29] Blanquita – name of the dove

[30] Blancaflor – name of the princess

वह लड़की आगे बोली — "यह तो स्त्री का अधिकार है न कि वह किसी से भी शादी करे जिससे उसका मन करे। क्या तुम ऐसा नहीं सोचते?"

मैटियास की समझ में नहीं आया कि वह उसको उसकी इस बात का क्या जवाब दे जो वह उसको चुन ले।

जब वे उस सन्तरे के बाग में पहुँच गये तो उन्होंने देखा कि बाग के सारे सन्तरे पक गये हैं पर ब्लैन्काफ्लोर मैटियास को सीधे उसी पेड़ के पास ले गयी जिस पेड़ की शाख वह पहले तोड़ कर लाया था। वहाँ अब दो सन्तरे लटके हुए थे।

मैटियास ने ब्लैन्काफ्लोर को ऊपर उठाया ताकि वह उस शाख तक पहुँच सके। ब्लैन्काफ्लोर ने सावधानी से वे दोनों सन्तरे तोड़ लिये और उनको घास पर रख दिया।

जैसे ही उसने उनको घास पर रखा वे दोनों दो लड़कियों में बदल गये। ये दोनों लड़कियाँ ब्लैन्काफ्लोर की बहिनें थीं। उसी समय वह बूढ़ा भी किले में से बाहर आ गया और अपनी तीनों बेटियों को देख कर बहुत खुश हुआ।

इतने में वह पेड़ भी हिला और सबकी आँखों के सामने देखते देखते वह एक स्त्री बन गया। तीनों बहिनें चिल्लायीं "माँ"।

उस बूढ़े आदमी ने भी अपनी पत्नी को गले से लगाया और अपनी बेटियों को उनके दोनों गालों पर चूमा।

ब्लैन्काफ्लोर बोली — "मेरे माता पिता से मिलो और मेरी बहिनों से – ज़ैनाइडा और ज़ोराइडा[31]।"

मैटियास बोला — "अब मुझे अपने भाइयों को ढूँढना है।"

बूढ़े ने किले के दरवाजे की तरफ इशारा करते हुए कहा — "अब किले के सारे दरवाजे खुले हैं तुम अन्दर जा सकते हो।"

मैटियास ने देखा कि उसके भाई सैनटियागो और टोमस दोनों उस किले के दरवाजे में से बाहर चले आ रहे हैं।

मैटियास और ब्लैन्काफ्लोर दोनों ने दोनों भाइयों को नमस्ते की पर जब सैनटियागो ने ज़ैनाइडा से पूछा कि क्या वह उससे शादी करेगी तो उसने जवाब दिया — "एक बेवकूफ बेकार के आदमी से शादी करने की बजाय तो मैं अकेला रहना ज़्यादा पसन्द करूँगी।"

और जब टोमस ने ज़ोराइडा से पूछा कि क्या वह उससे शादी करेगी तो उसने भी यही कहा — "मैं किसी बेवकूफ लालची आदमी से शादी करने की बजाय अकेला रहना ज़्यादा पसन्द करूँगी।" इसलिये महल में केवल एक ही शादी हुई।

शादी के बाद मैटियास और ब्लैन्काफ्लोर दोनों अपने उस सफेद

घर को लौट आये जो समुद्र के पास ही था। जहाँ की खिड़कियों के पत्थरों पर उन्होंने जिरेनियम के फूलों से भरे गमले रखे और सैरा का दिल खुशियों से भर दिया।

[31] Zenaida and Zoraida – names of the two elder sisters out of the three daughters of the King

किसी को नहीं पता कि सैनटियागो और टोमस का क्या हुआ पर अगर हमें उनके बारे में कुछ भी पता चला तो हम तुम लोगों को उनके बारे में जरूर बतायेंगे।

6 जिप्सी रानी[32]

तीन सन्तरे जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये उत्तरी अमेरिका के मैक्सिको देश[33] की लोक कथाओं से ली है।

बहुत दिन पहले की बात है कि मैक्सिको में एक राजा रहता था। उसका एक बेटा था।

यह राजकुमार जब शादी के लायक हुआ तो उसने अपने माता पिता से कहा कि वह दुनियाँ की सबसे सुन्दर लड़की से शादी करना चाहता है इसलिये उसको ढूँढने को लिये वह दुनियाँ घूमने जा रहा है।

सो वह राजकुमार राजमहल छोड़ कर दुनियाँ घूमने चल दिया और चलते चलते एक फव्वारे के पास आ पहुँचा। वहाँ वह पानी पीने के लिये रुका।

जैसे ही वह पानी पीने के लिये झुका तो उसको उस पानी में तीन सन्तरों की परछाई दिखायी दी तो उसने ऊपर की तरफ देखा। उसने देखा कि एक पेड़ की डाली पर तीन सन्तरे लगे हुए थे।

---

[32] The Gypsy Queen (La Reina Mora) – a folktale from Mexico, Central America.
Translated from http://www.g-world.org/magictales/reina.html
Adopted, retold and written by Srita. Angela Ruiz
See also "The Three Citrons," Day V, tale 9. RS Boggs has edited a small collection of Spanish tales in the book "Three Golden Oranges? Tale I is a variation of "La Reina Mora". Boggs, in his Index of Spanish Folktales, also refers to other variants on pp. 54, 55, 57, and 58..]

[33] Mexico – a country just South of the USA.

राजकुमार ने सोचा ये सन्तरे कितने मीठे और रसीले दिखायी देते हैं मैं इनको तोड़ लेता हूँ सो वह उस पेड़ पर चढ़ गया और उसने वे तीनों सन्तरे तोड़ लिये।

उसने पहले एक सन्तरा छीला और तोड़ा तो उसमें से एक बहुत सुन्दर लड़की निकली। निकलते ही वह राजकुमार से बोली मुझे रोटी चाहिये।

राजकुमार बोला — "मैं तुमको रोटी नहीं दे सकता क्योंकि मेरे पास रोटी है ही नहीं।"

वह लड़की बोली — "तो मैं अपने सन्तरे में वापस जाती हूँ।" कह कर वह लड़की उस सन्तरे में वापस चली गयी और वह सन्तरा फिर से साबुत हो गया।

राजकुमार ने दूसरा सन्तरा छील कर तोड़ा तो उसमें से भी एक लड़की निकली जो पहली लड़की से भी ज़्यादा सुन्दर थी। उसने भी सन्तरे में से निकल कर रोटी माँगी तो राजकुमार बोला — "मैं तुमको रोटी नहीं दे सकता क्योंकि मेरे पास रोटी है ही नहीं।"

वह लड़की बोली — "तो मैं अपने सन्तरे में वापस जाती हूँ।" कह कर वह लड़की भी उस सन्तरे में वापस चली गयी और वह सन्तरा भी फिर से साबुत हो गया।

अब उस राजकुमार की समझ में कुछ कुछ आया तो उसने सोचा कि तीसरा सन्तरा तोड़ने से पहले उसको कहीं से रोटी ले लेनी चाहिये ताकि ऐसा न हो कि तीसरे सन्तरे में से निकल कर वह

लड़की भी रोटी माँगे और रोटी न मिलने की वजह से वह भी सन्तरे में गायब हो जाये।

वह राजकुमार अभी यह सब सोच ही रहा था कि वहाँ से एक जिप्सी गाड़ी में बैठा गुजर रहा था। उसको देख कर वह राजकुमार चिल्लाया — "नमस्ते। मुझे एक रोटी दे दो मैं तुमको उसके लिये एक सोने का सिक्का दूँगा।"

उस जिप्सी ने जल्दी से अपनी गाड़ी से उतर कर राजकुमार को रोटी दे दी। अब राजकुमार ने खुशी से सन्तुष्ट होते हुए तीसरा सन्तरा छीला और तोड़ा।

उसमें से भी पहले की तरह एक लड़की निकली। यह लड़की पहली दो लड़कियों से भी ज़्यादा सुन्दर थी। इसने भी निकलते ही राजकुमार से रोटी माँगी।

राजकुमार ने खुशी खुशी उसको रोटी दे दी। रोटी खा कर वह बोली — "अब में तुम्हारी हूँ बोलो मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकती हूँ।"

राजकुमार बोला — "मैं तो तुमसे शादी करना चाहता हूँ।"

उस लड़की ने कोई कपड़ा नहीं पहना हुआ था और क्योंकि राजकुमार शादी करने के लिये उसको अपने महल ले जाना चाहता था और इस हालत में वह उसको अपने घर नहीं ले जा सकता था। उसने जिप्सी के कपड़े देखे तो वे तो बहुत गन्दे थे।

सो राजकुमार ने उस लड़की से कहा — "तुम यहीं इस जिप्सी के पास ठहरो तब तक मैं तुम्हारे लिये कुछ कपड़े ले कर आता हूँ।

जिप्सी के भी एक बेटी थी जो गाड़ी में सो रही थी इसलिये वह यह सब नहीं देख पायी थी जो वहाँ हो रहा था। जब राजकुमार वहाँ से चला गया तब वह लड़की जाग गयी और उसने राजकुमार को जाते हुए देख लिया। राजकुमार को देखते ही वह उसको प्यार करने लगी।

वह तुरन्त ही गाड़ी में से कूद पड़ी और अपने पिता से पूछा कि वहाँ क्या हुआ था। जिप्सी ने उसको सब कुछ बता दिया।

उस जिप्सी लड़की ने उस सन्तरे वाली लड़की को देखा तो वह उससे बोली — "लाओ मैं तुम्हारे बाल सँवार दूँ। इससे जब राजकुमार आयेगा तब तुम बहुत सुन्दर दिखायी दोगी।"

वह लड़की तैयार हो गयी। जैसे ही उस जिप्सी लड़की ने उस के बालों में कंघी करनी शुरू की अचानक ही उसने एक पिन उसके सिर में चुभो दी। इससे तुरन्त ही वह लड़की एक फाख्ता के रूप में बदल गयी और उड़ गयी।

फिर उस जिप्सी लड़की ने अपने कपड़े उतार दिये और उस सन्तरे वाली लड़की की जगह बैठ गयी।

जल्दी ही राजकुमार कपड़े ले कर लौट आया तो उसने उस लड़की को देख कर उससे पूछा — "अरे तुम इतनी साँवली कैसे हो गयीं?"

उस जादूगरनी ने जवाब दिया — "इस तेज़ धूप से मेरा रंग साँवला पड़ गया है।"

राजकुमार ने उस जिप्सी लड़की का विश्वास कर लिया कि वह वही सन्तरे वाली लड़की थी और अब उसका रंग साँवला पड़ गया था। वह उसको अपने महल ले गया और उससे शादी कर ली।

एक दिन एक फाख्ता राजा के बागीचे में आयी और वहाँ के माली से पूछा — "ओ राजा के माली, राजकुमार और उसकी पत्नी कैसे हैं?"

माली बोला — "कभी कभी तो राजकुमार गाते हैं पर अक्सर तो वह रोया ही करते हैं।" उसके बाद वह फाख्ता वहाँ बराबर आती रही और राजकुमार के बारे में पूछती रही।

एक दिन उस माली ने राजकुमार को उस फाख्ता के बारे में बताया तो राजकुमार ने माली को कहा कि अगली बार जब भी वह फाख्ता बागीचे में आये तो वह उसको पकड़ ले।

माली ने उस पेड़ पर जहाँ वह फाख्ता आ कर बैठती थी एक जाल बिछा दिया सो अगली बार जब वह फाख्ता वहाँ आयी और फिर वहाँ से उसने उड़ने की कोशिश की तो उड़ ही नहीं पायी। वह

तो माली के बिछाये जाल में फँस गयी थी। माली उसको पकड़ कर राजकुमार के पास ले गया।

राजकुमार को वह छोटी सी फाख्ता बहुत अच्छी लगी सो उसने उसको अपने हाथों में ले लिया और उसके सिर पर हाथ फेरने लगा।

जब वह उस फाख्ता के सिर पर हाथ फेर रहा था तो उसको उसके सिर में एक पिन महसूस हुई। उसने उस पिन को खींच कर बाहर निकाल दिया। जैसे ही उसके सिर से वह पिन निकली वह फाख्ता फिर से सन्तरे वाली लड़की बन गयी।

तब उसने राजकुमार को सारी कहानी बतायी और राजकुमार ने वह सारी कहानी राजा को सुनायी।

राजा यह सुन कर बहुत गुस्सा हुआ और उस जिप्सी को जला कर मारने की सजा सुना दी। राजकुमार और सन्तरे वाली लड़की की शादी हो गयी और वे दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

7 तीन अनारों से प्यार[34]

तीन सन्तरे जैसी यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक राजा का बेटा शाम को मेज पर बैठा खाना खा रहा था कि रिकोटा चीज़[35] काटते समय वह अपनी उंगली काट बैठा।

उस कटी हुई जगह से एक बूँद खून टपक कर चीज़ के ऊपर गिर गया। यह देख कर उसने अपनी माँ से कहा — "माँ मुझे दूध जैसी सफेद और खून जैसी लाल पत्नी चाहिये।"

माँ बोली — "क्यों मेरे बेटे। जो कोई लड़की इतनी गोरी होगी वह इतनी लाल नहीं होगी और जो इतनी लाल होगी तो वह इतनी गोरी नहीं होगी। पर फिर भी तुम दुनियाँ में घूमो और ऐसी लड़की की तलाश करो शायद तुमको ऐसी कोई लड़की मिल जाये।"

सो राजा का बेटा ऐसी दुलहिन ढूँढने चल दिया। कुछ दूर जाने के बाद उसको एक स्त्री मिली। उसने राजकुमार से पूछा — "ओ नौजवान, तुम कहाँ जा रहे हो?"

[34] The Love of the Three Pomegranates – a folktale from Abruzzo area, Italy, Europe. Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980. Hindi translation of its 125 tales out of 200 tales is available from hindifolktales@gmail.com

[35] Ricotta cheese is a kind of processed Indian Paneer used in western world.

राजकुमार बोला — "मैं अपना भेद एक स्त्री पर प्रगट नहीं करता।" और यह कह कर वह आगे बढ़ गया।

आगे जा कर उसको एक बूढ़ा मिला। उसने भी राजकुमार से यही पूछा — "बेटे, तुम कहाँ जा रहे हो?"

राजकुमार बोला — "हाँ, मैं आपको तो यह बता ही सकता हूँ कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। जनाब आप सुनें, मैं एक ऐसी लड़की की तलाश में हूँ जो दूध जैसी सफेद भी हो और खून जैसी लाल भी हो।"

बूढ़ा बोला — "बेटे, जो खून जैसी लाल होगी वह दूध जैसी सफेद नहीं होगी और जो दूध जैसी सफेद होगी तो वह खून जैसी लाल नहीं होगी।

खैर, तुम ऐसा करो कि तुम ये तीन अनार ले लो। इनको तोड़ना और देखना कि इनमें से क्या निकलता है। पर ध्यान रहे कि इनको किसी फव्वारे के या पानी के पास ही तोड़ना।"

राजकुमार ने उस बूढ़े से वे तीनों अनार ले लिये और आगे चल दिया। आगे चल कर एक फव्वारे के पास उसने उनमें से एक अनार तोड़ा तो उसमें एक लड़की निकली जो दूध जैसी सफेद और खून जैसी लाल थी।

वह लड़की निकलते ही चिल्लायी — "ओ नौजवान, मुझे पानी दो वरना मैं मर जाऊँगी।"

राजकुमार ने अपने दोनों हाथों को पानी में डुबो कर उनमें पानी भरा और उसको दिया पर वह सुन्दर लड़की यह कहते हुए कि उसको पानी देने में देर हो गयी वहीं मर गयी।

फिर उसने दूसरा अनार तोड़ा तो उसमें से एक और सुन्दर लड़की निकली। यह लड़की भी दूध की तरह सफेद और खून की तरह लाल थी। उसने भी निकलते ही कहा — "ओ नौजवान, मुझे पानी दो वरना मैं मर जाऊँगी।"

वह उसके लिये भी पानी ले कर आया पर फिर भी पानी लाने में उसको देर हो गयी और वह लड़की भी वहीं मर गयी। राजकुमार को बड़ा दुख हुआ सो अबकी बार उसने तीसरा अनार तोड़ने से पहले ही फव्वारे से पानी ला कर रख लिया।

अब उसने तीसरा अनार तोड़ा तो उसमें से भी एक सुन्दर लड़की निकली। यह लड़की भी दूध की तरह सफेद और खून की तरह लाल थी। यह पिछली दोनों लड़कियों से ज़्यादा सुन्दर थी।

इस बार राजकुमार ने तुरन्त ही उसके मुँह पर पानी फेंका और वह ज़िन्दा रही। उसने कोई कपड़ा नहीं पहना हुआ था सो राजकुमार ने उसको अपना शाल[36] ओढ़ा दिया।

फिर राजकुमार ने उस लड़की से कहा — "तुम इस पेड़ पर चढ़ जाओ तब तक मैं तुम्हारे पहनने के

[36] Translated for the word "Cloak". See its picture above.

लिये कुछ कपड़े और तुमको ले जाने के लिये एक गाड़ी ले कर आता हूँ।"

यह कह कर वह राजकुमार तो चला गया और वह लड़की उस फव्वारे के पास लगे हुए एक पेड़ पर चढ़ कर बैठ गयी।

एक मुस्लिम खानाबदोश[37] लड़की उस फव्वारे पर रोज पानी भरने आया करती थी। वह उस दिन भी वहाँ पानी भरने आयी। जैसे ही उसने अपना मिट्टी का घड़ा फव्वारे के पानी में पानी भरने के लिये डुबोया तो उस पानी में उसको उस लड़की के चेहरे की परछाईं दिखायी दी।

उसको लगा कि वह परछाईं उसके अपने चेहरे की है सो वह एक लम्बी सी साँस भर कर बोली –

वह मैं जो खुद बहुत सुन्दर हूँ पानी का बर्तन ले कर घर जाऊँ?

और यह कह कर उसने वह बर्तन तुरन्त ही पानी में से निकाल लिया और जमीन पर पटक दिया। बर्तन मिट्टी का था सो जमीन पर गिरते ही टूट गया। वह बिना पानी और बिना बर्तन लिये ही घर चली गयी।

जब वह घर पहुँची तो उसकी मालकिन ने उसको खाली हाथ आते देख कर गुस्से से डाँटा — "ओ बदसूरत खानाबदोश, तेरी

[37] Translated for the word "Saracen" – this word was used in Europe for Muslim nomads in those times.

हिम्मत कैसे हुई बिना पानी लिये घर वापस आने की? और तू तो बर्तन भी नहीं लायी? कहाँ है बर्तन?"

सो उस खानाबदोश लड़की ने एक और मिट्टी का बर्तन उठाया और फिर फव्वारे पर लौट गयी। जब वह अपने बर्तन में फिर पानी भरने लगी तो फिर उसको वही परछाईं दिखायी दी। उसको फिर लगा कि वह अपने चेहरे की परछाईं पानी में देख रही है सो वह फिर बोली —

मैं इतनी सुन्दर और पानी का बर्तन ले कर घर जाऊँ?

उसने फिर अपना मिट्टी का बर्तन जमीन पर पटक दिया। वह बर्तन भी मिट्टी का था सो वह भी जमीन पर गिरते ही टूट गया और वह फिर बिना पानी और बिना बर्तन के घर चली गयी।

उसकी मालकिन ने फिर उसको इस तरह खाली हाथ आने और दो बर्तन खोने के लिये बहुत डाँटा तो उसने फिर एक और बर्तन उठाया और फिर पानी भरने के लिये फव्वारे पर चली गयी।

फिर उसने पानी लेने के लिये बर्तन फव्वारे के पानी में डुबोया तो फिर उस लड़की की परछाईं पानी में देख कर फिर उसने वह बर्तन तोड़ दिया।

अब तक वह लड़की पेड़ पर चुपचाप बैठी थी पर अबकी बार जब उसने वह बर्तन तोड़ा तो वह हँस पड़ी। उसकी हँसी की

आवाज सुन कर उस खानाबदोश लड़की ने ऊपर की तरफ देखा तो वहाँ तो एक बहुत सुन्दर लड़की बैठी थी।

वह चिल्लायी — "ओह तो वह तुम हो। तुमने ही मेरे तीन बर्तन तुड़वाये और यह चौथा भी तुड़वाने वाली थी। पर तुम वाकई बहुत सुन्दर हो। मुझे तुम्हारे बाल बहुत अच्छे लग रहे हैं। आओ तुम नीचे आओ मैं तुम्हारे बाल सँवार दूँ।"

वह लड़की पेड़ से नीचे उतरना नहीं चाहती थी परन्तु बदसूरत खानाबदोश लड़की ने उससे पेड़ से नीचे उतरने की बहुत जिद की — "तुम मेरे पास आओ न, मैं तुम्हारे बाल बना दूँ। इससे तुम और भी ज़्यादा सुन्दर लगोगी।"

कहते हुए उस बदसूरत खानाबदोश लड़की ने उसको उसका हाथ पकड़ कर पेड़ से नीचे उतार लिया। उसने उसके बाल खोले तो उसको उसके बालों में लगी एक पिन दिखायी दे गयी। उसने वह पिन उस बेचारी लड़की के कान में ठूँस दी।

इससे उस लड़की के कान में से एक बूँद खून निकल कर नीचे गिर पड़ा और वह मर गयी। पर जब वह खून की बूँद जमीन पर पड़ी तो वह एक कबूतरी[38] बन गयी और उड़ गयी।

इस तरह उस लड़की को मार कर और उसके कपड़े पहन कर वह बदसूरत खानाबदोश लड़की खुद पेड़ पर चढ़ कर बैठ गयी।

[38] Translated for the word "Wood Pigeon". See its picture above.

थोड़ी देर में राजकुमार गाड़ी और कपड़े ले कर वापस आ गया और बदसूरत खानाबदोश की तरफ आश्चर्य से देख कर बोला — "अरे तुम तो दूध जैसी सफेद और खून जैसी लाल थीं। तुम इतनी सॉवली कैसे हो गयीं?"

बदसूरत खानाबदोश लड़की बोली — "जब सूरज बाहर निकला तो धूप की वजह से मैं सॉवली पड़ गयी।"

"पर तुम्हारी तो आवाज भी बदली हुई है, वह कैसे बदल गयी?

इसके जवाब में वह खानाबदोश लड़की बोली — "हवा ज़ोर से चली और उसी ने मेरी आवाज ऐसी कर दी।"

"पर तुम तो बहुत सुन्दर थीं और अब तो तुम बहुत ही बदसूरत लग रही हो।"

इसके जवाब में वह बोली — "तभी ठंडी हवा चली जिसने मेरे चेहरे को जमा दिया।"

इन जवाबों से राजकुमार को विश्वास हो गया कि वह वही लड़की थी जिसको वह छोड़ कर गया था और वह उसको गाड़ी में बिठा कर अपने घर ले गया। महल में आ कर राजकुमार ने उससे शादी कर ली। अब वह राजकुमार की पत्नी बन गयी।

उधर वह कबूतरी रोज सुबह राजकुमार के शाही रसोईघर की खिड़की पर आ कर बैठ जाती और रसोइये से कहती — "ओ

शापित रसोईघर के रसोइये, तू मुझे बता कि राजकुमार इस समय उस बदसूरत खानाबदोश लड़की के साथ क्या कर रहा है?"

शाही रसोइया जवाब देता — "वह खाता है, पीता है और सो जाता है, बस।"

कबूतरी फिर कहती — "तू मुझे थोड़ा सा सूप दे दे तो मैं तुझे सोने के आलूबुखारे[39] दूँगी।"

रसोइया उसको एक कटोरा भर के सूप देता और वह कबूतरी सूप पी कर अपने को हिला डुला कर अपने कुछ सोने के पंख गिरा देती और उड़ जाती।

पर अगली सुबह वह फिर आ जाती और फिर रसोइये से पूछती — "ओ शापित रसोईघर के रसोइये, तू मुझे बता कि राजकुमार इस समय उस बदसूरत खानाबदोश लड़की के साथ क्या कर रहा है?"

शाही रसोइया फिर वही जवाब देता — "वह खाता है, पीता है और सो जाता है, बस।"

कबूतरी फिर कहती — "तू मुझे थोड़ा सा सूप दे दे तो मैं तुझे सोने के आलूबुखारे दूँगी।"

[39] Translated for the word "Plums". See their picture above.

रसोइया फिर उसको एक कटोरा भर के सूप देता, वह उस सूप को पीती और फिर अपने को हिला डुला कर अपने कुछ सोने के पंख गिरा देती और उड़ जाती।

कुछ समय बाद रसोइये ने सोचा कि वह राजा के पास जा कर यह सब राजा को बताये। सो वह राजा के पास गया और उसने जा कर उसको सारी कहानी सुनायी।

राजा ने उसकी कहानी ध्यान से सुनी और बोला — "कल जब वह कबूतरी तुम्हारे पास आये तो उसको पकड़ लेना और मेरे पास ले आना। मैं उसको अपने पास रखूँगा।"

बदसूरत खानाबदोश लड़की उन दोनों की बात सुन रही थी। वह यह जान गयी कि उसने उस कबूतरी को वहाँ से उड़ जाने देने की गलती कर ली थी। पर अब वह क्या करे?

सो अगले दिन सुबह जब वह कबूतरी खिड़की पर आ कर बैठी तो उस खानाबदोश लड़की ने रसोइये को खूब पीटा और उस कबूतरी के शरीर में लोहे की एक सलाई घुसा कर उसे मार डाला।

इससे कबूतरी तो मर गयी पर उसके खून की एक बूँद खिड़की के बाहर जमीन पर गिर पड़ी। उस बूँद से तुरन्त ही वहाँ अनार का एक पेड़ उग आया।

अनार के इस पेड़ में एक जादू था कि जो भी मर रहा हो अगर वह इस पेड़ का एक अनार खा ले तो वह ज़िन्दा हो जाता था। इस

लिये उस बदसूरत खानाबदोश लड़की के पास उस पेड़ का एक अनार लेने के लिये एक लम्बी लाइन लगी रहती।

आखीर में उस पेड़ के सब अनार खत्म हो गये और उस पेड़ पर केवल एक अनार रह गया। वह अनार उन सब अनारों में सबसे बड़ा था जो उस पेड़ पर पहले लगे थे। सो उस खानाबदोश लड़की ने सबको यह कह दिया कि अब इस पेड़ के सारे अनार खत्म हो गये हैं और अब यह आखिरी अनार मैं अपने लिये रखूँगी।

एक दिन एक बुढ़िया वहाँ आयी और उस खानाबदोश लड़की से बोली — "रानी जी, मेहरबानी कर के यह अनार मुझे दे दीजिये। मेरे पति की हालत बहुत खराब है। अगर यह अनार आप मुझे दे देंगी तो मेरे पति बच जायेंगे।"

वह खानाबदोश लड़की बोली — "अब इस पेड़ पर बस यह एक ही अनार बचा है और इसको अब मैंने सजावट के लिये यहाँ रखा हुआ है।"

पर राजकुमार ने उसको ऐसा करने से मना किया। वह बोला — "उस बेचारी बुढ़िया के पति की हालत बहुत खराब है। तुमको उसको अनार देने से मना नहीं करना चाहिये।"

इस तरह राजकुमार ने उस खानाबदोश लड़की से उस आखिरी अनार को उस बुढ़िया को दिलवा दिया। बुढ़िया खुशी खुशी वह अनार ले कर घर चली गयी।

पर घर जा कर उसने देखा कि उसका पति तो तब तक मर गया था। उसने सोचा "तो अब मैं इस अनार को सजावट के लिये ही रख लेती हूँ।" और वह उसने एक खुली आलमारी में रख दिया। उस अनार में वह लड़की रहती थी।

वह बुढ़िया रोज "मास"[40] पढ़ने चर्च जाती थी। जब वह मास पढ़ने के लिये चली जाती तो वह लड़की उस अनार में से निकलती।

वह उस बुढ़िया के लिये आग जलाती, उसका घर साफ करती और उसके लिये खाना बनाती। खाना बना कर उसको उसकी खाने की मेज पर लगाती और यह सब कर के वह फिर अपने अनार में चली जाती।

वह बुढ़िया जब घर वापस आती तो अपना घर ठीक ठाक पा कर और अपने लिये खाना बना देख कर बहुत चकित होती। एक दिन वह चर्च के कनफैशन के कमरे[41] में गयी और अपने कनफैशन सुनने वाले से जा कर उसे सब कुछ बताया।

वह बोला — "तुम ऐसा करो कि कल तुम मास जाने का केवल बहाना बनाओ पर अपने घर में या फिर अपने घर के आस पास ही कहीं छिप जाओ और फिर देखो कि तुम्हारे घर में क्या क्या होता

---

[40] Mass is a kind of Christian worship

[41] Confession Box – it is a place in the Church where normally a sinner accepts his or her mistakes and sins and promises not to do it again in front of a priest, but there is curtain between them so they cannot see each other that who is confessing and who is hearing.

है। इस तरीके से तुम जान पाओगी कि तुम्हारे घर में यह सब काम कौन करता है।"

अगले दिन उस कनफैशन सुनने वाले की सलाह मान कर उस बुढ़िया ने मास जाने का केवल बहाना ही किया। वह घर के बाहर तक गयी और दरवाजे के बाहर तक जा कर रुक गयी और एक ऐसी जगह जा कर खड़ी हो गयी जहाँ से वह अपना घर अच्छी तरह से देख सकती थी।

उसके जाने के बाद वह लड़की रोज की तरह अपने अनार में से निकली और उस बुढ़िया के घर का काम करना शुरू कर दिया।

तभी वह बुढ़िया घर के अन्दर आ गयी। बुढ़िया को देख कर वह लड़की अपने अनार के अन्दर घुसने की कोशिश करने लगी पर उस बुढ़िया ने उसे अनार के अन्दर जाने से पहले ही पकड़ लिया।

बुढ़िया ने पूछा — "तुम कहाँ से आयी हो?"

वह लड़की बोली — "भगवान आपको सुखी रखे, मुझे मारना नहीं, मुझे मारना नहीं।"

बुढ़िया प्यार से बोली — "मैं तुमको मारूँगी नहीं पर मैं यह जानना चाहती हूँ कि तुम आयी कहाँ से हो?"

लड़की बोली — "मैं इस अनार के अन्दर रहती हूँ।" और उसने बुढ़िया को अपनी सारी कहानी सुना दी।

उसकी कहानी सुन कर उस बुढ़िया ने उसको अपने जैसी किसान लड़की की पोशाक पहनायी क्योंकि इस लड़की ने अभी भी कपड़े नहीं पहन रखे थे।

अगले रविवार को वह उसको मास के लिये चर्च ले गयी। वहाँ पर राजकुमार भी आता था। उसने उस लड़की को देखा तो उसके मुँह से निकला — "हे भगवान, मुझे तो अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा कि यह वही लड़की है जिससे मैं फव्वारे पर मिला था।"

सो मास खत्म हो जाने के बाद उसने चर्च के बाहर उस बुढ़िया का इन्तजार करने का निश्चय किया। जब वह बुढ़िया चर्च के बाहर निकली तो राजकुमार ने उससे पूछा — "मुझे सच सच बताइये माँ जी कि यह लड़की आपके पास कहाँ से आयी?"

"सरकार मुझे मारियेगा नहीं।"

राजकुमार बहुत बेचैनी से बोला — "नहीं नहीं, मैं आपको बिल्कुल नहीं मारूँगा। बस आप मुझे यह बता दें कि यह लड़की आपके पास आयी कहाँ से?"

बुढ़िया फिर भी डरते डरते बोली — "यह लड़की उस अनार में से निकली है जो आपने मुझे दिया था।"

राजकुमार फिर बोला — "तो यह भी अनार में थी?"

फिर वह उस लड़की से बोला — “पर तुम इस अनार में घुसी कैसे?”

इस पर उसने राजकुमार को अपनी सारी कहानी सुना दी। राजकुमार उस लड़की को ले कर महल वापस लौटा और सीधा उस खानाबदोश लड़की के पास गया। उसने उस अनार वाली लड़की से उस खानाबदोश लड़की के सामने एक बार फिर अपनी कहानी सुनाने को कहा।

जब अनार वाली लड़की ने अपनी कहानी खत्म कर दी तो राजकुमार ने खानाबदोश लड़की से कहा — “सुना तुमने? मैं अपने हाथों से तुमको मारना नहीं चाहता इसलिये अच्छा है कि तुम खुद ही मर जाओ।”

खानाबदोश लड़की ने देखा कि अब कोई और रास्ता नहीं रह गया है तो वह बोली “मेरे अन्दर लोहे की एक सलाई घुसा दो और मुझे शहर के चौराहे पर जला दो तो मैं मर जाऊँगी।” ऐसा ही किया गया।

इसके बाद राजकुमार ने उस अनार वाली लड़की से शादी कर ली और दोनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

8 अनार शाहज़ादी[42]

इस संग्रह की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये भारत की लोक कथाओं से ली है जिसे 1892 में प्रकाशित किया गया था। इसे मिर्जापुर के मियाँ करमुद्दीन अहमद ने सुनाया था।

एक राजा था जिसके चार बेटे थे। उसके तीन बड़े बेटों की तो शादी हो चुकी थी पर सबसे छोटा वाला चौथा बेटा अभी कुँआरा ही था। उसकी भाभियाँ उसे चिढ़ाया करती थीं "क्या तुम अनार शाहज़ादी से शादी करने का इन्तजार कर रहे हो?"

यह सुन कर उसने अनार शाहज़ादी के बारे में पूछताछ की तो उसे पता चला कि उसका मिलना तो बहुत मुश्किल काम है क्योंकि वह तो रहती ही अनार में ही थी और लाखों देव या राक्षस उसकी रखवाली करते थे।

आखिर नौजवान राजकुमार ने कहा — "अगर मैं अनार शाहज़ादी से शादी नहीं कर सका तो फिर मैं अपना चेहरा कभी किसी को नहीं दिखाऊँगा।"

[42] Princess Pomegranate. Taken from "North Indian Notes and Queries, Edited by William Crooke. Vol II, Apr 1892. p 211--. Available in English at : https://babel.hathitrust.org/cgi/pt?id=osu.32435057137622&view=1up&seq=224&skin=2021&size=125&q1=744

सो वह अनार शाहज़ादी की खोज में घर से चल दिया। चलते चलते वह एक जंगल में पहुँचा जहाँ उसे एक देव मिला। राजकुमार ने उससे कहा — "मामा साहिब सलाम।"

देव बोला — "तो आखिर तुम आ ही गये।"

राजकुमार कुछ समय तक देव के साथ रहा और उसे अपने आने का उद्देश्य बताया तो एक दिन देव ने एक पत्थर के टुकड़े पर कुछ लिखा और राजकुमार को दे कर एक और देव के पास भेजा सो राजकुमार उसे ले कर दूसरे देव के पास पहुँचा।

वहाँ पहुँच कर वह बोला — "मामा साहिब सलाम।" और वह पत्थर का टुकड़ा उसे दे दिया। उसने वह पत्थर का टुकड़ा पढ़ा और राजकुमार से पूछा कि उसे क्या चाहिये।

राजकुमार ने बताया कि उसे क्या चाहिये तो देव बोला — "ठीक है मैं तुम्हें कौआ बना देता हूँ। फिर तुम पेड़ से एक अनार तोड़ लेना और देखना कि एक से ज़्यादा अनार मत तोड़ना।

वहाँ जो देवी उसकी सुरक्षा कर रही होगी वह यह कोशिश करेगी कि तुम वहाँ एक से ज़्यादा अनार तोड़ लो पर वह कुछ भी कहे तुम उस पर ध्यान मत देना और केवल एक अनार तोड़ कर यहाँ आ जाना।" राजकुमार ने ऐसा ही किया।

पर जब राजकुमार अनार तोड़ने गया तो जैसा देव ने उससे कहा था वैसा ही हुआ। जैसे ही उसने एक अनार तोड़ लिया तो देवी ने उससे कहा कि वह एक और अनार तोड़ सकता है।

राजकुमार को लगा कि वह एक अनार और तोड़ ले सो उसने एक अनार और तोड़ लिया। जैसे ही उसने दूसरा अनार तोड़ा कि देवी ने उसकी गर्दन मरोड़ कर उसे मार दिया और उससे अनार छीन लिया।

देव को पता चल गया कि राजकुमार अपने लालच की वजह से मारा जा चुका है। वह राजकुमार के पास गया उसकी लाश को ज़िन्दा किया और उससे कहा — "तुम बेवकूफ हो। तुमने मेरी बात नहीं मानी और उसका तुम्हें यह फल मिला।"

राजकुमार ने अपनी भूल मानी। देव आगे बोला — "अब अनार शाहज़ादी को पाना बहुत मुश्किल है पर मैं तुम्हें एक मौका और दे सकता हूँ। अबकी बार मैं तुम्हें एक तोते के रूप में बदल देता हूँ पर तुम्हें मेरा कहा मानना होगा।"

राजकुमार बोला कि वह अवश्य ही उसका कहा मानेगा सो उसने उसे एक तोते के रूप में बदल दिया और अबकी बार वह एक अनार ले कर देव के पास लौट आया। देवी ने उससे दूसरा अनार ले जाने के लिये बहुत कहा पर राजकुमार नहीं माना।

देवी उसके पीछे पीछे देव के घर तक पहुँच गयी। देव ने जब देवी को राजकुमार का पीछा करते देखा तो उसने राजकुमार को एक मच्छर में बदल दिया। देवी उसके पास आयी और देव से पूछा कि "क्या तुमने यहाँ कोई तोता देखा है?"

देव ने कहा "नहीं तो। ढूँढो ढूँढो उसे जल्दी ढूँढो।"

अब उस देवी को उसका मिलना तो नामुमकिन था सो वह वापस चली गयी। देव ने तब राजकुमार को उसके असली रूप में बदल दिया और उसे अनार के साथ उसके घर भेज दिया।

रास्ते में उसने एक जगह अनार छिपा दिया और अपनी शादी की तैयारी करने घर चल दिया। जब वह जा रहा था तो वह अनार टूट गया और उसमें से एक बहुत सुन्दर लड़की निकल पड़ी।

इत्तफाक से उधर से एक सफाई करने वाली जा रही थी। उसने राजकुमारी को देखा तो उससे बोली — "तुम मुझे अपने गहने दे दो मैं इन्हें एक बार पहनना चाहती हूँ। फिर हम दोनों पानी में अपनी परछाईं देख कर यह निश्चित करेंगे कि हममें से कौन अधिक सुन्दर है।"

राजकुमारी ने पहनने के लिये उसे अपने गहने दे दिये और वे दोनों अपनी अपनी शक्लें देखने के लिये एक कुँए के पास गयीं। जब वे कुँए में देख रही थीं तो सफाई करने वाली ने राजकुमारी को कुँए में धक्का दे दिया जिससे राजकुमारी कुँए में गिर गयी।

कुँए में गिरने के बाद राजकुमारी एक कमल का फूल बन गयी और वह सफाई करने वाली राजकुमारी की जगह जा कर बैठ गयी।

जब राजकुमार आया और उसने सफाई करने वाली को देखा तो बोला — "अरे तुम तो उससे आधी भी सुन्दर नहीं हो जितना कि मैं सोचता था कि तुम होगी।"

फिर भी उसने उसे एक पालकी में बिठाया और उसे घर ले आया।

जब वह घर आ गयी और राजकुमार की भाभियों ने उसे देखा तो राजकुमार से कहा — "यह तुम किसे ले आये यह तो अनार शाहज़ादी नहीं है।"

कुछ समय बाद एक दिन राजकुमार शिकार खेलने गया तो उसके घुड़सवारों को प्यास लगी तो वह कुँए के पास उसमें से पानी खींचने के लिये आये। इत्तफाक से यह वही कुआँ था जिसमें अनार शहज़ादी को फेंका गया था सो जब उनका लोटा पानी ले कर ऊपर आ रहा था तो उसके साथ में कमल का फूल भी उसके साथ साथ ऊपर आ गया और लोटे में से बाहर कूद पड़ा।

यह देख कर उन्होंने राजकुमार को बुलाया। राजकुमार को वह फूल बहुत सुन्दर लगा सो वह उसे अपने घर ले गया।

उधर सफाई करने वाली ने जब वह फूल देखा तो उसे लगा कि यह तो राजकुमारी है। जब राजकुमार सो गया तो उसने उस फूल को तोड़ कर फेंक दिया। जब राजकुमार जागा और उसने अपने लाये फूल के टुकड़े टुकड़े देखे तो वह बहुत दुखी हुआ।

जहाँ फूल के टुकड़े कर के फेंके गये थे वहाँ अनार का एक पेड़ उग आया और उसके बड़े होने पर उसमें केवल एक फूल लगा। सफाई करने वाली को फिर से पता चल गया कि यह तो राजकुमारी ही है। उसने उस पेड़ को तो खुदवा कर बाहर फिंकवा

दिया और वह फूल को अपने माली की पत्नी को यह कहते हुए भिजवा दिया कि वह उसे बीज के लिये रख ले।

मालिन ने उसे एक बर्तन में लगा दिया और जब उसमें अनार आया और टूटा तो उसमें से एक सुन्दर लड़की निकल आयी। वह मालिन के घर में उसकी बेटी की तरह ही बड़ी होने लगी।

एक दिन राजकुमार के किसी आदमी ने उसे देखा तो राजकुमार को उसके बारे में बताया तो राजकुमार ने कहा कि वह उसकी शादी मालिन की बेटी से करवा दे वरना वह मर जायेगा।

सफाई करने वाली फिर जानती थी कि वह अवश्य ही राजकुमारी ही होगी सो उसने बीमारी का बहाना किया और कहा — "मुझे खाने के लिये इस लड़की का जिगर चाहिये नहीं तो मैं मर जाऊँगी।"

राजा ने मालिन से कहा कि वह अपनी लड़की को उसे दे दे। पहले तो मालिन ने बहुत मना किया पर फिर उसे अपनी बेटी को राजा को मारने के लिये देना ही पड़ा। उसे मारने के बाद सफाई करने वाली को उसका जिगर ला कर दे दिया गया।

जिगर खा कर वह बहुत खुश हुई उसे लगा कि राजकुमारी आखिर मर ही गयी। पर भगवान की कृपा से जहाँ राजकुमारी को मारा गया था वहाँ अचानक ही एक घर प्रगट हो गया। दो मोर उस घर के दरवाजे पर सन्तरी की तरह खड़े हुए थे और महल के अन्दर राजकुमारी थी।

राजकुमार ने उससे मिलना चाहा तो मोर बोले — "तुमने राजकुमारी को बहुत तंग किया है इसलिये तुम्हें उनसे मिलने की इजाज़त नहीं दी जा सकती।"

पर आखिर उसने मोरों को इस बात पर राजी कर ही लिया कि वे उसे राजकुमारी से मिलवा देंगे। राजकुमार रानी से मिलने गया तो आखीर में राजकुमारी को उसे माफ करना ही पड़ा और राजकुमार उसे अपनी पत्नी बना कर घर ले आया।

तब राजकुमार की भाभियों ने कहा — "हॉ यह है अनार शाहज़ादी।"

राजकुमार ने राजकुमारी से शादी कर ली और सफाई करने वाली को कमर तक गाड़ कर उस पर सिपााहियों से तब तक तीर चलवा दिये जब तक वह मर नहीं गयी।

9 एक छोटा चरवाहा[43]

"तीन सन्तरे" जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार एक लड़का था जो भेड़ चराया करता था। वह लड़का साइज़ में एक छोटे से कीड़े से ज़्यादा बड़ा नहीं था।

एक दिन जब वह अपनी भेड़ों को चराने के लिये घास के मैदानों की तरफ जा रहा था तो वह एक अंडे बेचने वाली के पास से गुजरा। वह अंडे बेचने वाली एक टोकरी में अंडे भर कर उनको बेचने के लिये बाजार ले कर जा रही थी।

उसको देख कर उसे शरारत सूझी। उसने उस अंडे बेचने वाली की टोकरी की तरफ एक पत्थर फेंका और उस एक ही पत्थर से उस स्त्री की टोकरी में रखे सारे अंडे टूट गये।

इससे उस स्त्री को गुस्सा आ गया तो उसने उस लड़के को शाप दे दिया — "तुम इससे बड़े कभी नहीं होगे जब तक तुम तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना[44] को नहीं ढूँढ लोगे।"

उस दिन के बाद से वह लड़का फिर और बड़ा नहीं हुआ बल्कि और पतला दुबला होता चला गया। उसकी माँ उसकी जितनी

[43] The Little Shepherd – a folktale from Genoa, Italy, Europe.
Adapted from the book "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
Hindi translation of its 125 tales out of 200 tales is available from hindifolktales@gmail.com

[44] Bargaglina – name of the girl of three singing apples

ज़्यादा देखभाल करती वह उतना ही और पतला दुबला होता जाता।

एक दिन उसकी माँ ने उससे पूछा — "बेटा, तुझे क्या हो गया है? क्या तूने किसी का कुछ बुरा किया है जो उसने तुझे शाप दे दिया है? तू बड़ा ही नहीं होता।"

तब उसने अपनी नीचता की कहानी अपनी माँ को सुनायी कि कैसे उसने पत्थर मार कर एक अंडे बेचने वाली की टोकरी में रखे सारे अंडे तोड़ दिये थे।

और फिर उसने उस स्त्री के शब्द भी दोहरा दिये — "तुम इससे बड़े कभी नहीं होगे जब तक तुम तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को नहीं ढूँढ लोगे।"

उसकी माँ बोली — "अगर ऐसी बात है तो तुम्हारे पास इसके सिवा और कोई चारा नहीं है बेटा कि तुम उस तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढो।"

यह सुन कर वह लड़का उस तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढने चल दिया।

चलते चलते वह एक पुल के पास आया। वहाँ एक स्त्री एक अखरोट के खोल में बैठी झूल रही थी। उसने उस लड़के को देखा तो पूछा — "उधर कौन जा रहा है?"

चरवाहा बोला — "एक दोस्त।"

"ज़रा मेरी पलक तो उठा दो ताकि मैं तुमको देख सकूँ।"

चरवाहे ने उसकी पलक उठा दी तो उसने उसी तरफ देख कर पूछा — "तुम कहाँ जा रहे हो?"

"मैं तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढने जा रहा हूँ। क्या तुमको उसका कुछ अता पता मालूम है?"

"नहीं वह तो मुझे नहीं मालूम है पर तुम यह पत्थर लेते जाओ शायद यह तुम्हारे काम आये।" कह कर उसने चरवाहे को एक पत्थर पकड़ा दिया। चरवाहे ने उससे वह पत्थर ले लिया और आगे चल दिया।

आगे जा कर उसको एक और पुल मिला जहाँ एक और छोटी स्त्री एक अंडे के खोल में बैठी नहा रही थी। उसने भी पूछा — "इधर कौन जा रहा है?"

चरवाहे ने जवाब दिया — "एक दोस्त।"

वह स्त्री बोली — "ज़रा मेरी पलक तो उठा दो ताकि मैं तुम्हें देख सकूँ।"

चरवाहे ने उसकी भी पलक उठा दी तो उसने उसको देख कर पूछा — "तुम कहाँ जा रहे हो?"

"मैं तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढने जा रहा हूँ। क्या तुमको उसका कुछ अता पता मालूम है?"

"नहीं वह तो मुझे नहीं मालूम है पर तुम यह हाथी दाँत की कंघी लेते जाओ तुम्हारे काम आयेगी।" कह कर उसने चरवाहे को

एक कंघी दे दी। चरवाहे ने वह कंघी अपनी जेब में रखी, उसको धन्यवाद दिया और आगे चल दिया।

चलते चलते वह एक नाले के पास आया जहाँ एक आदमी उस नाले के पास खड़ा खड़ा अपने थैले में कोहरा भर रहा था। उस चरवाहे ने उस आदमी से भी पूछा कि क्या वह तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को जानता था। पर उसने भी वही जवाब दिया कि वह उसको नहीं जानता था।

पर उस आदमी ने उस चरवाहे को एक जेब भर कर कोहरा दे दिया और कहा कि वह उसको अपने साथ ले जाये उसके काम आयेगा। चरवाहे ने उस आदमी से कोहरा लिया और उसको धन्यवाद दे कर आगे बढ़ गया।

चलते चलते वह एक चक्की के पास आया जो एक लोमड़े की थी। चरवाहे ने लोमड़े से भी पूछा कि क्या वह तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को जानता था।

लोमड़ा बोला — "हाँ मैं जानता हूँ कि वह सुन्दर बरगैगलीना कौन है पर तुमको उसे ढूँढने में बहुत परेशानी होगी। तुम यहाँ से सीधे चले जाओ तो वहाँ तुमको एक घर मिलेगा। उस घर का दरवाजा खुला होगा।

तुम उस दरवाजे से अन्दर चले जाना तो वहाँ तुमको क्रिस्टल का एक पिंजरा दिखायी देगा। उस पिंजरे में बहुत सारी छोटी छोटी घंटियाँ लगी हैं। उसी पिंजरे में वे गाने वाले सेब रखे हैं।

तुम वह पिंजरा उठा लेना पर वहाँ एक बुढ़िया का ध्यान रखना क्योंकि वहाँ एक बुढ़िया भी होगी। अगर उसकी आँखें खुली हों तो समझना कि वह सो रही है और अगर उसकी आँखें बन्द हों तो समझना कि वह सब कुछ देख रही है।"

उस लोमड़े की इस सलाह के साथ वह चरवाहा और आगे बढ़ा और उस घर तक आ गया जो उसको लोमड़े ने बताया था। उस घर का दरवाजा वाकई खुला हुआ था सो वह उस घर के अन्दर चला गया।

घर के अन्दर जा कर उसने देखा कि वहाँ एक क्रिस्टल का एक पिंजरा रखा है जिसमें घंटियाँ लगी हुई हैं और उसी के पास एक बुढ़िया बैठी है जिसकी आँखें बन्द हैं।

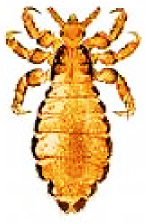

क्योंकि उसकी आँखें बन्द थीं इसलिये लोमड़े के कहे अनुसार वह सब कुछ देख रही थी। उस बुढ़िया ने चरवाहे से कहा — "ज़रा देखना तो मेरे बालों में कहीं कोई जूँ[45] तो नहीं हैं?"

उसने उस बुढ़िया के बालों में झाँका तो वहाँ उसको उसके बालों में कुछ जूँ दिखायी दीं। वह उसके सिर की जूँ निकालने

[45] Translated for the word "Lice". See its picture above.

लगा। जब वह उसके सिर में से जूँ निकाल रहा था तो उस बुढ़िया की आँखें खुल गयीं। अब उसको पता चल गया कि वह अब सो गयी थी।

उसको सोता देख कर चरवाहे ने तुरन्त ही क्रिस्टल का वह पिंजरा वहाँ से उठाया और भाग लिया। पर उस पिंजरे को ले जाते समय उसकी छोटी छोटी घंटियाँ बज उठीं और वह बुढ़िया जाग गयी। उसने उस चरवाहे के पीछे सौ घुड़सवार भेजे।

जब चरवाहे ने देखा कि वे घुड़सवार उसके काफी पास आ गये हैं तो उसने अपनी जेब में रखा पत्थर का टुकड़ा निकाल कर अपने पीछे फेंक दिया।

जमीन पर पड़ते ही उस पत्थर का एक बहुत बड़ा पहाड़ बन गया। उस बुढ़िया के कुछ घोड़े उससे टकरा कर मर गये और कुछ की टाँगें टूट गयीं। घोड़े बेकार होने की वजह से वे और आगे नहीं जा सके और वे सब घुड़सवार वापस लौट गये।

उन घुड़सवारों को वापस आया देख कर उस बुढ़िया ने अबकी बार **200** घुड़सवार उसके पीछे भेजे। चरवाहे ने एक नया खतरा देखा तो अपनी जेब से हाथी दाँत की कंघी निकाल कर अपने पीछे फेंक दी।

वह कंघी जहाँ गिरी थी वहाँ एक शीशे जैसा चिकना पहाड़ खड़ा हो गया जिस पर चढ़ते ही सारे घोड़े फिसल फिसल कर गिर पड़े और मर गये। सो वे **200** घुड़सवार भी वापस चले गये।

उनको वापस आया देख कर उस बुढ़िया ने अबकी बार **300** घुड़सवार भेजे। इतने सारे घुड़सवारों के देख कर उस चरवाहे ने अपनी जेब से कोहरा निकाल कर फेंक दिया। वह कोहरा सारे में फैल गया और वे सारे घुड़सवार उस कोहरे में खो कर रह गये।

इस बीच वह चरवाहा वहाँ से बच कर भाग तो लिया पर रास्ते में उसको प्यास लग आयी। रास्ते में उसके पास पीने के लिये कुछ भी नहीं था सो उसने सोचा कि वह पिंजरे में से गाने वाला एक सेब निकाल कर खा लेता है।

उसने पिंजरे में से एक सेब निकाला और उसको काटा तो उसमें से एक छोटी सी आवाज आयी — "सेब ज़रा धीरे से काटो वरना मुझे बहुत तकलीफ होगी।"

यह सुन कर उसने वह सेब बड़ी धीरे धीरे काटा। उसमें से उसने आधा सेब खाया और दूसरा आधा सेब अपनी जेब में रख लिया। फिर वह अपने रास्ते चल पड़ा।

चलते चलते वह अपने घर के पास वाले कुँए पर आ गया। वहाँ उसने अपनी जेब में से दूसरा आधा सेब निकालने के लिये हाथ डाला तो वहाँ उसको उसका बचा हुआ सेब तो नहीं मिला, हाँ एक छोटी सी लड़की वहाँ जरूर खड़ी थी।

चरवाहा तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया। वह लड़की बोली — "मैं सुन्दर बरगैगलीना हूँ और मुझे केक बहुत पसन्द है। मुझे केक खाना है मुझे बहुत भूख लगी है।"

उस कुँए के चारों तरफ एक दीवार थी और बीच में एक छेद था सो चरवाहे ने उस सुन्दर बरगैगलीना को उस कुँए की दीवार पर बिठा दिया और उससे कहा कि जब तक वह उसके लिये केक ले कर आता है वह उसका वहीं इन्तजार करे।

इसी बीच बदसूरत नाम की एक दासी वहाँ आयी। वह वहाँ उस कुँए से पानी खींचने आयी थी।

उसको वहाँ वह सुन्दर सी छोटी सी लड़की दिखायी दी तो उसने अपने मन में सोचा — "यह कैसे हुआ कि यह तो इतनी छोटी सी है और इतनी सुन्दर है और मैं इतनी बड़ी हूँ और इतनी बदसूरत हूँ।"

यह सोच कर ही वह दासी इतनी गुस्सा हुई कि उसने उस छोटी सी लड़की को कुँए में फेंक दिया। जब चरवाहा उस छोटी सुन्दर बरगैगलीना के लिये केक ले कर वहाँ आया तो उसने देखा कि उसकी सुन्दर बरगैगलीना तो वहाँ थी ही नहीं।

उसका दिल टूट गया। कितनी मुश्किल से तो वह उसको ले कर आया था और अब जब वह मिल गयी थी तो वह गायब भी हो गयी।

उस चरवाहे की माँ भी उसी कुँए पर पानी भरने आती थी। एक दिन पानी भरते समय उसकी बालटी में एक छोटी सी मछली आ गयी।

वह उस मछली को घर ले गयी और उसको खाने के लिये तल लिया। माँ ने वह तली हुई मछली खुद भी खायी और अपने बेटे को भी खिलायी। और उसकी हड्डियाँ बाहर फेंक दीं।

उस मछली की हड्डियाँ जहाँ जा कर गिरीं वहाँ एक पेड़ उग आया और समय के साथ साथ वह पेड़ इतना बड़ा हो गया कि उसने चरवाहे के घर की रोशनी रोक दी।

यह देख कर उस चरवाहे ने उस पेड़ को काट डाला और उसकी लकड़ी को आग जलाने के काम में लाने के लिये घर के अन्दर रख लिया।

यह सब करते करते चरवाहे की माँ मर गयी और अब वह घर में अकेला रह गया। वह और भी दुबला होता जा रहा था। वह अपने बड़ा होने के लिये कुछ भी करता पर वह बड़ा ही नहीं हो पा रहा था।

रोज सुबह ही वह घास के मैदानों में चला जाता और रात होने पर ही घर लौटता। घर आ कर उसको बहुत आश्चर्य होता जब वह देखता कि सुबह जो बरतन वह गन्दे छोड़ गया था वे सब साफ रखे हैं और उसका घर भी साफ है।

उसने सोचा कि यह जानने के लिये कि उसके घर में उसके पीछे यह सब कौन कर रहा है उसको एक दिन घर में रुकना ही पड़ेगा।

सो अगले दिन वह घर से बाहर जाने के लिये निकला तो पर बाहर नहीं गया। वह वहीं दरवाजे के पीछे छिप गया और देखता रहा कि उसके घर में उसके पीछे कौन आता है।

कुछ समय बाद ही उसने देखा कि लकड़ी के ढेर में से एक ब्हुत ही सुन्दर सी लड़की निकली। उसने उसके सारे बर्तन साफ किये, घर को झाड़ा बुहारा, उसका बिस्तर ठीक किया। फिर उसने आलमारी खोली और केक खाया।

बस इसी समय वह चरवाहा उछल कर दरवाजे के पीछे से बाहर निकल आया और उससे पूछा — "तुम कौन हो और तुम अन्दर कैसे आयीं?"

लड़की बोली — "मैं सुन्दर बरगैगलीना हूँ। वह लड़की जिसको तुमने अपनी जेब में रखे आधे सेब में पाया था। जब तुम मुझको वहाँ कुँए पर बिठा कर चले गये तब वहाँ एक बदसूरत दासी आयी और उसने मुझे कुँए में धकेल दिया। कुँए में गिर कर मैं मछली बन गयी।

उसके बाद तुम लोगों ने मुझे तल कर खा लिया और मेरी हड्डियाँ बाहर फेंक दीं। वहाँ गिर कर मैं एक पेड़ बन गयी। तुमने वह पेड़ काट कर उसकी लकड़ी अपने घर में रख ली। अब जब तुम घर में नहीं होते तो मैं सुन्दर बरगैगलीना बन जाती हूँ।"

चरवाहा यह सुन कर बहुत खुश हो गया कि उसको सुन्दर बरगैगलीना फिर से मिल गयी थी। अब वह चरवाहा दिन दूना रात

चौगुना बढ़ने लगा था और उसके साथ साथ वह सुन्दर बरगैगलीना भी बढ़ने लगी।

जल्दी ही वह चरवाहा बढ़ कर एक सुन्दर नौजवान हो गया और सुन्दर बरगैगलीना भी बड़ी हो कर और सुन्दर हो गयी। दोनों ने आपस में शादी कर ली और दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

10 जादुई खीरे[46]

तीन सन्तरे जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका महाद्वीप के ज़िम्बाब्वे देश की लोक कथाओं से ली है। इस कथा में खीरों में से लड़कियाँ निकलतीं हैं।

एक बार ज़िम्बाब्वे देश के एक गाँव में एक नौजवान रहता था। उसका नाम वाँगे[47] था। हालाँकि उस गाँव में बहुत सारी लड़कियाँ थीं पर फिर भी वह अभी तक कुँआरा ही था क्योंकि उन लड़कियों का कहना था कि वह बहुत ही पतला दुबला और बदसूरत था।

उसकी उम्र के दूसरे नौजवानों की शादियाँ हो चुकी थीं और वहाँ के रीति रिवाजों के अनुसार किसी किसी के तो एक से ज़्यादा पत्नियाँ भी थीं।

इसलिये इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि वाँगे यह सब देख देख कर और सोच सोच कर ही दिन पर दिन दुबला हुआ जा रहा था कि कोई लड़की उससे शादी नहीं करना चाह रही थी। वह देखने में तो सुन्दर नहीं था परन्तु वह दयालु बहुत था।

एक दिन उस गाँव के लोगों ने कुश्ती का प्रोग्राम रखा। सुबह सवेरे ही गाँव के सारे लोग मैदान में इकट्ठा हो गये। वाँगे भी उनके

---

[46] Magical Cucumbers – a folktale of Zimbabwe, Southern Africa.
[47] Wange – name of the man who was not married

साथ था। दोपहर तक उन सबमें खूब कुश्ती हुई। दोपहर को जब काफी गर्म हो गया सो सभी लोग कुश्ती रोक कर पेड़ों की छाया में लेट गये।

एक आदमी ने ढोल बजाना शुरू किया तो उनकी पत्नियों को पता चल गया कि उनके पतियों के दोपहर के खाने का समय हो गया है सो वे सब अपने अपने पतियों के लिये दोपहर का खाना ले कर कुश्ती के मैदान को चलीं।

सभी ने अपनी अपनी पत्नियों के हाथ का स्वाददार खाना पेट भर कर खाया परन्तु वॉग की तो कोई पत्नी ही नहीं थी इसलिये न तो उसके लिये कोई खाना ही ले कर आया और न ही वहाँ उसको किसी ने खाना खाने के लिये पूछा।

वॉगे बेचारा भूख से परेशान था। उसने सोचा — "काश, मेरी भी कोई पत्नी होती तो वह भी मेरे लिये खाना लाती। अब तो मुझे अपने आप ही अपना खाना ढूँढना पड़ेगा। चलूँ, पास की नदी से ही कोई मछली पकड़ता हूँ।"

ऐसा सोच कर वह पास की नदी की तरफ चल दिया।

उसने अपना मछली पकड़ने वाला कॉटा नदी में फेंका। कॉटा खींचने पर भारी लगा तो उसने सोचा कि "लगता है आज कोई बड़ी मछली फॅसी है क्योंकि मेरा कॉटा खूब भारी हो गया है। आज तो मजा आ गया।"

यह सोच कर उसने जैसे ही वह कॉटा ज़ोर लगा कर ऊपर खींचा तो उस कॉटे की रस्सी टूट गयी और वह कॉटा नदी में डूब गया।

वह दुखी हो कर बोला — "अरे, यह तो रस्सी भी टूट गयी, मेरा कॉटा भी गया। मैं मछली भी नहीं पकड़ सका और मैं भूखा भी रह गया। मैं इस बड़ी मछली को किसी भी हाल में अपने हाथ से जाने नहीं दूँगा।" और वह तुरन्त ही नदी में कूद गया।

पर चारों ओर देखने पर भी उसको नदी में मछली तो कोई दिखायी नहीं दी, हॉ, एक बहुत बड़ा मगर जरूर दिखायी दे गया।

वॉगे ने उससे पूछा — "क्या तुमने मेरा कॉटा चुराया है?"

मगर ने जवाब दिया — "नहीं, इन सब खेलों के लिये तो मैं अब काफी बूढ़ा हो चुका हूँ लेकिन मैंने तुम्हारा कॉटा चुराने वाले को उस रास्ते पर जाते हुए जरूर देखा है। अगर तुम जल्दी से उधर चले जाओ तो शायद उसे पकड़ पाओ।" यह कह कर उसने पानी में जाते एक रास्ते की तरफ इशारा कर दिया।

जिस तरफ मगर ने इशारा किया था वॉगे ने उस तरफ देखा तो उसे पानी में जाता एक पथरीला रास्ता दिखायी दिया जिसके दोनों तरफ घास लगी हुई थी। उसने मगर को धन्यवाद दिया और उस रास्ते पर चल दिया।

सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह थी कि वह रास्ता पानी के अन्दर था और पानी के अन्दर साँस लेने में उसे कोई मुश्किल नहीं हो रही थी।

वह उस रास्ते पर ऐसे बढ़ता चला जा रहा था जैसे धरती पर चल रहा हो। रास्ते में उसने सुनहरी रुपहली मछलियाँ देखीं, पानी के साँप देखे और हरे केकड़े भी देखे।

चलते चलते अचानक ही वह काले सफेद पत्थरों से बने एक घर के सामने जा पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने आवाज लगायी — "नमस्ते, अन्दर कोई है?"

मकान के अन्दर से आवाज आयी "नमस्ते" और कुछ ही पल में झुकी हुई कमर वाली एक बुढ़िया बाहर आयी।

वाँगे ने बुढ़िया से पूछा — "यहाँ किसी ने मेरा काँटा चुरा लिया है क्या आप बता सकती हैं कि मेरा काँटा किसने चुराया है?"

बुढ़िया ने पूछा — "पर तुम यहाँ इस पानी के राज्य में क्या कर रहे हो, ओ आदमी के बच्चे?"

वाँगे बोला — "मैं नदी पर मछलियाँ पकड़ रहा था कि मेरा काँटा खो गया। मैं उसे ढूँढते ढूँढते यहाँ तक आ गया।"

बुढ़िया बोली — "क्या? तुम एक छोटे से काँटे के लिये इतनी तकलीफ उठा रहे हो? बड़े गरीब लगते हो।"

वॉगे बोला — "जी हाँ यही मेरे खाने पीने का सहारा है इसलिये मैं इसे खोना नहीं चाहता।"

बुढ़िया के मुँह से निकला "ओह" और पास से उसने एक स्पंज तोड़ लिया और वॉगे से कहा — "यह स्पंज लो और ज़रा मेरी पीठ तो साफ कर दो।"

हालाँकि वॉगे इस समय बुढ़िया की पीठ साफ करने के बिल्कुल भी मूड में नहीं था परन्तु क्योंकि स्वभाव से ही वह बहुत दयालु था इसलिये वह उस स्पंज से बुढ़िया की पीठ साफ करने लगा।

थोड़ी देर बाद वह बुढ़िया से बोला — "यह लीजिये, आपकी पीठ साफ हो गयी। अब यह चाँद की तरह चमक रही है।"

बुढ़िया ने कहा — "नहीं, अभी नहीं, थोड़ा और साफ करो।"

तो वॉगे ने फिर से उसकी पीठ साफ करनी शुरू कर दी। थोड़ी देर बाद वह फिर बोला — "यह लीजिये, अब शायद आपकी पीठ साफ हो गयी है क्योंकि अब यह सूरज की तरह चमक रही है।"

बुढ़िया ने कहा — "धन्यवाद बेटा, मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। अब तुम मुझसे जो चाहे माँग लो। बोलो तुम्हें क्या चाहिये?"

वॉगे अपना काँटा खोने का दुख तो भूल गया और खुशी से भर कर बोला — "मुझे एक सुन्दर सी पत्नी चाहिये। क्या आप मुझे वह दे सकेंगी?"

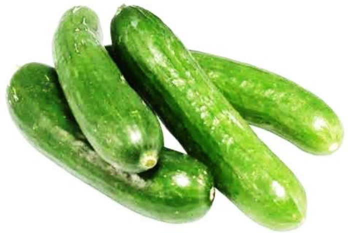

बुढ़िया बोली — "जरूर जरूर, क्यों नहीं।" कह कर वह घर के अन्दर गयी और चार सुन्दर चिकने खीरे ले आयी।

उन खीरों को वाँगे को देते हुए वह बोली — "लो ये खीरे लो और घर वापस चले जाओ। जब तुम नदी के किनारे पहुँचोगे तब इनको तोड़ना। इनमें से हर खीरे में से एक एक सुन्दर लड़की निकलेगी।

लेकिन याद रखना कि इन खीरों को नदी के किनारे ही तोड़ना, उससे पहले नहीं, क्योंकि ये लड़कियाँ तुरन्त ही पीने के लिये पानी माँगेंगी और अगर तुमने इनको तुरन्त ही पानी न दिया तो ये सब गायब हो जायेंगी और फिर कभी नहीं आयेंगी।"

वाँगे को हालाँकि बुढ़िया की इन बातों पर ज़रा भी विश्वास नहीं हुआ पर फिर भी सिर झुका कर उसने "अच्छा जी" कहा और वे खीरे उससे ले कर अपनी जेब में रख लिये।

फिर बोला — "धन्यवाद, मेरे ऊपर यह आपकी बड़ी मेहरबानी है कि आपने मुझे इतनी सुन्दर भेंट दी। जैसा आपने कहा है मैं वैसा ही करूँगा।"

ऐसा कह कर वह वहाँ से अपने घर की तरफ चल दिया। रास्ते में उसने सोचा — "अब मैं कभी अपना काँटा वापस नहीं पा सकूँगा इसलिये जब मैं धरती पर पहुँच जाऊँगा तब इन खीरों को खा लूँगा।"

धरती पर पहुँच कर उसने देखा कि वह बूढ़ा मगर अभी भी वहीं लेटा हुआ है। वॉगे ने उसको नमस्ते की और ऊपर चल दिया।

ऊपर अभी भी बहुत गर्म था इसलिये वह नदी से कुछ दूर पर लगे एक पेड़ की छाया में बैठ गया। कुछ देर बाद उसने अपनी जेब से चारों खीरे निकाले और उनको अपने हाथों में उलटने पलटने लगा। वे उसे बहुत ही रसीले और ताजे दिखायी दे रहे थे।

उसे बहुत तेज़ भूख लगी थी सो वह उन खीरों को खाना चाहता था। उसने खीरा खाने के लिये हाथ बढ़ाया ही था कि उसे बुढ़िया के शब्द याद आये कि इन खीरों को नदी के पास ही तोड़ना।

उसने तय किया कि वह पहले बुढ़िया के कहे अनुसार ही करेगा। अगर वे जादू के खीरे हुए तो उनमें से लड़कियाँ जरूर निकलेंगी सो उसने ऐसा ही किया। पर वह यह अन्दाज नहीं लगा सका कि उसको वे खीरे पानी के कितने पास तोड़ने चाहिये।

उसने पहले एक खीरा तोड़ा। तुरन्त ही उसमें से एक सुन्दर लड़की निकल कर उसके सामने खड़ी हो गयी और बोली "पानी दो"। वॉगे तो उसको देख कर आश्चर्यचकित सा बैठा ही रह गया, न हिल सका न डुल सका।

उस लड़की ने फिर कहा "मुझे पानी चाहिये।" अब वह जैसे सपने से जगा और उसे ख्याल आया कि उसे तो ये खीरे नदी के

किनारे तोड़ने चाहिये थे। वह तुरन्त ही नदी से पानी लेने भागा और पानी ले कर उलटे पैरों वापस आया पर उसे देर हो गयी थी और वह लड़की गायब हो चुकी थी।

सो बुढ़िया की बात तो सच निकली। वह पछताने लगा कि अपनी बेवकूफी से उसने अपनी इतनी सुन्दर पत्नी खो दी।

अब वह बाकी बचे हुए खीरे नदी के किनारे ले आया और उसने पानी भी अपने पास रख लिया।

उसने फिर दूसरा खीरा तोड़ा। उसमें से भी एक सुन्दर सी लड़की निकली और बोली "पानी"। वॉगे ने कॉपते हाथों से उसे पानी पिलाया। अबकी बार वह लड़की गायब नहीं हुई बल्कि उसको देख कर मुस्कुरा दी।

इसी तरह उसने बाकी बचे दो खीरे भी तोड़े और उनमें से भी दो सुन्दर लड़कियाँ निकलीं। उसने उनको भी तुरन्त ही पानी पिलाया।

कुछ देर के लिये तो वह हक्का बक्का रह गया, उसके मुँह से एक शब्द भी न निकला। फिर जब वह होश में आया तो उन तीनों लड़कियों से बोला — "चलो घर चलते हैं। जब वह घर पहुँचा तो रात हो चुकी थी। वह जल्दी से अपनी तीनों पत्नियों को ले कर घर के अन्दर घुस गया ताकि उन्हें कोई देख न ले।

अगली सुबह फिर कुश्ती हुई। वॉगे भी उनके साथ था। दोपहर को जब खाने का समय हुआ तो सभी लोगों की पत्नियाँ अपने अपने पतियों के लिये खाना ले कर आयीं।

पहले दिन की तरह से उस दिन भी किसी ने भी वॉगे को खाना नहीं दिया सो वह उनसे कुछ दूर हट कर बैठ गया।

अचानक उसने सरसराहट और फुसफुसाहट की आवाजें सुनी। उसके सभी साथी फुसफुसा रहे थे। तभी उसकी नजर सामने पड़ी तो उसने देखा कि उसकी तीनों पत्नियाँ कुछ न कुछ अपने सिर पर रखे चली आ रही थीं।

उसकी पहली पत्नी ने उसके आगे दलिये का बर्तन रखा, दूसरी ने माँस का और तीसरी ने पीने के साफ पानी का। वॉगे ने बड़े प्रेम से खाना खाना शुरू कर दिया।

वहाँ बैठे सभी लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि कल तक तो यह अकेला था और आज इसके लिये इसकी तीन तीन पत्नियाँ खाना ले कर आयी हैं। यह मामला क्या है?

वे तुरन्त ही दौड़े दौड़े वॉगे के पास पहुँचे और उससे सवाल पर सवाल करने शुरू कर दिये — "तुमको ये पत्नियाँ कहाँ से मिलीं?" "तुम कोई सरदार हो जो तुम तीन तीन पत्नियाँ रखे हो?"

"हमने इतनी सुन्दर लड़कियाँ तो पहले कभी नहीं देखीं।" "हमारी पत्नियाँ तो इनके आगे बहुत ही बदसूरत और भद्दी दिखायी देती हैं।" आदि आदि वाक्य वॉगे के कानों में पड़ने लगे।

वॉगे ने जवाब दिया — “आप लोग शान्ति से बैठें तो मैं आपको सब कुछ बताता हूँ।” कह कर उसने कॉटा खोने से ले कर पत्नियाँ मिलने तक की पूरी कहानी उन सबको बता दी।

उसकी कहानी सुनते ही वे सब भी विचार करने लगे कि किस तरह पानी में जा कर वैसी सुन्दर लड़कियों को लाया जाये।

तुरन्त ही वे सब घर गये और अपनी अपनी पत्नियों को कह आये कि तुम सभी बड़ी बदसूरत हो इसलिये तुम अपने अपने पिता के घर जाओ अब हम तुम्हें नहीं रखेंगें। पत्नियाँ बेचारी रोती हुई अपने अपने पिता के घर चली गयीं।

उधर वे सब लोग नदी के किनारे आ गये जहाँ वॉगे ने अपना मछली का कॉटा खोया था। उन्होंने भी अपने अपने कॉटे पानी में फेंके और इस बात का इन्तजार किये बिना ही कि कोई मछली उसमें फँसी कि नहीं वे नदी में कूद गये।

वह बूढ़ा मगर आश्चर्यचकित सा अभी भी वहीं लेटा हुआ था। वे सभी उसको ऐसे ही छोड़ कर घर को जाने वाले पथरीले रास्ते की तरफ बढ़ गये।

वे लोग इतनी जल्दी में थे कि न तो वे मछलियों की सुन्दरता ही देख सके और न ही हरे केकड़ों पर नजर डाल सके। आखिर वे उस पथरीले रास्ते पर चलते हुए उसी काले सफेद पत्थरों के बने हुए घर के सामने आ खड़े हुए जहाँ वॉगे पहुँचा था।

किसी को वहाँ न देख कर उन्होंने चिल्लाना शुरू किया — "ओ बुढ़िया, अरी ओ बुढ़िया, जल्दी से बाहर निकल और हम सबको सुन्दर सुन्दर पत्नियाँ दे वरना हम सभी मिल कर तुझे पीटेंगे।"

बेचारी बुढ़िया काँपती सी घर के बाहर आयी और पहले की तरह एक स्पंज तोड़ा और उसे उन लोगों की तरफ ले जा कर बोली — "मेरी पीठ बड़ी गन्दी हो रही है पहले ज़रा मेरी पीठ साफ कर दो।"

पर वे सभी इस बात पर ज़ोर से हँस कर बोले — "यह हमारा काम नहीं है। हम तेरी पीठ साफ क्यों करेंगे? हमको तो बस तू जल्दी से वे जादू के खीरे दे दे जिनको तोड़ने पर सुन्दर सुन्दर लड़कियाँ निकल आती हैं नहीं तो हम तेरे टुकड़े टुकड़े कर देंगे।"

वह बुढ़िया बेचारी धीरे धीरे घर के अन्दर गयी और दो टोकरी में बहुत सारे खुरदरे खीरे ले आयी। सभी लोगों ने टोकरी की टोकरी छीननी शुरू कर दी परन्तु बुढ़िया ने सबको केवल सात सात खीरे ही दिये।

उन लोगों ने सोचा कि हम तो वाँगे से बहुत अच्छे हैं क्योंकि वाँगे को तो केवल तीन ही खीरे मिले थे पर हमको तो सात सात खीरे मिले हैं। हमारी किस्मत उससे ज़्यादा अच्छी है। वे दौड़ते भागते खीरे तोड़ने के चक्कर में तुरन्त ही नदी के किनारे जा पहुँचे।

जल्दी जल्दी उन्होंने खीरे तोड़े। सबसे पहले आदमी ने जैसे ही अपना पहला खीरा तोड़ा वह डर गया क्योंकि उसके सामने एक उससे भी लम्बी और बदसूरत औरत खड़ी थी।

सभी के साथ ऐसा ही हुआ। इस उम्मीद में कि किसी खीरे में से तो कोई सुन्दर सी लड़की निकलेगी उन्होंने सारे खीरे तोड़ डाले।

पर उन खीरों में निकली हर औरत पहली औरत से कहीं ज़्यादा लम्बी और कहीं ज़्यादा बदसूरत होती गयी।

उनमें से सबसे लम्बी और सबसे ज़्यादा बदसूरत औरत ने कहा — "तुम हमको बदसूरत कहते हो?" और ऐसा कह कर उन्होंने सबने मिल कर उन सबको पीटना शुरू कर दिया।

दर्द से चिल्लाते हुए सभी आदमी गाँव की तरफ भागे और उन बदसूरत औरतों से बचने के लिये अपने घरों में छिप कर दरवाजा बन्द कर लिया। पर वे सब औरतें गाँव में आते ही गायब हो गयीं।

जब सब कुछ शान्त हो गया तब वे लोग अपने अपने घरों से बाहर निकले। अब उन्हें लगा कि वे कितने भूखे थे परन्तु वहाँ कोई भी औरत खाना बनाने के लिये नहीं थी क्योंकि अपनी सभी पत्नियों को तो उन्होंने उनके पिता के घर भेज दिया था।

कुछ लोगों ने अपनी पत्नियों को वापस लाने की कोशिश भी की पर बेकार। पत्नियों ने कहा — "तुम लोगों ने हमारे दिल को

ठेस पहुँचायी है इसलिये ऐसे बेरहम पतियों के पास हमें हमारे माता पिता भेजने को तैयार नहीं हैं।”

उधर वॉगे के पास अब तीन पत्नियाँ थीं और सब लोग उसको इज़्ज़त से देखने लगे थे। अच्छा खाना मिलने से अब वह सुन्दर भी हो गया था।

दूसरे लोगों को पत्नियों की खोज में फिर से दूर दूर जगह जाना पड़ा। फिर जब उनको पत्नियाँ मिल गयीं तो उन्होंने फिर कभी उनको बदसूरत नहीं कहा।

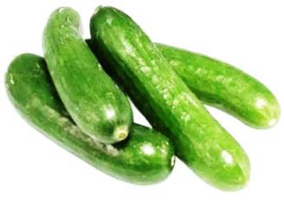

11 कबूतर पालतू कैसे बना[48]

तीन सन्तरे जैसी लोक कथाओं के इस संग्रह की यह लोक कथा दक्षिणी अमेरिका के ब्राज़ील देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

तुम लोगों ने कबूतर तो देखा ही होगा। यह अक्सर घरों में आ जाता है। और यह केवल अपने आप ही नहीं आता बल्कि बहुत से लोग इसको पालते भी हैं। बहुत सारे लोग इसको दाना खिलाते हैं।

इंगलैंड में लन्दन के ट्राफलगर स्क्वायर[49] पर तो इनकी भीड़ जमा रहती है क्योंकि वहाँ बहुत सारे लोग इनको दाना खिलाते हैं। वहाँ दाना बेचने वाले भी रहते हैं जिनसे वे दाना खिलाने वाले दाना खरीद लेते हैं और इनको दाना खिलाते हैं। बच्चों को वहाँ बहुत मजा आता है।

कई बार ये वहाँ लोगों के कन्धों पर बाँहों और कन्धों पर भी बैठ जाते हैं तो लोग बहुत खुश होते हैं।

एक बार की बात है कि दक्षिणी अमेरिका के ब्राज़ील देश में एक पिता रहता था जिसके तीन बेटे थे। उसके वे तीनों बेटे अब

---

[48] How the Pigeon Became a Tame Bird – a folktale from Brazil, South America.
Taken from the Web Site :
http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_20.html
This tale appeara in a Book : "Fairy Tales From Brazil", by Elsie Spicer Eells. Chicago, Dodd, Mead and Company, Inc. 1917. How and Why Tales from Brazilian Folklore. 18 Tales. This book is given at the above Web Site.

[49] Trafalgar Square, London, UK

इतने बड़े हो गये थे कि उनको अब अपना खाना कमाना शुरू कर देना चाहिये था।

सो एक दिन उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया और उनसे कहा कि अब वे बड़े हो गये हैं और उनको अपना खाना खुद कमाना सीखना चाहिये।

इस काम के लिये जब वे बाहर जाने लगे तो उसने अपने तीनों बेटों को एक एक बड़ा सा तरबूज दिया और कहा कि वे जब भी उसको काटें तो किसी पानी वाली जगह के पास ही काटें।

तीनों भाइयों ने अपने पिता से तरबूज लिये और अपनी यात्रा पर चल दिये। तीनों ने अपने लिये अलग अलग रास्ते चुने।

जैसे ही उनमें से सबसे बड़ा भाई घर से बाहर निकला और घर उसकी आँखों से ओझल हुआ उसने अपना तरबूज तोड़ दिया। एक बहुत सुन्दर सी लड़की उस तरबूज में से निकल आयी और बोली — "या तो मुझे पानी दो और या फिर दूध दो।"

अब क्योंकि उस बेटे ने अपने पिता का कहना नहीं माना था सो न तो वहाँ आस पास में कहीं पानी था और उसके पास दूध तो था ही नहीं। सो वह तुरन्त ही मर गयी।

दूसरे बेटे ने भी पिता का घर छोड़ा और एक ऐसा रास्ता पकड़ा जो उसको एक ऊँची सी पहाड़ी पर ले जाता था। तरबूज बड़ा था

और भारी था। उसको ले कर पहाड़ के ऊपर की चढ़ाई पर चढ़ना बहुत मुश्किल था।

सो कुछ देर में ही वह थक गया और उसको प्यास भी लग आयी। उसने चारों तरफ देखा कि कहीं उसको पानी दिखायी दे जाये पर उसको कहीं पानी ही दिखायी नहीं दिया।

उसको ऐसा भी नहीं लगा कि उसको पानी कहीं जल्दी ही मिल जायेगा सो उसने सोचा कि वह अपनी प्यास बुझाने के लिये तरबूज ही तोड़ कर खा लेता है। और उसने वह तरबूज तोड़ दिया।

उसके आश्चर्य का तो ठिकाना ही नहीं रहा जब उसने देखा कि उसमें से तो एक लड़की निकल पड़ी और उसने उससे कहा — "या तो मुझे पानी दो और या फिर दूध दो।"

अब क्योंकि उसने तो अपनी प्यास बुझाने के लिये ही तरबूज तोड़ा था तो उसके पास पानी कहाँ से होता और दूध तो उसके पास था ही नहीं। सो वह उसको न तो पानी दे सका और न दूध ही दे सका सो वह भी तुरन्त ही मर गयी।

तीसरा बेटा भी अपने रास्ते पर चला जा रहा था। उसका रास्ता भी एक ऊँची पहाड़ी के तरफ जाता था। कुछ देर बाद वह भी चलते चलते थक गया और उसको भी प्यास लग आयी।

उसने कई बार सोचा कि अपनी प्यास बुझाने के लिये वह अपना तरबूज तोड़ ले पर बार बार उसको अपने पिता की बात याद

आयी और वह उसको तोड़ने से रुक गया। उनकी सलाह के अनुसार वह उसको पानी के पास ही तोड़ना चाहता था।

सो वह इस उम्मीद में चलता रहा कि शायद कुछ आगे चल कर उसको पानी का कोई झरना मिल जाये। पर किस्मत से उसे वहाँ कोई पानी नहीं मिला। न तो पहाड़ चढ़ते समय और न ही उसके दूसरी तरफ उतरते समय।

हाँ उस पहाड़ की तलहटी में एक गाँव जरूर बसा हुआ था जिसके बीचोबीच एक फव्वारा लगा हुआ था। वह तुरन्त ही उस फव्वारे की तरफ दौड़ गया और पेट भर कर ठंडा पानी पिया।

पानी पी कर उसने तरबूज तोड़ा तो उसमें से एक लड़की निकली और बोली — "या तो मुझे पानी दो और या फिर दूध दो।"

उसने तुरन्त ही उसको ठंडा पानी पिलाया और उसको एक छिपने की जगह ले गया। वह उसको एक पेड़ की घनी डालियों के पीछे ले गया जो वहीं फव्वारे के पास में ही लगा हुआ था। उसको वहाँ बिठा कर वह खाने की खोज में चला गया।

उसके जाने के कुछ ही देर बाद उस फव्वारे पर एक अफ्रीकन लड़की पानी भरने आयी। उसके हाथ में पानी भरने के लिये एक बहुत बड़ा घड़ा था।

जब उस अफ्रीकन लड़की ने अपना घड़ा पानी भरने के लिये उस फव्वारे के पानी में डुबोया तभी पेड़ के ऊपर बैठी लड़की ने

पेड़ की घनी डालियों के बीच में से नीचे झॉका। इससे उसकी परछाईं फव्वारे के पानी में पड़ी।

उस अफ्रीकन लड़की ने उस ऊपर बैठी लड़की के सुन्दर चेहरे की परछाईं पानी में देखी तो बोली — "ओह मैं तो कितनी सुन्दर हो गयी। यह कितनी खराब बात है कि कोई इतनी सुन्दर लड़की अपने सिर पर पानी का घड़ा रख कर ले कर जाये।"

और उसने अपना घड़ा नीचे फेंक दिया जिससे उसके टुकड़े टुकड़े हो गये। घड़ा फेंक कर वह घर चली गयी। जब वह बिना पानी और बिना घड़े के घर पहुँची तो उसकी मालकिन ने उसको बहुत मारा और उसको दूसरा घड़ा दे कर दोबारा पानी लेने के लिये भेजा।

सो वह बेचारी पानी लेने के लिये फिर उसी फव्वारे पर आयी।

इस बार फिर वैसा ही हुआ। जब उस अफ्रीकन लड़की ने पानी भरने के लिये अपना घड़ा फव्वारे के पानी में डुबोया तभी ऊपर बैठी लड़की ने डालियों के बीच से नीचे झॉका तो उसके सुन्दर चेहरे की परछाईं फिर उस पानी में पड़ी।

जब अफ्रीकन लडकी ने उसे देखा तो उसको लगा कि वह उसी का चेहरा था सो वह फिर बोल पड़ी — "ओह मैं तो कितनी सुन्दर हो गयी। यह कितनी खराब बात है कि कोई इतनी सुन्दर लड़की अपने सिर पर पानी का घड़ा रख कर ले कर जाये।"

इस बार पेड़ पर बैठी लड़की हँस दी। उसकी हँसी की आवाज सुन कर अफ्रीकन लड़की ने ऊपर देखा तो वहाँ एक बहुत सुन्दर लड़की को बैठे देखा।

वह उससे बोली — "ओह तो वह तुम हो जिसने मुझे पिटवाया है।" उसने अपनी कमीज से एक पिन निकाली और ऊपर चढ़ कर जंगली तरीके से उस सुन्दर लड़की के शरीर में चुभो दी।

तभी एक अजीब सी बात हुई। पेड़ पर बैठी हुई लड़की तो वहाँ से गायब हो गयी और उसकी जगह वहाँ एक कबूतर बैठा था। उसी समय वहाँ वह लड़का खाना ले कर आ गया।

जब उस नौकरानी ने उस लड़के के कदमों की आहट सुनी तो वह तो डर के मारे मर सी गयी। उसने तुरन्त ही अपने आपको उसी पेड़ की घनी डालियों के पीछे छिपा लिया।

जब उस लड़के ने पेड़ की डालियों के पीछे उस सुन्दर लड़की को ढूँढा तो वह तो एक सुन्दर सी लड़की की जगह उस अफ्रीकन लड़की को देख कर बहुत ही आश्चर्यचकित रह गया।

उसने उससे पूछा — "अरे मेरे पीछे तुमको यह क्या हो गया?"

लड़की बोली — "ओह सूरज की गरमी से मेरी खाल जल गयी। बस यही हुआ मेरे साथ। यह सब कुछ नहीं। तुम चिन्ता न करो। जब मैं इस गरम जगह से निकल जाऊँगी तब मैं फिर से वैसी ही सुन्दर हो जाऊँगी।"

सो उस लड़के ने उसके साथ शादी कर ली और इस उम्मीद में उसको गर्म जगहों से दूर ले गया कि शायद वह फिर से पहले जैसी सुन्दर हो जाये जैसी कि वह उसको फव्वारे के पास छोड़ कर गया था जब वह खाना ढूँढने गया था। पर ऐसा नहीं हुआ। वह तो काली की काली ही रही।

बरसों गुजर गये। अब वह लड़का बहुत अमीर हो गया था और एक बहुत बड़े मकान में रहता था। उसके मकान के चारों तरफ बहुत सुन्दर बागीचा था जिसमें बहुत किस्म के बहुत सारे फूल लगे हुए थे। शानदार पेड़ खड़े हुए थे जिन पर हमेशा चिड़ियाँ चहचहाया करती थीं और वहाँ उन्होंने अपने घोंसले बना रखे थे।

इतना समय गुजर जाने के बाद और इतना सुन्दर मकान होने के बाद भी वह लड़का खुश नहीं था। इतनी काली लड़की उसकी पत्नी थी यह उसका एक बहुत बड़ा इम्तिहान था।

अक्सर वह अपने बागीचे के रास्तों पर घूमता रहता और शाम को यह सोचता कि कितना अच्छा होता अगर उसकी पत्नी वह लड़की होती जिसे उसने सबसे पहले देखा था।

जब वह अपने बागीचे में घूमता तो एक कबूतर हमेशा उसके पीछे पीछे लगा रहता। वह उसके सिर के चारों तरफ ऐसे घूमता कि उस तरीके से उसका घूमना उसको बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।

एक दिन जब उसकी पत्नी बीमार थी और उसने एक भुना हुआ कबूतर खाने की इच्छा प्रगट की तो उसने उसी कबूतर को भूनने का हुक्म दे दिया।

जब उस लड़के की खाना बनाने वाली अपनी मालकिन के लिये उस कबूतर को खाने के लिये तैयार कर रही थी तो उसने उस कबूतर की छाती पर एक बहुत ही छोटा सा काला धब्बा देखा।

उसको लगा कि वह गन्दगी का कोई धब्बा है सो उसने उसे मल मल कर साफ करने की कोशिश की पर वह उसको काफी साफ करने के बावजूद साफ नहीं कर सकी क्योंकि वह कोई धब्बा तो था नहीं जो साफ हो जाता वह तो पिन थी जो उसकी छाती में गड़ी हुई थी जो उस अफ्रीकन लड़की ने गाड़ दी थी।

उसने उसको खींच कर निकालने की भी बहुत कोशिश की पर वह उसको खींच कर भी नहीं निकाल सकी। सो उसने मालिक को बुलाया और उसको वहाँ से निकालने के लिये कहा।

लड़के ने तुरन्त ही वह पिन खींच कर बाहर निकाल दी।

अरे वाह। वहाँ तो उस कबूतर की बजाय वही सुन्दर लड़की खड़ी थी जो तरबूज में से निकली थी और जिसे वह फव्वारे के पास पेड़ की घनी डालियों के पीछे छिपा कर आया था। उस लड़के ने उस लड़की को तुरन्त ही पहचान लिया।

जब उस लड़के की अफ्रीकन पत्नी को यह पता चला कि उसके पति को इतने सालों बाद अपनी सुन्दर पत्नी मिल गयी है तो उसने अपना जुर्म मान लिया और फिर मर गयी।

उस लड़के ने उस सुन्दर लड़की से शादी कर ली जो अभी भी उतनी ही सुन्दर थी जितनी कि वह तब थी जब उसने उसको पहली बार देखा था। वे दोनों बहुत खुश थे पर वह लड़की अपने उस समय को नहीं भुला सकी जब वह कबूतर के रूप में थी।

उस समय तक कबूतर जंगली चिड़ियें हुआ करते थे जो जंगलों में अपने घोंसले बनाया करते थे। पर अब उस लड़के की पत्नी की यह इच्छा हुई कि वे अब उसके बागीचे में घोंसला बनायें। सो उसने अपने बागीचे में चिड़ियों के छोटे छोटे घर बनवा दिये।

एक दिन एक बहादुर कबूतर बागीचे में उड़ आया और उसने वहाँ चिड़ियों के बहुत सारे घर देखे तो वह अपना परिवार वहाँ ले आया। उसने दूसरे कबूतरों को भी बता दिया कि उनके रहने के लिये भी वहाँ बहुत सारे घर हैं।

पर दूसरे कबूतर इतने बहादुर नहीं थे सो उन्होंने यह देखने का इन्तजार किया कि उनसे पहले जो कबूतर वहाँ गये थे कहीं उन पर कोई मुसीबत तो नहीं आने वाली।

पर जब उन्होंने देखा कि वहाँ पर उनके साथ कोई दर्दनाक घटना नहीं घटी तो वे भी वहाँ आ गये और वहाँ खुशी खुशी रहने

लगे। और उसके बाद तो वहाँ रहने के लिये बहुत सारे कबूतर आ गये और सब बहुत खुश थे।

और अब सालों बाद तो वे जंगलों में अपने घोंसले बनाना पसन्द भी नहीं करते थे बल्कि वे लोगों के घरों के पास ही अपने घोंसले बनाते थे। कबूतरों बेचारों को तो इस बात का खुद भी नहीं पता कि यह सब कैसे हुआ।

पर वह सुन्दर लड़की जो एक बार खुद कबूतर थी उसके जब बच्चे हुए तो उसने उनको इस बारे में बताया। फिर उन बच्चों ने अपने बच्चों को बताया और उन बच्चों ने अपने बच्चों को बताया।

और इस तरह से आज ब्राज़ील के बच्चे अपने कबूतरों के बारे में यह सब कुछ जानते हैं। और उनके बड़े यह कहानी कह कर उनको इसके बारे में यह बताते रहते हैं कि वे घर में कैसे आये।

List of Stories of “Three Oranges Like Stories”

1. The Three Citrons
2. The Love of the Three Oranges
3. The Love for Three Oranges
4. The Three Citrons of Love
5. The Three Golden Oranges
6. The Gypsy Queen
7. The Love of the Three Pomegranates
8. Princess Pomegranate
9. The Little Shepherd
10. Magical Cucumbers
11. How the Pigeon Became a Tame Bird

Names of Countries Where "Three Oranges Like Stories" Are Found According to Wikipedia

Stories from the Countries given in these books are printed in red

EUROPE

1. Italy
2. Spain
3. Slovakia
4. Slovenia
5. Croatia
6. Ukraine
7. Poland
8. Hungary
9. Greece
10. Romania
11. Bulgaria
12. Cyprus
13. Malta
14. Azerbaijan
15. Yiddish
16. Georgia

ASIA

1. Middle East
2. Iran
3. Iraq
4. Turkey
5. Afghanistan
6. India
7. Japan
8. Tibbet
9. Shan People

AMERICAS

1. Brazil

Portugal, Mexico, Zimbabwe are extra countries where this type of stories are told and heard.

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories (17 stories)
2. Bluebeard Like Stories (7 stories)
3. Tom Thumb Like Stories (13 stories)
4. Six Swans Like Stories
5. Three Oranges Like Stories (11 stories)
6. Snow White Like Stories
7. Sleeping Beauty Like Stories
8. Ping King Like Stories – 3 parts
9. Puss in Boots Like Storie (15 stories)
10. Hansel and Gratel Like Stories (4 stories)
11. Red Riding Hood Like Stories
12. Cinderella Like Stories in Europe (14+11 stories)
12. Cinderella in the World (21 stories)
13. Rumplestiltuskin Like Stories (22 stories)
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories (4 stories)
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Lion and Man Like Stories (14 stories)
17. Pome and Peel Like Stories (6 stories)
18. Soldier and Death Like Stories
19. Tees Maar Kahan Like Stories (11 stories)
20. Lion and Rabbit like Stories
21. Frog Princess Like Stories (7 stories)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् 1943 में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद 1976 में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में 10 वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में 3 साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में 1 साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पशचात 1995 में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के 4 साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना पारम्भ किया। सन 2022 तक 2500 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022